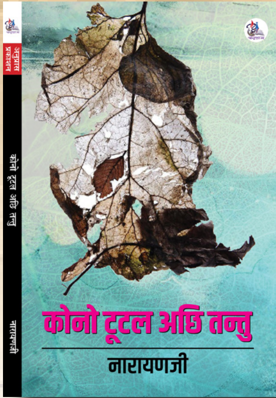
लेखनी



अनुप्रास प्रकाशन समूह

क्रम



कविता

कविता संग्रह : कोनो टूटल अछि तन्तु

कवि : नारायणजी

काठक घोड़ा

‘काठक घोड़ा, सिकीक लगाम
बाबा पोखरि पानि पी, बाह रे गुलाम !’—
कथामे कहैत छथि राजकुमार।

एक नहि
सात राजकुमार कहैत जाइत छथि
कथामे।

एकठाम छथि सात राजकुमार
घोड़ा पर
जे काठक बनल अछि।

सवारी कसबाक केहन होइत छैक स्वाद
कोनो राजकुमारे जनैत छथि
जे रानीक कोखिसँ जनमल रहैत छथि
जिनकर पूर्वज रहैत छनि राजा

वाहवाही कएने रहैत छथि अपन गुलामक।

कथामे
घोड़ा पर छथि राजकुमारसभ
काठक घोड़ा पर
सवारीक स्वाद लैत।

गुलामीक बात नहि जनैत अछि
घोड़ा
कथाक घोड़ा
काठक घोड़ा।

अनार

शहरसँ आएल छल अनार
लाले-लाले गेन सन
बिकाइ लेल आएल छल अनार।

शोणित बनि जाएत
देहमे
खाएब जाड़मे
लालटेस सुन्दर अनार।

मास अगहन थिक
गाममे,
'धान लेबह ?'

'गहूम रखने छी
फटकि-बीछि,
नहि चाही सेहो !'

'अन्नक मोल नहि !'
'धउर !'

जेम्हरहिसँ आएल छल
फिरि गेल तेम्हरहि
बिकाइ लेल आएल छल अनार।

खेतिहर

बौआ,
पैंजाबसँ अएलहए तौँ कमाए कए
किछु नगदी हथपैंच सम्हारह,
शुरू अगहनमे धान बेचि सधाए देबह !

बौआ,
से ने आएल रक्छसा बाढ़ि
घराड़ीटा बाचि गेल
लागल धानक कंठ धरि भए गेल भरना
माटि बेचि खेलहा कए देबह बेमाक !

बौआ,
बलान दए देलनि छाती भरि बालु
आब भट्ठाक पजेबा लेल नहि बिकाएत माटि
आ ने कखनहुँ कीनल जाएत
बनैत रेलमे भराइक काज लेल निछक्का बालु !

बौआ,
सभदिन सूतलि रहतीह नहि धरती
फेर-फेर उपजतीह मनसम्पय,
खगल छी एखन हम
भरल-पुरल रखने छथुन तोरा गुरु-गोसांइ
लए ने लैह हमर खेते !
तखन,
सैह बौआ,

संग हमरो लेने चलह ने पैंजाब
तोरासभ जरे खटबमे नहि सकि सकबह,
तँ भानसे कए रखबह बरू
जा सभ आबि जाइ जएबह काज परसँ !

किसान

देशक असली तागति छथि किसान,
से अपने नहि बजैत छथि
बजैत छथि,
खेतक आड़ि पर किसान संग
कहियो जे ठाढ़ नहि भेल छथि।

दराड़ि फाटल माटि देहक हाड़सँ सीबि
सहि छाती पर असमाहि दुखक प्रहार
जीबि लैत छथि केहनो रौदी आ दाहीमे
आ सिहकैत बसात पर
डोलैत धानक बीच पाबि अपनाकेँ
सभ कष्ट बिसरि जाइत छथि।

मुदा, रहैत छथि अथाह चिन्तामे सदिखन डूबल
साल-दर-साल हुनकर खेत बिकाइत छनि
किसान कोनो कीनि नहि पबैत छनि।

किसान देशक असली तागति छथि,
काल्हियो, ढोल-नंगेड़ा बजबैत गाओल गेल अछि
जखनकि,
सड़कक कातक पाकड़िक गाछक ठाढ़िसँ
बान्हल रस्सीमे झुलैत अनकर नहि
आत्महत्या कएल एकटा किसानेक शव पाओल गेल अछि।

पाँखि नहि अछि

बगड़ा
आ खंजनि सन
फुदकैत नहि
डेगाडेगी चलैत।

मनुक्ख बनैत जएबाक
अभिलाषामे डूबि मएना एकटा
जेठुआ रौदमे चराउर कएलाक बाद
बैसि गेल कोदारि पर, छल जे आड़ि पर राखल।

कोदारि
तखन, नहि निन्नमे छल
आ नहि छल जागल,
शेष बचल जीवनसँ असोथकित
दिक्-कालसँ दूर छल
लोहारक पजारल आगिमे धीपि
नेहाइ पर ओहि चोटक प्रतीक्षामे छल
घोरने छल जाहिमे अपन अनेक रंग सपनाक।

कोदारिक मुदा कोनो चिन्तासँ अबूझ
चुनचुनाए उठल मएना
किसान जखन छल खेतमे
जरैत धानक बीयाकेँ हियासैत
खन हियासैत निरभ्र आकाशकेँ, उदास भेल।
जोर-जोरसँ चुनचुनाए उठल मएना—
मनुक्ख हएब केहन लगैत छैक ?

सुनि, किसान किछु नहि बाजल,
कहि सकैत छल—
चुनचुनाएब के सुनितह, जँ चराउर नहि करितह?
पेट भरक लेल अपनहि अपन करितह नहि ओरिआओन ?
के बुझितह दु:ख ?
मुदा, से नहि बाजल,

थोड़ेक धैर्य आ किछु विवेक अँकुराए अपनामे
अंगेजि विविध संताप, एतबैक टा घुनघुनाएल—
पाँखि नहि अछि
ट्रेनक भेटैत नहि अछि टिकट
तोरा जकाँ उड़ि नहि सकैत छी
जाए नहि सकैत छी आमीन*
जतए जीरी रोपाइत हैत।

जाए नहि सकैत छी कमाए लेल
आनि नहि सकैत छी टाका हजारमे।

**हरियाणाक एकटा नगर, जकर नाम वीर अभिमन्युक नाम पर अछि।*

ढाढ़स

उठब अहाँ
हएब निरोग किछुए दिनमे।

फेर देखब ठाढ़ि पर फुलाएल फूल
देखैत अछि जेना फुलचोभी।

फूजत बाट
फूजत ट्रेन आ बस
अवश्य
आएब अपन गाम धरि।

निसाभाग रातियोमे
ड्योढ़ी पर
जरैत रहत दीप
बिनु तेल-टेमियोक
अहाँक प्रतीक्षामे
कतेको जोड़ पथराएल नयन।

अहाँक लेल
अहाँक घरक लागल नहि रहत केबाड़।

दराड़ि

दिन तूबि गेल अछि
मद्धिम भेल जाइत अछि घरक छाह
सड़कक पारसँ अबैत अछि सन्ध्या
हुमड़ैत, आगत अनिष्टक आशंकासँ।

'हम सभदिन एतए रहली,
जेबै कतए आब ?',
कहैत अछि सुलेमान।

भरिसक,
कोनो टूटल अछि तन्तु
विश्वासक
देबालमे कतहु पड़ल अछि दराड़ि।

पलायन

ध्वस्त देखाइत अछि नगर
बसल छल नदीक कछेर पर।

नदीमे जल नहि अछि
केहन नदी आ कतेकाल नगर ?

सभसँ कारुणिक दृश्यमे अछि ओ भवन
कहियो ऊँच रहल हएत सभसँ, गर्वित
आसन्न जल-संकटक कारणेँ
धमनीक अवरुद्ध शोणितक संचारसँ
ढहल देखाइत अछि सभसँ पहिने।

माटिक एकटा धूपदानी
खण्डित करघाक बाँहि

मुरुत प्लास्टिकक
विह्वलतासँ ताकि रहल अछि सतृष्ण नेत्रेँ
आगुन्तककेँ ताकि रहल अछि
बचल जीवन-रेख
ध्वस्त नगरमे।

विविध गुण-धर्म बलेँ जिबैत स्त्री आ पुरुष
पिबैत हेतथि संग रहि बहैत जल नदीक
डूबल दिनचर्यामे अपन-अपन।
कोनो नीरव बालिकाक मनक
मौलाएल हेतनि तन्नुक प्रेम
अँकुराएल हेतनि जे
ओहि सहपाठीक लेल
चलि गेल हेतनि जगतक अज्ञात अवधिमे
से एखन कतए हएत ?

आबि गेलि छथि ओ पिताक आँगुर पकड़ि
हजार कोस दूर।

क्राइस्ट

[लुक एट द टाइम— आइ एम लेट !]

पीठ पर बरिसैत रहलनि कोड़ा
यातनाक पहाड़ उघैत रहलाह
नि:शब्द, नि:शंक, छटपटाइत।

चलैत तँ रहथि
आर जोरसँ चलथि
पेट-पीठ, गरदनि पर
होइत रहलनि निर्मम प्रहार।

यंत्रणाक अग्निकुण्डमे रहथि
सब दोख अपनहि पर उचंगि लैथि

दयासागर/क्राइस्ट रहथि,
अटकितथि नहि तँ
की छाबामे मारल नहि जएतनि चाबुक—
सटाक्-सटाक् !

समयमे निडर रहथि
महान रहथि क्राइस्ट
मारि खाइत, मारि खाइत
मारि खाइत छोड़थि ठाम
देखबथि:
समयमे उत्पन्न समयक प्रहारसँ
क्यो कखन छोड़ैत अछि ठाम,
देखबथि चलथि, मारि खाइत
बीच बाजार मे।

दसरथ माझी

जेठुआ रौदमे
पहाड़ तोड़ैत
जरैत सूर्य दिस ताकि
बाजल हेताह दसरथ माझी—

सूर्य,
तोँ जगतकेँ ज्योति दैत छह,
हँसैत छह हमरा पर ?

बड़ प्रतापी छह
तँ पूब छोड़ि
कने
दोसर दिस उगि
देखाए दैह ने ?

कने अटकब नहि पृथ्वी

आइकाल्हि, एना किऐक सोचैत छी हम
डुबैत सूर्यमे ?
चैत मासक शेष होइत बूझल-गमल दिनमे ?
पसरल जाइत मुनहारि साँझमे ?

दृश्य-जगतक अपन परिचय बचएबामे
मन-प्राणसँ अपस्याँत रहैत अछि जखन
आमक गाछ,
आमक गाछसँ कहैत छी—
'पछिलो बर्ख
अहाँ खुआओल अछि बेस आम,
ओ तँ सुखाएल जाइत अहाँक एहि ठाढ़िसँ
अपन नेनमतिमे
सिंगी-पतासी खेलएबाक काल
हम खोंटि लेल करी कोमल पातसभ।'

कहैत अछि आमक गाछ—
'हमरा किछुओ नहि मोन अछि।'

आकाशक मलिछौंह रंग
अंगेजि लेबाक लेल जखन विवश रहैत अछि
अपन रंग तेआगि
पोखरिक कननमुँह जल,
जलसँ कहैत छी—
'जीवन भरि नहाएल छी
उमकल छी, खेलाएल छी 'चैत-चैत, 'हरदा-हरदा,'
कोरमे अहींक
अहींक अछिंजल
पूजाक लेल कलसीमे भरने छी,
अपन अज्ञानतामे
निरमाल फेकि कएल अहाँकेँ प्रदूषित।'

जल बजैत अछि—
‘की अर्र् -दर्र् सोचैत रहैत छी नारायणजी
हमरा किछुओ नहि मोन अछि।’

आ पहिल साँझुक अन्हारमे
विलीन होइत जाइत रहैत छथि जखन पृथ्वी,
पृथ्वीसँ करुण नेत्रेँ कहैत छी—
‘अपन उत्सव आ उत्तापमे,
अपन दर्पमे, संतापमे
असंख्य बेर पददलित कएल
कएल अहाँक दोहन हम
विकसित कौशलसँ
अहर्निश नि:सत्व कएल
अपन
आ केवल अपन सुख लेल
बगए-बानि, चाम धरिक रूप-गंधक भेद कए
कएल अहाँक खण्ड-खण्ड
अहीँक आवेगसँ पाओल अछि, मुदा जीवन
कने अटकब नहि पृथ्वी !

आ पृथ्वी कानए लगैत छथि,
भरि राति कनैत रहैत छथि।

प्रात हम पबैत छी,
नोरसँ भीजल रहैत छनि हुनकर सगर गात।

गाछसँ खसैत पात

गाछसँ खसैत पात
घुरमुड़िया खाइत आबि गेल माटि पर।

क्यो पूछलनि—
ने बिहाड़ि आ ने बसातक हल्लुको सन सिहकी
तोहर एहन अधोगति?

कुहड़ैत बाजल पात—
सूर्यक किरणसँ ग्रहण नहि कएल होइत छल प्राणवायु
सहल नहि होइत छल आब आगत ऋतुक आघात।

पुरान भए गेल छी, बूढ़ भए गेल छी
बाटसँ भए गेलहुँ अछि कात।

ठाढ़िक टुस्सी

गाछक एकटा ठाढ़िकेँ झुकाए
ठाढ़िक बहराएल टुस्सीसँ पूछल—
गौरवशाली अतीते तोहर परिचयमे एतेक निखार अनने अछि
प्राचीन लेल कनियो ने दया, ने करुणा आ ने नोरक पतरो टघार
बूढ़क करैत छह तोँ दुर्गति ?

पहिने बिहुँसल, तखन बाजल—
हम जनैत नहि छी बूढ़ आ पुरान
हमर आगू जे रहैत अछि
ऋतुमे,
तिल-तिल पसरि जएबाक अपन यात्राक विस्तारमे
आगू अबैत अछि जे तकरा बाधा बुझैत छी
अपन बाधा टा कात करैत छी हम,
हमहीँ तँ आनल अछि वसंत।

ऋतु पाकल कटहर सन...

चिड़ै
खोधि देलक अछि लताम,
लताम पाकल छल।

कोना बुझि गेल चिड़ै
लताम पाकि गेल अछि गाछमे ?

चिड़ै नहि छी।

ऋतु
पाकल कटहर सन
महमह करैत अछि सगरे।

सामर्थ्य कहाँ अछि
एकटा चिड़ैक,
चिड़ै सन
बुझि लेबाक ऋतुक सौरभ।

मेघ संग उड़ि कहल...

रोपल गाछ एक कचनार
जड़ि,
आत्मासँ परीछि लेलक माटि।

ढारल नित्य पानि टा बेर-बेर,
ध'ड़,
प्राणसँ सिरजि अनलक ठाढ़ि-पात।

बेढ़ल,बचाओल अनेर जन्तुसभसँ,

विकसित करैत गेल अपन गात।

शिखा पर देखल आइ पहिल फूल,
मेघ संग उड़ि कहल, धरतीकेँ झात्।

जड़ि

फूल रही रोपने
एक गाछ
कचनार।

लीबल रहए ध'ड़
उदास रहए मूड़ी।

अंग-अंग
डूबल रहए याचनामे।

पात-पात
हर्खित अछि।

शिखा बढ़ैत अछि ऊपर
आर अधिक ऊपर।

आब तँ कहैत अछि—

'लवण-जल भेटए
धरतीसँ आर बेसी,
आर बेसी
जड़ि जाए अन्हारमे
गगनकेँ भेदि देत'।
आ जँ,
जड़ि लागए बढए आकाश दिस ?

जड़ि
नहि थिक लोक से
नगरक नव धनिक
भेल नहि अछि हृदयहीन,
सोचत नहि कखनहुँ विनाश।

मुदित मनेँ

हँसैत देखल
फूलकेँ
ठाढ़ि पर
काल्हि सन
भोरे-भोर।

हँसैत देखाएल
काँट धरि।

हँसल रही
आइ जखन
मुदित मनेँ।

सगर गाछ
संग दैत
हँसैत देखाएल छल।

सहजात-पत्र

एक

गाछक सहजात-पत्र, डोलैत सदा वृन्त पर,
गबैत समूह गान, नाचि-नाचि, झूलि-झूलि,
खसल आइ माटि पर।

अन्हड़-बिहाड़ि नहि, वसंत बड़ी दूर छल,
टूटल नहि, तोड़ल गेल, खोँटि खसाए छोड़ल गेल।

आतुर प्रकाशमे, अर्घ्य दैत सूर्यकैँ,
अच्छौँ भरि प्राणताप, दान करैत, मान दैत,
उद्गमकैँ पठबैत, रहए जे अन्हारमे।

पाओल कहाँ जीवन-धन ?
आन जे पबैत छल ?

बढ़ए आर वृक्ष-शिखा, भेदए गगनकैँ,
हतभाग्य पत्र, तोड़ि ओकरे टा हटाए देल ?

दू

धरती पर पड़ल, तोपाइत रहल धूरासँ,
धारक कछेर पर, रहैत कात धारासँ।

रौद कने तिक्ख भेल, समय कने गुम्म भेल,
सिहरि उठल अंग-अंग,
चलल हवाक सिहकी पर, आबि गेल धार बीच।

धारमे बहैत अछि।

कतोक देश नाँघि, गमकि, सीझत कतोकमे,
कतोक ठाम बिलमि, मुदा, रीझत विवेकमे।

लागत निश्चेष्ट कतेक ? शिथिल कतेक ? अशोभन ?
काल्हि जतए रहए स्वयं, आइ ओतए ठाढ़ जन ?

जलमे बहैत अछि, जल संग बहैत अछि,
सहैत अछि चोट जलक, गति-मति जनैत अछि।
आगू अछि के बहैत ?
सैह टा हेरैत अछि।

उद्वेग

अपलक निहारैत फसिल
हर्खित, नाभि-कुण्डसँ चलैत आड़ि पर
ओकर नयन-ज्योति छी हम।

रग-रगमे बहैत रुधिर रही,
मुट्ठी-मुट्ठी बाओग करए बीज।

मन भेल रही ओकर
बिसरल रहए टघरैत घामक धार
प्रचण्ड रौदमे खेत कोड़ैत।

सरिसबमे धए लैत अछि फूल
पीयर दह-दह,
करैत अछि कतेक उन्मीलित !

कवितामे बाँचैत छी
कतेको बेर
कतेको ठाम
कतेकोक माझ निरन्तर,
खिज्जा सोहाँसक स्वाद-रसक महिमा
तीसीक फूल परहक कीर्तन, लुबुधि जाइत माछीक
धनियाक वसंत-गीत बखानैत रहैत छी।

सुनि, दौड़ि जाइत अछि पएबा लेल सौरभ
ओकर उत्कण्ठित आत्माक उद्वेग छी हम।

धन्यवाद ! धन्यवाद !!

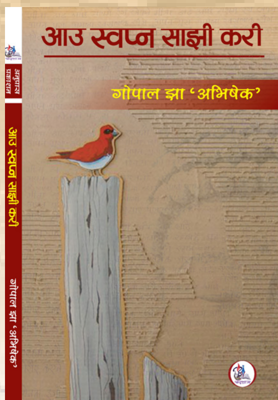
ओस
आकाशक नोर छथि
अथवा बसातक ममता?
हम नहि जनैत छी

रातियेमे किएक सुनिश्चित करैत छथि
अपन आगमन
आ देखाइत छथि
प्रातमे ?

मुदा, जखन हम देखल
गाछक हरियर-हरियर पात
आ अपन मूड़ी अलगौने दूभि
हमरा देखौलनि,
हुनकासभकेँ धन्यवाद !

आ
जेसभ देखबैत छथि स्वयंकेँ
जिनकर उपस्थितिमे
हमर आँखि
देखबाक लेल होइत अछि सक्षम,
प्रकाश थिक
ओहि वस्तुसभकेँ
जेसभ देखबैत छथि
देखैत नहि छी
देखए चाहैत छी यत्नपूर्वक
अदृश्यसँ परिचय करबैत छथि
धन्यवाद ! धन्यवाद !!





कविता

कविता संग्रह : आउ स्वप्न साझी करी
कवि : गोपाल झा 'अभिषेक'

अंतिम आस

[जेसिंडा अर्डर्नक लेल...]

माए ! अंतिम आस जँ पोसलियै
से अकारण तँ नहिए।

कहिआ नहि तकलियै अहाँ हमर मुँह दिस ?
चिन्ताक एकोटा रेघ जँ देखाएल
भ' गेलहुँ अहाँ अपसिआँत
हँसोथि देलहुँ माथ
माए ! अंतिम आस जँ पोसलियै
से अकारण तँ नहिए।

जखन बहलै नाक, पोछि देलियै
ओझरेलै झोंट, ल' कंघी सोंटि देलियै
जखन कखनो हम उठा अस्त्र
दौड़लहुँ करबा लेल कतहु ध्वंस
पकड़ि लेलियैक अहाँ बाँहि
बहिन ! अंतिम आस जँ रखलियै

से अकारण तँ नहिए।
जखन-जखन खगता भेल
ललाइत रहलहुँ करुणा लेल
अहाँक उपस्थिति देखने छी हे नारी !
अंतिम आस जँ जोगेलियै
से अकारण तँ नहिए।

कोना परतारब हे तथागत

*[साल-दर-साल चमकी बोखारक बलि चढ़ैत शताधिक
नेना सभक स्मृति-तर्पणमे...]*

ओ एकटा माए छलीह
जकरा एक मुट्ठी सरिसोक बहन्ने
अहाँ यथार्थबोध करयबामे
सक्षम भ' गेल रही हे तथागत !
मुदा ओ तँ सांत्वना देएबाक
एकटा बहन्ने छल ने हे अमिताभ !
सभ घरमे आगाँ ने पाछाँ भेल
मृत्युक अनुभूतिक
भने संतोष क' लेने हो ओ माए
मुदा ओहो तँ भरमयबाक
एकटा युक्तिए छलै ने हे युग-पुरुष !

ओहि शोक-संतप्त माएकेँ
छलैक अहाँसँ चमत्कारक उमेद
छलैक विश्वास
अहाँक ईश्वरत्त्व अवस्से जिआ देतैक
ओकर बच्चाकेँ
मुदा अहाँ जनैत छलहुँ हे ज्ञानाधार !
मृत्युक आगू काज नहि करैत छैक कोनो चमत्कार
कोनो नेनाकेँ काल-कलवित होएबासँ बचेबा लेल
होइत छैक चिकित्सकीय अनुसंधान
आ यथोचित संसाधनक दरकार।

छोड़ि देने रही अहाँ तहिआ एहि प्रश्नकेँ
जक-थक
विश्वास रहल होएत
भविष्यक मनुष्य अवस्से अपन कर्मठता
आ उद्योगसँ
निकालि लेत एकर समाधान।

ओहि माएकेँ त'
अहाँ परतारि देने रहियैक हे महाश्रमण !
मुदा आजुक शताधिक माएकेँ
कोना परिबोधब हे करूणासागर ?
जकर सभक क्रंदनसँ
अहूँ विचलित भ' गेल होएब आइ।

हे महाबोधिसत्त्व !
तत्क्षण समुचित समाधान नहि निकलबाक कारणें
की अभिशापित भ' गेल अछि ई जन-क्षेत्र ?
बेबस अछि अधुनातन व्यवस्था ?
आन्हर भ' गेल अछि अनुसंधान प्रवृत्ति ?
असमर्थ छथि आधुनिक जीवन-दाता ?
पंगु भ' चुप्पी साधि लेने छथि नीति-नियंता ?

हे मृत्युंजय !
आब यथार्थक दिग्दर्शन नहि
करुणाक वर्षण चाही
महावर्षण
अहूँक नेत्र-द्वयक कोरमे नोर चाही दयासागर !
नोरक अजस्त्रधार
यैह मात्र बचा सकत
हमर सभक भविष्यकेँ।

ट्रान्सफर्मर

चालक-कुचालकक बैसा सामंजस्य
बैसाओल गेलए ट्रान्सफर्मर
अभेद्य देबाल बनि ठाढ़ भ' गेलए
अवांछित प्रवाहक विरूद्ध
चिनमाटिक बनल तुच्छ सन वस्तु-जात सभ
अपन स्वभाविक प्रकृतिक कारणेँ
बनि गेलए अपरिहार्य
सुचालकताकेँ बनौलकए असान
भरि बस्ती भ' रहलए इजोत।

दिन-राति प्रवाहित क' रहलए उर्जा
ट्रान्सफर्मर
अगल-बगलक लोक
साधारण सन कुचालक वस्तु सभक कारणेँ
क' रहलए अपनाकेँ सुरक्षित अनुभव
महत्त्वहीन ई वस्तु सभ
अपन स्वाभाविक गुणक कारणेँ
रोकि रखने अछि अवांछित प्रवाहकेँ।

सुचालक-कुचालकक संतुलित समन्वयसँ
ठाढ़ भ' रहलए उर्जान्वित भ' समाज।

अनुष्ठान

कतहु नहि खसौ
रक्तक एकोटा बून्न
आ नीके-नीक

भ' जाउक सभटा नीक परिवर्तन
एहने दिनक प्रतीक्षा अछि बन्धु !
एहने समयकेँ स्वागत लेल
उताहुल अछि मोन
सुनू मीत ! अकानि—
एहने सन परिस्थिति लेल
कतेको आत्मा
ठनने अछि अनुष्ठान।

जेरुसलम

कत' होयबाक चाही जेरुसलमकेँ ?
केम्हर होयबाक चाही जेरुसलमकेँ ?
ककर होयबाक चाही जेरुसलम ?

एहि सभ प्रश्नक फेरमे जँ नहि पड़ी
सभक कही
सभक हक लेल लड़ी
तँ जेरुसलक होयबाक सुख पाबि सकैत छी
जेरुसलम होयबाक दु:ख बर्दास्त क' ली
तखन।

पीठ देखाब'वलाकेँ सम्मानमे

आँखि जँ नहिओ ओछौने रही
मुदा रही जँ ठाढ़
तँ चौँकि नहि उठब अहाँ मीता !
नीक लगैए सम्मान दैत।

ओहि जगह हमही रहितहुँ
तँ की चाहितहुँ—

करए किओ असम्मान ?

सम्मान तँ
अपनहिमे रहलए प्रश्नांकित
विस्मयादिबोधक चेन्ह तर कछमछाइत
कतेक की पापड़ बेलबाक परिणति होइत अछि सम्मान
सत्य पूछी तँ एकटा रणनीति सेहो होइत अछि।

नहि सोझा राखब कोनो उदाहरण
नहि कहब उनटाब' इतिहासक पन्ना
नहि कहब करु अभ्यास
देखबाक लेल सभमे
एकहि देवत्त्वक आधान।

घुरि अएबाक पैरोकारक रूपमे
नहिए करी जँ अपनाकेँ ठाढ़
तखनो आँखिमे नहि भेटए हीनताक कोनो भाव
तँ व्यंग्यसँ अहाँ मुसकिया नहि उठी मीता !

छिटकल बिजुलोका हमरे अछि

इजोरिए नहि
अन्हरिओ हमरे अछि
छिटकल बिजुलोका हमरे अछि
मुकरि कोना जएबैक ?
करबै कोना नहि अंगीकार ?
सम्हार' पड़त सभकेँ
मूल रूपेँ स्वीकार' पड़त सभ किछु।

वसन्तक स्वागत अवश्य हेतैक
मुदा ताहिसँ पहिने आबि गेलैक पतझाड़

नहि मना क' पौलियैक
मनो कएने की मानैत ?
जाहि गाछ-बिरिछपर अएलैक
जाहि हवामे सन्हिएलैक
ओहो त' स्वागते कएलकैक।

तखन कोना गएबैक मात्र वसंत-महिमा ?
पतझाड़क सेहो छैक अपन गरिमा।

इजोतक गप

इजोतक गप करब
तँ इजोतेटाकेँ गप करब
बहुतो दिन धरि रोकि कोना राखल गेल
से प्रसंग तँ अनायासे चलि आओत
बस्स ! सायास रोकबाक प्रयास
आब नहि कएल जाए मीत !

इजोतसँ बड्ड फायदा छैक
सभक फायदा
बहुजन हिताय
कोना एकटा सड़ल विचार खोपड़ीमे सन्हिआ गेल रहए
सभतरि इजोत पसरने
कोना चलतैक काज ?
के चिचिआएत ?
'तमसो मा ज्योतिर्गमय'
के जयकारा लगाओत ?
के विनयावत् समक्ष होएत ठाढ़ ?

अपरोजक मिथ्याकांक्षा मोनमे बसि गेल रहए

सत्य पूछी तँ दुर्भाग्यरूपी नाग डसि लेने रहए
भोगलहुँ से भोग
आर कते भोगब ?
मिथ्या बड़प्पनकेँ
आर कते जोगब ?

धैर्य तँ चाहबे करी मीत !
सभतरिसँ घुरि-फिरि पहुँचल छी एतए
सभक ने देसकोस
सभक लेल ने जनतंत्र।

बड़ीटा छैक दुनिया
कमएबा-खएबा लेल
हँ, छोट पड़ि जाइत रहलैए
बैसले-बैसल तर माल उड़यबाक लेल
से एखनो भ' रहलए ठेलम-ठेल
तँ इजोतोकेँ बना झुनझुना
बजा-बजा लोभा रहलैए मदारी।

दोसरे दिन जकाँ

[प्रियंका रेड्डीक स्मृति-तर्पणमे...]

दोसरे दिन जकाँ
निकलल हेतैक ओहो दिन घरसँ
पाछाँसँ नहिए छिकने हेतैक किओ
नहि अगेसँ बिलाइ कटने हेतैक रस्ता
हड़बड़ाएल निकलल हेतैक घरसँ ओ
संभव ओहो दिन बिसरल जाइत हो टिफिन
माए ल' आबि ठाढ़ भ' गेल हेतैक आगाँ
जाबति ओ निकालने होएत स्कूटी

छोटकी बहिन दौड़ल चलि आएल हेतैक
देबाक लेल हेलमेट
अनमन दोसरे दिन जकाँ त'
सभ किछु भेल हेतैक ओहो दिन।

तखन ओहि दिन
किएक भेलैक अप्रत्याशित ?
किएक भेलैक दुखद विशेष ?
भेड़िया सभक चाँछपर कोना चढ़ि गेलै ?
'मादा-मासु-आस्वादी'
लार टपकबैत कोना जुटि गेलैक ?
शिकार फाँसबाक अभ्यस्त मस्तिष्क
बूनि लेलकैक तत्क्षण जाल
शिकार बझेबाक कौशल
बना देने रहैक चतुर-चण्डाल
ओहि दिन अवसर भेटि गेलैक
विशेष एतबे भेलैक।

विश्वास-अविश्वासक बीच
असहाय भेलि झूलि गेलैक
मनुखताइ किछु आरो
लज्जित भेलैक
ओहि दिन
एतबे भेलैक।

जोड़'कँ काज जड़िसँ हेतै

जोड'कँ काज जड़िसँ हेतै
तोड'कँ काज बरू होइत रहओ उपरसँ

राजनीति-सुआदी

फसादी
अपने उकन्न भ' जएतैक
कोनो शर्त नहि मंजूर
जोड़'कँ काज जड़िसँ हेतै

भाइ !
आब ककर प्रतीक्षा ?
सभकँ देबहे पड़त परीक्षा

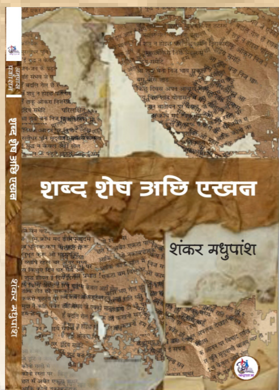
जोड़'कँ काज जड़िसँ हेतै।

सर्वसम्मति बनयबाक क्रममे

सभ दृष्टिए देब' पड़ैत छैक धिआन
ओहिना तँ नहि
क' देल जाए महिमा बखान
नीक लागल आनि बैसा दिऔ
समीकरण बना, सभ सरिआ दिऔ

सर्वसम्मति बनयबाक क्रममे
मोकि देब जनतंत्रक कण्ठ
कोनहु दृष्टिए नहि कहल जा सकैए उचित
बहुमत जँ आँशिक जनतंत्र अछि
तँ सर्वसम्मति मात्र एकटा वंचना
कोनो संघ, कोनो संस्था
वा कोनो अर्द्धविकसित जनतंत्र
भ' सकैए प्रत्यक्षे एकर साक्षी।





कविता

कविता संग्रह : शब्द शेष अछि एखन
कवि : शंकर मधुपांश

खिड़की आ हमर सेहंता

पैघ सँ पैघ आकि छोट सँ छोट
धन्ना सेठ सँ लए
सड़क परहक गरीब लोक तक
वंचित कियो नै सेहंता सँ
ककरो छोट तँ ककरो पैघ
ककरो सस्ता तँ ककरो महग
आ से कोनो वस्तुक
आ किछुओ देखि कें
होइत रहैत छै सेहंता,
जेना पड़ोसीक गाड़ी
पड़ोसिनक साड़ी
दियादक घराड़ी
ऐल फैल बाड़ी
बुधियार भैयारी
पुत्र आज्ञाकारी
गुणमंती नारी
जतेक लोक ततेक प्रकारक सेहंता
जकर जेहेन मोन तकर तेहेन सेहंता

कखनो अपन ओकादि अनुसार
तँ कखनो बाहरो
मुदा वंचित कियो नै !
से हम कोनो बाहर छियै समाज सँ
सेहंता तँ हमरो होइये
कने अलग तरहक
आ अनचोक्के मे कखनो
देखए लगैत छियै सपना खूजल आँखिये
आ तखन पाबैत छी
अपना आप कें बैसल एकटा घर मे
दुमंजिला मकानक छतपर
एकटा कोठरी मे।
खिड़की लग राखल एकटा चौकी
आ तैपर बिछाओल ओछाओन पर पड़ल हम
निहारि रहल छी एकटक बाहरक दृश्य
पसरल छै मेघ सौंसे
नजरिक सिमान तक
झहरि रहल छै बुन्न
भए रहल छै बरखा
आ अवाजो बस ओकरे टा गूंजैत छै चारूकात
देखाइत छै खिड़की सँ
सोझाँ मे नहाइत
धात्री, बेल आ आमक गाछ सब
मगन मोने भीजैत छै
छोटका धियापुता जेकाँ
नेबो, लताम आ अनरनेबा
गाछक दोगे-दोग बिहुँसि रहल छै
मारितेरास फूलक गाछ सब
अढ़ूल, बेला, चंपा आ चमेली
नीचाँ जमीन पर पसरल छै घास
हरियर कचोर...
आकि तखने कान मे अवाज अबैये

चाह पीबै ?
आ एक्के बेर हम चल अबैत छी आपिस
सपनाक नगरी सँ
वास्तविकताक दुनिया मे
अपन डिब्बा सन कोठरी मे
चौकी नै डबलबेड छै
बिछाओन सेहो नीके
मुदा नै छै एतए बस एकटा खिड़की
आ तैं नै छै एतए कोनो गाछ
आकि कोनो बरखा
ने धात्री ने बेल
ने नेबो ने अढ़ूल
ने आम ने अनरनेबा
आ चकुआइत हम
ताकए लगैत छी चारूकात
किनसाइत हमर टूटैत सपना केर
अवशेष सँ निकलि कें
कतहु बाँचल होइक
माटिपर जनमल
एकटा छोट सन
घासक पेमही !

लेखक बनबाक शर्त

जँ न फूटि कें
बिनु किछु कारण
भावक सरिता मन सँ निकलह
किछु नहि लीखह !

बिनु किछु पुछने अथवा कहने
तोरा मोन वा तोहर हृदयसँ
आकि भितरिया पेटक गप सब
तोरा जीह सँ

जँ नहि बरिसए
किछु नहि लीखह !

जँ तोहरा बैसए पड़ैत छह
गहन प्रतीक्षारत भरि-भरि दिन
सोझाँ मे कंप्यूटर सेबने
अथवा धएने छह गरोसि कें
टाइपबला पुरना मशीन ओ
आ ताकि रहल छह घरक भीत पर
अप्पन इच्छित शब्दक आकृति
किछु नहि लीखह!

जँ लिखैत छह मोटका पोथा
धनोपार्जन केर उदेस सँ
अथवा छह मन मध्य कामना
प्रसिद्धि खातिर
पुरस्कार वा सम्माने लए
जँ लिखैत छह
किछु नहि लीखह !

जँ लिखैत छह जानि बूझि कें
रिझबए खातिर
कोनो सुकन्या
आकि प्रणय परिणाम सोचि कें
किछु नहि लीखह !

जँ सुधार आधार बनल छह
किछु लिखबा लए
बेर-बेर बैसय पड़ैत छह
अथवा लिखबा केर नाम सँ
ग्रस्त तनाव करै छह तोरा
तखन आर ककरो देखसी मे
ओकरा सन बनबा केर खातिर
किछु नहि लीखह !
जँ लगैत छह
समय शिला सँ आबि रहल छै

तोरे अंतर्मनक भाव सब
बनि कें प्रतिध्वनि
शब्दरूप मे
तँ नहि बिलमह,
किंतु सुनाबय जँ पड़ैत छह
अप्पन कविता जोर-जोर सँ
अपन प्रेमिका वा प्रेमी
अथवा पत्नी कें
माय-बाप वा आलोचक कें
उत्प्रेरण वा चाबाशी लए
तँ किछु थमहह
एखन काँच छह तोहर लेखनी
किछु नहि लीखह !

तों ने बनह अनगिन मनुक्ख सन
बाट-घाट मे बौआइत जे भेटि जाइत छै
कहइत छै अपना कें लेखक
किंतु उदास, हताश, झमारल
सद्यः जीवनरण सँ भागल
ऊपर सँ बनि चालबाज आ
भीतर सँ जे फोंक भेल छै
जकर अपन मन केर वासना
साहित्यक हित जोंक भेल छै
तें ओकरा सन बनि कें कथमपि
तों नहि लीखह !

भरि दुनिया केर पुस्तक आलय
त्रस्त भेल छै
तोरा जाति सँ
पस्त भेल छै
उठा उठा कें पोथिक कस्थर
आब ने बढबह ऐ ढेरी कें
हे ! दोहाइ छह तोरा हम्मर

आबो बिलमह
किछु नहि लीखह !
तोहर अतमा के धरती सँ
जावत धरि नहि हो प्रक्षेपित
शब्दवाण ओ अनाहूत सन
चुप भए बैसह,
समय एतै ओ
जखन बरसतै
पूर्णचंद्र सँ अमृतधारा
आ नहि थिर रहतै समुद्र
ने गगन अकंप बनल रहतै
दलमलित हेतै वसुधाक कोर
ओहि चक्रवात मे
जखन तोहर अंतस ज्वाला सँ
अग्निशिखा बनि नर्तन करतै
वाङ्मय केर वर्ण स्वतंत्र सकल
आ रंजित हेतै दिशा चारू
लखि हेमवर्ण रवि प्राची मे
ओ समय एतै
आ एतै अवश्ये
जखन हेबह तों शक्तिवान
जँ भेटल रहतह प्रतिभा वरदान
तों लिखैत रहबह
लिखिते रहबह तावत धरि
जावत नहि भए जाइछ भस्म
ई तोहर वासना
अथवा तों
नहि आन कोनो किछु छै उपाय
ऐ वर्तमान मे
आ न अतीतो मे कखनो
किछु आन बाट रहलै कहियो !

बिहाड़िक बाद

घरबंदीक ऐ विवशता मे
ई डेराओन सन
सँझुका अकलबेरा
आ शब्दहीन हम
पछिला कतेको दिन जेकाँ आइयो
अपना छत पर ठाढ भेल
एकटक आँखिये अखियासि रहल छी
दूर... बहुत दूर...
भविष्यक क्षितिज
जतए घराजोड़ी केने सूतल छै
धरती आ अकास
घर सँ पड़ायल कोनो प्रेमीयुगल जेकाँ,
एकटा अनेरुआ मेघक टिक्कर
भोतिआएल परड़ू सन अनमनाएल
आ ओंघाएल डेगें
ताकि रहल छै चारूकात
राति बितएबाक लेल कोनो ठेकाना,
भदोही सँ हरियाणा
आ होशियारपुर तक
पसरल खेत मे बहल
परदेसी मजूरक पसेना
आइ भाफ बनि कें मिलि गेल छै
पूना, बम्मइ, अहमदाबाद
आ दूर सुदूर सूरत तक
मिल आ भट्ठी मे जरैत
ओकरे भाइ सभक खौलैत शोणित मे
आ परिणाम..
पंजाबक खेत मे जरैत
परालीक धुआँ सँ
धुँआइन भेल छै सगरो अकास,
डेराएल सन हम

देखि रहल छी
अन्हराएल अकास मे
लाल टरेस भेल
पश्चिम क्षितिज पर
ई सुगरकोना,
नै मानतै,
उठबे करतै बिहाड़ि
जबरदस्त बिहाड़ि
आ से पछबाक प्रचंड लहरिपर
लए जेतै उड़ा कें पूब भर
अपना संग समेटि कें
सबटा छिड़िआएल पात
छिटफुट भेल
बिसरल अपन अस्तित्व कें
अपना गाछ सँ अलग भेल
बलुआही माटि पर असरा लेने
कतहु आनठाम सँ
कोनो एहने अन्हर मे
कहियो आएल
परदेसी गाछक पात
उत्सुक आँखिये आ डेराएल मोने
देखैत छी पूब भर
ताकैत छी हम अपन गाम
फरीछ मुदा नै देखाइये,
देखाइये एकटा मौन
बिहाड़ि एबाक पहिलुका शांति
यद्यपि शांत छै मोहल्ला
आ लागि गेल छै बीझ
खाली पड़ल घर सभक ताला मे
हेरा गेलैए चाभी भरिसक
मुदा बंद पड़ल घरक हवा
कए रहल छै अनघोल
बाहर एबा लए,
से सोचैत छी हम

की हेतैक जखन
ओइ पछबरिया बिहाड़ि मे
टूटि जेतैक सबटा ताला
खुजतै सबटा केबार
आ बनि जेतैक बिरड़ो,
ई सबटा
अपन बनाओल जेल सँ निकलल
मुक्त भेल वायु
अपन जनमभूमि पर
बाहर आबि कें तकतै
अपन हिस्साक सुरुज
अपन चान
अपन अकास
आ अपन धरती !

एकटा सांप्रदायिक कविता

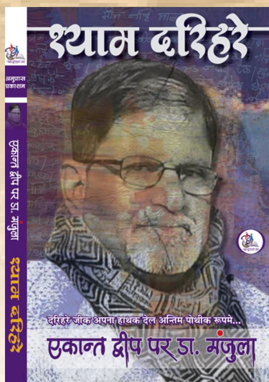
बौक भए गेल छी हम
ताकि लैत छी चारूकात
ककरो पुछला पर
मुदा नै कहि पबैत छी जोर सँ
हम हिन्दू छी !

आ तखन बुझाइये सपना सन
अपन अस्तित्व
ऐ भारत भूमि पर
आ होमए लगैये डर
जे टूटि ने जाय ई सपना
कोनो गली मे
कोनो रस्ता पर
छत सँ अबैत एकटा पाथर
आकि कोनो नकाबपोशक चक्कू
आकि कोनो मॉल मे
एकटा बम विस्फोट !

बहीर भए गेल छी सूनि सूनि कें

भोर सँ राति धरि एक्के टा हल्ला
कखनो टी भी पर
तँ कखनो सड़क पर
आ कखनो
उँचका मीनार पर बान्हल
ओइ बड़का भोम्हा सँ
आ से बढले जाइत छै अवाज
मोनक डरक अनुपात मे
प्रमाण भेटैये जे
ठीके बड्ड डेराएल छै
ई डेराएल लोकक जेर !
से ततबे नहि
दुख कतेक कहू
आन्हर भए गेल छी हम
नै देखि पबैत छी
की ठीक आ की गलत
मुदा देखाइये तैयो
झलफल सन दृश्य
आ निहारैत छी
तरकारी बलाक मुँह
फल बलाक आधार कार्ड
मुदा नै देखाइये
आर्यावर्तक भविष्य
साफ-साफ !
आ तखन असगर मे
अपना चारूकात
अन्हार लगैये सगरो
जखन सोचैत छियै
आ जत्तेक सोचैत छियै
तें छोड़ि देने छी हम सोचब
आ बनि गेल छी
बौक, बहीर, आन्हर
तेजि देने छी चिंता
भावी जँ अकाट्य
तँ की सोचू ?





कथा

कथा संग्रह : एकान्त द्वीप पर डा. मंजुला

लेखक : श्याम दरिहरे

आ करीमा कहाँ मानलकै

अन्तिम पेशेन्ट देखलाक बाद डा. अहमद पत्नीसँ मोबाइल पर गप कऽ रहल छलाह। एकर बाद आब ओ उठिकऽ सोझे घर जैतथि, कि बाहरमे कंपाउन्डरक बात सुनिकऽ फोन ऑफ कएलनि। बाहरमे कंपाउन्डर अरशद ककरोसँ झंझ-मंझ कऽ रहल छल, ‘‘क्लीनिक बन्न भऽ गेलै। आब काल्हि भोरे आउ। डाक्टर साहेब उठिकऽ घर चलि गेलखिन।’’

‘‘हे ! अइ पेशेन्टक केओ नइ छै। रस्ताक कातमे पड़ल छलै। हमर सबहक गोहारि केलक तऽ हम सब एतऽ लऽ अनलिऐ। एतेक रातिकऽ आब कतऽ जेतै ई। एकबेर डाक्टर साहेबके बजाकऽ देखा दिऔ एकरा।’’ एकटा नारी-स्वर अएलनि।

‘‘अरशद! अन्दर आबह।’’ डा. अहमद भीतरसँ हाक देलखिन।

‘‘की उतराचौरीमे लागल छह?’’ अरशदकेँ भीतर अएला पर कहलखिन।

‘‘देखिऔ ने सर, ई संस्थावाली सब एकटा महिलाके उठाकऽ अनने छै। जे एकदम भिखमंगनी लगै छै। ओकरा एखने देखेबाक जिद्द ठनने छै।’’ अरशद घृणासँ बाजल।

डा. अहमद बिनु किछु बजने आला लऽकऽ कुर्सी परसँ उठि गेलाह। मरीजक प्रतीक्षा कक्षमे अएलाह। दीन-हीन हालतिमे एकटा मरीज बेंच पर पड़लि छलि। ओकर वस्त्र बेश लेढ़ायल सन छलैक। आँखि मूनल आ खाधिमे पड़ल छलैक। एकबेर

देखलासँ बुझेलनि जे की पता अइ खाधिमे आँखि छैको कि नहि। मुँहसँ लऽकऽ कालर बोन धरि मिलाकऽ दू सौ ग्राम वजनक देह बाँचल छलैक। माथमे केश खड़ौढ़ कटलाक बाद बाँचल खुट्टी सन बुझा रहल छलैक। बेंचक कातमे दूटा महिला ठाढ़ छलि।

''ई के छैक? की भेलैए एकरा? ई तऽ एकदम मरऽक मान छैक।'' डा. अहमदक मुँहसँ निकललनि।

''हम सब एकरा नइ चिन्है छिऐ। ई हमर मुस्लिम महिला संस्थाक ऑफिसक गेट लग सूतल छलै। हम आ करीमा जखन निकललउँ तऽ एकरा कुहरैत देखलिऐ। पुछलिऐ जे तोँ के छें? की भेलौ? तऽ किछु नहि बाजि सकल। एकटा मोटरी जे काँख तर छलै ओमहर इशारा केलक। हम सब पुछलिऐ जे की चाहै छें ? तऽ मुँह बाबिकऽ किछु कहऽ चाहलक, मुदा आवाज नइ निकललै। ओकर मोटरी खोलिकऽ देखलिऐ तऽ ओइमे सोनाक गहना देखलिऐ। हम आ करीमा अनुमान केलउँ जे ई मोटरी देखाकऽ अपन इलाज कराबऽ कहि रहल अछि। तें हम दुनू गोटे ऑटो कऽकऽ अहाँक लग अनलिऐ।'' एकटा महिला, जकर नाम परवीना छलैक बाजलि।

''अइ मोटरीके अहाँक सामने आब खोलैत छी।'' दोसर महिला करीमा बाजलि आ मोटरी खोललक। मोटरीसँ एकटा सोनाक चेन जे किछु नहि तऽ तीन भरि अवश्ये छलैक, एक जोड़ा कानक झुमका, नाकक नथिआ आ दूटा औंठी निकललै। मोटरीमे एकटा कापी सेहो छलैक मुदा पूरा सादा छलैक। परवीना ओहि कापीक सभ पन्ना उनटौलक। अन्तिम पन्ना पर एकटा फोन नम्मर सन अंक लिखल भेटलै। ओ डाक्टर साहेबक सहमतिसँ अपन मोबाइलसँ नम्मर लगौलक। फोन कनेक्ट भेलैक आ एकटा नारी स्वर अएलैक। ''हलो।''

''देखू बहिन हम 'मुस्लिम महिला संस्था'क सेक्रेटरी परवीना खातुन बजै छी। आइ मस्जिद रोड पर एकटा महिला बहुत बीमार स्थितिमे हमरा सभके भेटल अइ। हम सब ओकरा डा. अहमदक क्लिनिक अनने छिऐ। डाक्टर साहेब ओकरा अन्दरमे जाँचि रहल छथिन। ओकर हाथक कॉपीसऽ अहाँक नम्बर भेटल अइ। कृपया कहू जे ओ के छै?''

''हम नइ जनै छिऐ।'' ओमहरसँ कहल गेलैक।

''देखू कमसऽ कम ओकर नाम आ पता कहू।''

''ओकर नाम अफरीदा छै। ओ अहाँक आफिसक आगू बस्तीमे रहैत छै। हमरा सबके आब ओकरासऽ कोनो माने मतलब नइ हए।'' कहिकऽ फोन कटि गेलैक।

डाक्टर अहमदक स्टाफ मरीजकेँ भीतर लऽ गेलैक। डाक्टर साहब मोटा-मोटी जाँच कऽकऽ इलाज प्रारम्भ कऽ देलखिन। हुनके स्टॉकसँ दवाइ पड़ऽ लगलै। पानि (स्लाइन) चढ़ाओल जाए लगलै। डा. अहमद तकर बाद परवीन आ करीमाकेँ अपन चैम्बरमे बजौलखिन।

“हमरा क्लिनिकमे मरीजके भर्ती रखबाक सुविधा नइ छै। यद्यपि दूटा मरीज लेल व्यवस्था कऽकऽ रखने छी। मुदा सबटा इन्तजाम नइ अछि। अइ मरीजके राति भरि पानि-दवाइ चलतै। तें एकगोटाक रहब आवश्यक अछि। हमर नर्स तऽ रहत मुदा अहाँ एकगोटा रहिऔ। काल्हि जाँच करेबै जे असलमे बीमारी की छै। रहल एकर खर्चक बात तऽ अहाँ सब लग ओकर गहना छैहे। से रखने रहू। खर्चक बारे बादमे विचार करब।” डा॰ अहमद कहलखिन।

डा. अहमद अपन स्टाफकेँ इलाजक सभ बात बुझाकऽ अपन आवास विदा भऽ गेलाह जे ओही मकानक ऊपरका महल पर छलनि।

भोरमे डा. अहमद क्लीनिकमे अबिते अफरीदाक जाँच करब प्रारम्भ कएलनि। खून आदिक सैम्पल जाँच लेल पठाकऽ अपन कुर्सी पर आबिकऽ बैसलाह। दवाइक पुरजा लिखिकऽ दवाइ मँगबौलनि। राति भरि पानि-दवाइ देहमे गेलासँ अफरीदीक चेहरा कने बदलल सन लगैत छलैक।

“साँझ धरि सभटा रिपोर्ट आबि जेतै तऽ असल बेमारी कहि सकब। मुदा एखनुक लक्षणसऽ हमरा बुझने एकरा रक्त-अल्पता, निम्न रक्तचाप आ कमजोरी आदि छै। कोनो बड़का बीमारी नइ बुझाइए। तखन रिपोर्ट जे कहै।” अहमद कहलखिन।

“डाक्टर साहेब अहाँ काल्हि रातिसऽ सबटा खर्च अपना दिससऽ कऽ रहल छिऐ। आगूओ खर्च हेतै। ओहन अवस्थामे की कएल जाय?” परवीना पुछलकै।

“ई बात तऽ निश्चिते जे केओ खैरातमे इलाज नइ करतै। एकर इलाज लम्बा आ महग हेतै। ताहि इलाज लेल अफरीदाक जेवर तऽ छैहे। जाधरि बीमारीक निस्तुकी नहि भऽ जाइ छै, हम खर्च कऽ रहल छी। तकर बाद देखल जेतै जे की करी। हँ, अइ बीच अहाँ सब एकर रिश्तेदार सबके ताकू।” डा. अहमद कहलखिन।

“पछिला राति तऽ हम दुनू गोटे अही क्लीनिकमे ठहरि गेल छलउँ। हम सब की एखन जा सकै छी? परवीना पुछलकै।

“हँ अहाँ सभ जाउ। आब साँझमे आएब। ता जाँच रिपोर्ट सेहो आबि जेतै। एखन हमर स्टाफ ध्यान रखतै।” डा. अहमद कहलखिन।

परवीना आ करीमा बाहर आएलि। “करीमा! एकटा बात बूझि ले जे अइ मरीजक देखभाल हमारा सबके अधिक दिन तक करऽ पड़त। तें अइ काजमे आर बहिनके शामिल करऽ पड़त।” परवीना बाजलि।

“दीदी, हमरा सबके ई सेहो पता लगाबक चाही जे अफरीदा अइ हालति तक कोना पहुँचलि। ओकरा संग भेलैए की। ओ के अइ!” करीमा कहलकै।

“जरूर! इलाजक संगे हम सब सदस्या मिलिकऽ अइ बातक खोज कइएटा लेबै। ई शहर कोनो दिल्ली-मुम्बइ नइ छइ जे पते ने चलत। हम सभ छीहो तऽ बड़ लोक।” परवीना कहलकै।

‘‘अफरीदा बहुत बेसी दूरक नहि हेतै। ओकरा देहमे जखन एकोरत्ती सक्के ने छइ तऽ दूरसऽ औतइ कोना!’’ करीमा बाजलि।

‘‘हँ सेहो सत्ते कहै छें। एखन तऽ तोहूँ घर जो फेर साँझमे मुलाकात होइअए।’’ परवीना कहिकऽ अपन डेरा दिस चलि गेलि।

परवीना एकटा तलाकशुदा मुदा पढ़लि-लिखलि महिला अछि। दुनिञा-दारी बुझैत छैक। तलाकक विपत्ति भोगने अछि। पति छलैक दुबइमे कार्यरत। ओतहि कोनो मौगीसँ निकाह पढ़ि लेलकै आ परवीनाकेँ व्हाट्सअप्प मैसेज पर तीन तलाक दऽ देलकै। परवीना तर्क पर तर्क दैत रहि गेलि। मजहब आ हदीसक वास्ता दैत रहि गेलि। मुदा केओ किछु नहि सुनलकै। शौहर (पति) छलैक विदेशमे आ एहिठाम ससुर-सासु देओर केओ संग देबा लेल तैयार नहि। मुस्लिम पर्सनल कानूनक कारण कोनो कानूनी सहायता धरि भेटबाक आश नहि छलैक।

परवीना देख-सुनऽमे बड़ सुन्नरि नहि छलि। जँ ऊपरका सुनरताइ मात्र सुनरताइ, तऽ परवीना सते साधारण सुन्नरि। नहि जँ अन्य गुण, शिक्षा आ नीक विचार सेहो सुनरताइक अवयव, तखन परवीना सन सुन्नरि एहि छोट शहरमे केओ नहि। पति एही कारणे परवीनासँ भड़कल सेहो रहैत छलैक। ओ पत्नीकेँ पएरक जूती बुझबाक परम्पराक पोषक आ अनुयायी छल। पत्नी फटर-फटर बजतै आ नीक बेजाएक विश्लेषण करतै से ओकरा बरदासि नहि छलैक। ओकरा दाबी छलैक दुबइमे नौकरी करबाक। घर अबैत छल तऽ रुपयाक अतिरिक्त मालिकक उतरन-फेरन कपड़ा आ अन्य वस्तुजात अनैत छल जे नवे सन रहैत छलैक। एहन कमाउ आ गुणमान शौहरक पएरक जूती बनब परवीना लेल भाग्यक बात होअएबाक चाहैत छलैक। मुदा से ओ नहि मानैत छलैक।

परवीना अपन शौहरक नौकरीक असली गंजनसँ परिचित छलि। दुबइमे ओकर रहन-सहन आ शेखक आगू ओकर गुलामी सभटा परवीनाकेँ बूझल छलैक। एक मिनट देरी पर शेख जूता लऽकऽ पीटि दैत छलैक। तैओ भारतीय नौकर अपन देशी मुद्रामे बेसी वेतन आ शेखक नेरायल वस्तु-जातक लोभे ओकर सभक तड़वा चटैत छल। जे जलालति शौहर दुबइमे भोगैत छल से ओलि ओ एतऽ अपन जोरूसँ सधाबऽ चाहैत छल। एहि ठाम ओ अपनाकेँ शेख आ पत्निकेँ गुलामक मुद्रामे देखऽ चाहैत छल। परवीना मुदा ताहि लेल तैयार नहि छलि। ओ बीबी-शौहरक सम्बन्धमे बराबरी, परस्पर प्रेम आ सम्मानक पक्षपाती अछि। ओ पतिसँ प्रेम करैत छलि। ओकर सेवा करैत छलि, मुदा गुलामी नहि। सेवा आ गुलामीमे अन्तर होइत छैक से ओ बुझैत अछि। अन्तर तऽ बुझैत छलैक पति सेहो मुदा ओकरा गुलामे चाहैत छलैक। यैह छलैक दुनूक मध्य खटपटक कारण।

पछिला बेर एकटा नान्हिएटा बातसँ झगड़ा प्रारम्भ भेल छलैक। पतिकेँ दुबइसँ अएला एक मास भेल छलैक। ओ अपन पलंग पर बैसल छल। परवीना घरक काजमे

लागल छलि।

''परवीना हमर चप्पल कने दे तऽ?'' पति कहलकै।

''कतऽ अछि?'' परवीना भनसा घरसँ पुछलकै।

''बाहरमे सोफा लग छै?'' पति पलंगे परसँ बाजल।

परवीनाक हाथमे चिक्कस लागल छलैक। तें ओ अपन पतिक चप्पल पएरमे पहिरिकऽ पलंग लग लऽ अनलकै।

''तोहर हिम्मति कोना भेलौ जे हमर चप्पल तोँ पएरमे पहिरि कऽ अनलें।'' अपन चप्पल परवीनाक पएरमे देखि पति तमसा गेल छल।

''हम रोटी बना रहल छी। हाथमे चिक्कस लागल अछि तें।'' परवीना अप्पन हाथ देखबैत कहलकै।

''शौहरक जूतामे अपन पएर घोसिआबक तोँ सोचबो किए केलें?'' पति तामसमे जोरसँ कहलकै।

जा परवीना अपन बचावमे किछु आर सफाइ दितैक पति ओकरा कनपट्टीमे एक तबराक मारि देलकै। परवीना एहि अचानक प्रहारसँ अचम्भामे पड़ि गेलि। ओकरा विश्वास नहि भेलैक जे एतेक साधारण बात लेल पति ओकरा मारि बैसतै।

ओ कोनो प्रतिक्रिया व्यक्त नहि कएलक। कने काल धरि ओ बकर-बकर पतिक मुँह निहारैत रहलि आ तकर बाद घुरि गेलि।

दू साँझ परवीना नहि खएलक। ने पति पुछलकै एकबेर। ने सासु-ससुर टोकलकै। परवीना अपनेमे गलैत रहलि। ''खाना नइ खेलासऽ तोहर जुर्म कम नइ ने भऽ जेतऽ।'' तेसरा दिन सासु कहलकै।

पहिल बेर तऽ परवीना किछु नहि बाजलि। मुदा जखन सासु प्रश्नकेँ दोहरौलकै तऽ ओकरो नहि रहल गेलैक। बाजलि,

''हम कोन जुर्म केलिऐ जे अहाँ कहै छी हमरा।''

''शौहरक जूती बीबीक माथ पर रहऽ हइ। तकरा तोँ पएरमे पहिरि लेलहु। तखनो पुछै छह जे कोन जुर्म केलहु।'' सासु कहलकै।

''ओकर जूती की जूती नइ छै। शौहरक जूती की एतेक पाक छै जे ओकरा बीबीक माथ पर जगह भेटतै! से बात अहाँ सब लेल हए। हमरा लेल नइ। हमर देहक संग जे अपना मोने सभ कर्म करत, तकर जूती मे हम पएर धऽ देलिऐ तऽ जुलूम भऽ गेलै से हम नइ मानै छी। से अइ लेल जे होइ से होइ।'' परवीना बाजलि।

''हम कहले रहैऐ शमीमबाके जे पढ़ल-लिखल छौंड़ी सऽ निकाह नइ कर। वैह नइ मानलक तऽ आब भोगै। एकरा लेल तऽ शौहरे हइ पएरक जूती।'' सासु लोहछलि छलैक।

''हम से एकदम नइ कहै छी। हम कहै छी जे शौहर-बीबी दुनू बराबरि छै।

ओकर जूतीमे पएर देब जुर्म नइ छै। हँ हम जँ ओकर टोपीमे पैर देने रहितिऐ तऽ दोखी होइतउँ।'' परवीना कहने छलैक।

''या खुदा! ई औरत तऽ हरामी हइ। ई अपन शौहरक टोपीमे पएर राखत। तोबा-तोबा! ई दोजखमे जेतै!'' सासु बात कँे जानि बूझिकऽ दोसर रंग देबऽ लागलि।

परवीना एखन ओकर प्रतिवाद करऽ लेल मुँह खोलनहि छलि ता ओकर पीठ पर एक लात पड़ि गेलैक। ओ पाछू घुरि कऽ ताकिओ ने सकलि। पति ओकर झोंटा पकड़िकऽ खींचऽ लगलै। ओ लगमे पड़ल चटुआसँ परवीनकँे पीटऽ लगलै। परवीना अपन रक्षा करऽ चाहलक मुदा चाँढ़नी सासु ओकर हाथ धऽ लेलकै आ परवीना बेश मारि खाकऽ लहू-लुहान भऽ गेलि।

परवीना मारि खाइओकऽ किछु नहि कऽ सकलि। ओकरा कतहु न्याय भेटबाक आशा नहि छलैक। तीन तलाकक खतरा सेहो माथक ऊपर मरड़ा रहल छलैक। पढ़लि तऽ बी.ए. धरि छलि मुदा कतहु नौकरी लेल केओ तैयार नहि छलैक। तें निकाहक सात साल बितैत-बितैत पढ़ाइओ सभटा घुसड़ि गेल छलैक। नैहरमे भाउजक हुकुमत भऽ गेल छलैक, तें ओहू ठाम शरण पएबाक जगह नहि छलैक। मुदा ओ मारि आ अपमान, परवीनाक मोनमे अपन पएर पर ठाढ़ होएबाक निश्चय उत्पन्न केलकै। ओ निश्चय दृढ़ सेहो भेलैक। ओकरा बुझा गेलैक जे एहि घरमे ओकर स्थान बेसी दिन सुरक्षित नहि छैक।

तें पतिकँे दुबइ घुरि गेलाक बाद परवीना स्कूले-स्कूले छिछिआए लागलि। छोट-छिन शहरमे बढ़िया प्राइवेट स्कूल छलैके कएटा! ताहू पर ई मुस्लिम टीचर। केओ राखऽ लेल तैयार नहि। कते एँड़ी रगड़लाक बाद विषय अंग्रेजी रहबाक कारणे एकटा साधारण स्कूलमे स्थान भेटि गेलैक। वेतन मात्र पाँच हजार गछलकै। तैओ परवीना एकरा स्वीकार कऽ लेलक। छ: मास धरि कोनो घटना नहि घटलै। वैह समय छलैक जे परवीना तलाकक बादक जीवन लेल तैयारीमे बितौलक। छ: मासक वेतन तीस हजार रुपया निट्ठाही जमा भऽ गेल छलैक।

आशंकाक अनुरूप छ: मासक बादे पति व्हाट्सअप्प पर दुबइसँ तीन तलाक दऽ देलकै। जँ परवीना पहिलेसँ नहि चेतने रहैत तऽ अवश्ये आसमानसँ खसैत; मुदा ओ एहि खतरा लेल पूर्वसँ तैयार छलि। तें कटमट्टीए सही मुदा नवजीवन प्रारम्भ कऽ लेलक। नैहरमे माए एकटा कोठली दऽ देलकै। परवीनाक भाइ सभ ओकर पतिसँ लड़ाइ-झगड़ा लेल तनतनाएल छलैक मुदा परवीने मना कऽ देलकै, आ ओही कोठलीमे अपन नव संसार बसा लेलक।

ओकरा मोनमे एहि अन्यायपूर्ण व्यवहारक विरुद्ध विद्रोह तऽ छलैक मुदा ओहि दिशामे डेग उठाबक कोनो बाट नहि भेटि रहल छलैक। ओ अपने सन पीड़ित मुस्लिम महिला सभ लेल किछु करऽ चाहैत छलि।

एक दिन स्कूलसँ घुरलाक बाद ओ अपन घरमे छलि। छोटका भाइ सेहो ओकरे कोठलीमे बैसल बतिआ रहल छलैक कि तखने एकटा स्त्री कम्पाउण्डमे आबिकऽ चिचिआए लगलै। दुनू भाइ-बहिन घरसँ बाहर निकलल।

‘‘अरे करीमा तोँ! एतेक बेकल किए छें?’’ परवीना पुछलकै।

‘‘आपा! हमरा तीन तलाक कहि देलक बजरखसुआ नसीमबा।’’ करीमा चिकरैत कहलकै।

परवीना दुनू भाइ-बहिन अवाक् रहि गेल। किछु पल धरि तऽ दुनू भाइ-बहिन ठकमूड़ी लागल सन ठाढ़े रहल आ करीमा हाकरोस करैत रहलैक। तकर बाद परवीना होश कएलक आ करीमाकेँ भरि पाँज पकड़ि कऽ कोठलीमे अनलक। करीमा कनैत रहलै। परवीना एक गिलास जल देलकै। करीमा नहि पीबि सकलि। ओ कनिते रहलि।

कनिए देरीक बाद करीमाक नैहरसँ गोटे दसटा स्त्री-पुरुष परवीनाक अँगनइमे जुमि गेलैक। भाँति-भाँतिक बात बाजि रहल छल सभ, आ हंगामा करऽ पर बिर्त छल। मुदा एहि हल्लामे परवीना गौर कएलक जे करीमाक माए, मात्र करीमाक ससुरकेँ असर्ध-असर्ध गारि पढ़ने जा रहल छलैक। परवीनाकेँ छगुन्ता लगलै जे ई बुढ़िया जमाएकेँ एकोटा अपशब्द नहि कहि मात्र समधिकेँ किए गरिऔने जा रहल छैक! परवीना एखन किछु नहि बाजलि।

सभ गोटे मिलिकऽ घोंघाउजक बाद अन्तिम रूपसँ निश्चय कएलक जे करीमाक पतिक ऊपर चढ़ाइ कएल जाए। मारि-पीटिकऽ की जेना तेना ओकरा पुनर्विवाह लेल तैयार कएल जाए। सैह नेआर कऽकऽ सभ पुरुष विदा भऽ गेल।

‘‘चाची तोँ दमादक बदला खाली ओकर अब्बाके गारि किए दैत छहिन?’’ पुरुष सभक गेलाक बाद परवीना पुछलकै।

करीमाक माए चुप्पे रहलि। ओ करीमा दिस तकलकै।

‘‘वेहे सरधुआ हमरा शौहरके चढ़ा-बढ़ाकऽ तलाक दिएलक।’’ करीमा कहलकै।

‘‘से की तोँ ओकरा नहि सोहाइ छहिन?’’ परवीना पुछलकै।

‘‘सोहेबै ने किए। कने अधिके सोहाइ हिअइ। हमर खपसुरती ओकरा आँखमे खटकै हइ। ओ हमरा खपसुरतीक पाछू पागल हइ। हम ससुरके ससुर सन मानै हिअइ। से ओकरा बरदास नइ होइ हइ।’’ करीमा कहलकै।

‘‘तकर की माने?’’

‘‘तकर माने जे ओ हमरा संग सूते चाहै हए आ हम इन्कार करै हिऐ। से बेटाके हमर चरित्तर के बारे मे झूठा बदनामी कराकऽ तलाक देआ देलक।’’ करीमा कहलकै।

‘‘एतेक नीच आदमी तऽ देखने ने छलउँ।’’ परवीना बाजि उठलि।

''परवीना आपा! ओकरा नीच नहि कह! ओ हैवान हए। ओकर धन्धे हइ निकाह-हलालाक। ओ रुपया लऽकऽ तलाकशुदा खातुन सब संग हलाला करै हए। जइ तलाकशुदा खातुनके फेरसऽ अपने शौहरसे निकाह करेके फैसला होइ हइ; तकरा इस्लामी कानूनी अनुसार पहिले दोसर मरदसे निकाह कऽकऽ ओकरा संग सुतऽ पड़ै हइ। दोसर मरदक संग जखन देह गिजा लइ छै तखने कहाँदन तलाकशुदा खातुन पाक होइ हइ। आ अपन शौहरके फेनू पेबाक जोगता मिलइ हइ। हमर ससुर वेहे हलालाक धन्धा करै हइ। निकाहक बाद दू-चारि दिन ओइ खातुनक देह भोगिकऽ ओकरा तलाक दऽ दै हइ जाहिसऽ ओ अपन शौहरसऽ फेनू निकाह कऽ लिए। ओइ खातिर ओकरा खूब फीस सेहो मिलइ हइ। नव-नव खातून आ रुपैयाक कमाइ। दुनू फैदा हइ।'' करीमा कहलकै।

''हमरो सभटा बूझल अछि करीमा। हम तऽ अपने तलाकशुदा छी। हँ हम हलाला सन निर्घिन्न काज नइ केलउँ।'' परवीना कहलकै।

''हलाला तोँ किए करबे आपा। तोरा कोनो फेरसऽ अपन पहिलका शौहर लेल पाक होअक हउ! जे मरदक बनाएल फाँसमे पड़ि दोसर मरदबासे देह नोचबिते! तलाकक गलती केलकै मरद तऽ पबित्तर ओ होतै कि महिला? ई कोन अन्याय नियम बनौने हइ ई सब? एकटा बात बुझै छहिन। हमर ससुरके दूटा अपन बीबी हइ। तकर बाद हरेक मास एकाधटा हलाला हाथ लागिए जाइ हइ। ओकरा बारेमे सोरहा हइ जे ओ हलालामे बेइमानी नइ करै हइ। तें दूर-दूर सऽ खातून लऽकऽ लोक अबै हइ हलाला कराबे।'' करीमा कहलकै।

''हलाला तऽ छैहे बेइमानी। अनकर बीबीके भोग करबाक गैरकानूनी बहन्ना। अइमे इमानदारी कथिक।'' परवीना घृणासँ बाजलि।

''एह! हलालामे एक से एक बात होइत रहे हइ आपा। हम तऽ एता दिनसे सबटा सुनैत रहऽ हलिऐ। जदि खातून खपसूरत नइ रहल तऽ एके राति देह भोगलाक बाद तलाक दऽकऽ बैला देलक। जदि तलाकशुदा खातून युवती रहल आ खूब खपसूरत रहल तऽ हलाला वला नवका शौहर ओकर देहक मजा लेबे खातिर तलाक देबे से आनाकानी करे लागल। कतेक रेका-तोकी आ हंगामाक बाद तलाक होए हइ।'' करीमा कहलकै।

''तोहर ससुर एके राति देह-भोग कऽकऽ खातून के बकसि दै छै!'' परवीना पुछलकै।

''हँ, ओ साधारण खातून सब लेल कोनो बेइमानी नइ करऽ हइ। ओकरा तय भेल टाका मिलेके चाही। से मिल गेला पर निकाहक दोसर दिन तलाक दऽकऽ मौगी के बकसि देलक। मुदा कएबेर खपसूरत छौंड़ी के चारि-पाँच दिन आर बेसी रुपयाक नाम पर

अनठौने रहल आ भोगैत रहल। बेसी रुपया लऽकऽ बकसलक। कखनो काल हमर सासु सबहक हंगामा पर छोड़लक।'' करीमा कहलकै।

''तखन इमानदारी की भेलै?''

''यैह जे आन हलाला बेपारी सब अइसे बेसी बेइमान हए।''

''तोरा तलाक देआबऽमे तोरा ससुरके की फैदा छै?''

''पहिल फैदा हइ जे हमरा सजा मिलल। दोसर जे हमरा रहते हमर शौहर हलाला पेशामे शामिल नइ हो सकै रहै। हलाला पेशासे मोटगर आमदनी घरमे अबै हइ। हमरा रहला से तइमे हरमादक हो रहऽ हलै।'' करीमा कहलकै।

तकर बादो किछु काल धरि परवीना-करीमा बतिआइत रहलि। तखन करीमा अपन माएक संग नैहर चलि गेलि।

तकर बाद तीन दिन धरि परवीनकेँ करीमाक कोनो सुनगुन नहि लगलै। जिला मुख्यालयक एहि बस्तीमे मुसलमानक गोटे तीन सौ घर छैक। एहिमे मोसकिलसँ बीसटा ग्रेजुएट हेतैक। महिलाकेँ पढ़बाक तऽ कोनो प्रश्ने ने उठैत छैक। परवीना सन कतहु एकाधटा गोटपगरा। एहि बस्तीमे कखन ककर तलाक हेतै तकर ठेकान नहि। ई आब तेहन कोनो समाचारो नहि रहलै। निकाहक बादे बलजोरी सभ अपन मेहरक रकम माफ करबा लैए आ तखन बीबीकेँ गुलाम जकाँ रखैए। कोनो जिम्मेवारी नहि। जखन चाही तलाक दऽकऽ फराक केलहुँ आ दोसर बीबी लऽ अनलहुँ। हँ, गेंठीमे पुरकस दाम रहबाक चाही।

तेसर दिन संध्याकाल करीमा हहुआएल-फहुआएल परवीना लग पहुँचलि।

''ले पहिले दू घोंट चाह पी ले तखन खिस्सा कहब शुरू करिहें।'' परवीना चाहक कप आगू बढ़बैत बाजलि।

''की चाह पीब गे आपा! हमर ससुर सन नीच आ कुकर्मी इन्सान अइ दुनियामे नइ होतै गे आपा।'' करीमा कानऽ लागलि।

''करीमा तोहर कानब हमरा एकदम पसिन्न नइ अइ। तोँ कानि कऽ अइ बेइमान पतित सबहक सामना नइ कऽ सकै छें। अपन कलेजाके मजगूत कर आ अन्यायक विरुद्ध लड़ि जो। नहि तऽ कीड़ा-फतिंगाक जिनगी जीबैत रह। पहिले ई तऽ कह जे भेलौ की?'' परवीन कहलकै।

''हमर भाइ-बाप सब जाकऽ हंगामा मारि-पीट सभटा केलकै। काल्हि पंचैती होलै। हमर शौहर अपन गलती मानलकै आ फेर से हमरा बीबी बनबऽ लेल तैयार हो गेलै।'' करीमा बाजलि।

''तखन आब परेशानी की छौ?''

''हलाला।''

''फेरसऽ वैह शौहर चाहिऔ तऽ हलालाक अग्नि-कुंड तऽ पार करहिए पड़तौ। पुरुख हमरा मजहबक गंगा नदी छै। ओकरा संग सूति रहला सऽ तलाकसुदा मौगी पाक भऽ जाइ छै। से आब हम सभ अंगेजनहि छी तखन तोरा परेशानी की छौ ?'' परवीना कहलकै।

''फिरसानीक बात कहबौ तऽ तोँ हहाकऽ गिरबे आपा।'' करीमा दुखसँ बाजलि।

''की? से कह ने?''

''हमरा संग हलाला करे खातिर हमर ससुरे अगुताएल हइ।'' करीमा ओढ़नीसँ मुँह झाँपि लेलक।

''अँए! अब्बा हो अब्बा! एतेक नीचता आ पशुता।'' परवीना सेहो घृणासँ मुँह झाँपि लेलक। ओकरा आँखिसँ नोर बहि गेलैक। फेर बाजलि, ''एहन जिनगी सऽ तऽ मौत अच्छा हमरा सब लेल! हमर सबहक पहिचान मात्र देह अइ। जकरा जखन मोन हेतै मजहब-जाति नियमक बहन्ने भोगि लेत। एतेक कानून तऽ छैहे मजहबक, तऽ ई कानून ने किए हइ जे हलाला सन घृणित काज नहि हेतै। से की मर्द आ औरत दुनू वेश्या हइ की!!'' परवीना क्रोधमे छलि।

''हम आब की करू आपा?''

''पहिले ई कह जे एहन प्रश्न कतऽ सऽ उठलै आ अइमे ककर सबहक सहमति छै?''

''प्रस्ताव हमर ससुरक छै। तनिक मनिक हिनछिनक बाद शौहर सेहो मानि गेलै जे घरक बात घरे मे रहि जाएत।'' करीमा कहलकै।

''हलालाक बाद तोँ दुनूक बीबी बनि जएबें करीमा। एकबेर हलालाक नाम पर तोहर ई रूप आ सौन्दर्यक स्वाद लेलाक बाद ओ ससुर तोरा तलाक भले दऽ देतौ मुदा देह भोगब नइ छोड़तौ। तोहर ई मौगा शौहर सेहो यैह कहतौ जे, जेहने एकबेर तेहने अनेक बेर, आ तोँ अपने घरमे दुनूक हाथक खेलौना भऽ जेबें। से सबटा सोचि ले।'' परवीना कहलकै।

''तऽ हमरा की करेके चाही आपा?'' करीमा पुछलकै।

''देख करीमा, सबके अपन लड़ाइ अपने लड़ऽ पड़ै छै। हम तोहर बदला मैदानमे नइ उतरि सकै छी। हम पाछूसऽ मात्र मदति कऽ सकैत छिऔ। तें निर्णय तऽ तोरा स्वयं लेबऽ पड़तौ।'' परवीना साफ कहलकै।

''हमरा लग दोसर कोन उपाय हए आपा? हम तऽ तोरा जकाँ पढ़लि-लिखलि सेहो नइ ने हती।''

''तोहर नैहरक लोकक की कहब छै?''

''की कहब रहतै? हमर नैहर आब भौजी सबहक कब्जामे छै। एखन नवे बात हइ आ घुरि जेबाक आशा हइ तऽ सब ओहो-हो आहा-हा करैअ। जखने बूझेमे एतै जे हम सबदिना खातिर बथा गेलिऐ तऽ दुर्गति आ लू-लू थू-थू शुरू कऽ देत।'' करीमा बाजलि।

''हलालाक मादे की कहब छौ तोरा भाइ सबहक? ओइ दिन तऽ बड़ फड़कैत रहौ। आ माए की कहै छौ? ओहो ओइ दिन तोरा ससुरके बड़ गरिअबैत रहौ।'' परवीन पुछलकै।

''आब सब एके पक्षमे हइ जे घरक इज्जति घरेमे रहतै। एहे खातिर ससुरे से हलाला करबा ले।'' करीमा कनैत बाजलि।

''तोहर अपन मोन की छौ?'' परवीना पुछलकै

''हमरो जे वेहे मोन रहैत तऽ तोरा लग किए दौड़िती? गलती केलकै नसीमबा तऽ नापाक हम कोना भऽ गेली? हमरा हलालासऽ बचा ले आपा। ई कुकरम हमरासे नइ सपरतौ।'' करीमा कनैत बाजलि।

''से बचाएब ओतेक आसान नइ छौ करीमा। तैओ कह तऽ जे तोहर मेहरक रकम कतेक छौ?''

''मेहरक रकम तऽ नसीमबा पहिले राति हमरा से माफ करबा लेले रहे। कहलक जे तोरा सन खपसुरत बीबीके कथुक डर थोड़बो हौ। हमहूँ ओकर तारीफक तरीमे मेहर माफ कऽ देलिअइ।'' करीमा बाजलि।

''आब ले दुनू हाथे। हम सभ मौगी बेबकूफ छी। जहाँ अन्तरंग समयमे पुरुख कने प्रशंसा कऽ देलक की फूलिकऽ कुप्पा भऽ जाइ छी आ शौहर जतऽ कहैए ओतहि दसखत कऽ दइ छिअइ।'' परवीना तामसमे बाजलि।

करीमा मूड़ी झुकौने बैसल रहलि।

''तोरा लग विकल्प आब बेसी नइ छौ। पहिल जे, परिवारक बात मानिकऽ हलाला-शौहर आ निकाही-शौहर दुनूक खेलौना बनिकऽ घर घुरि जो। दोसर जे तोँ बड़ सुन्नरि छें। एकोटा बच्चा नइ भेलौए। तें शौहर भेटब कठिन नइ छौ। अही टाउनमे दोसर निकाह कऽ ले। आ तेसर विकल्प छौ जे...।'' परवीन तेसर नहि बाजलि।

करीमा मूड़ी ऊपर कएलक। बाजलि, ''तेसर की उपाय अछि से बोलै ने आपा ?''

''तोँ हमरा संग आबि जो। हम दुनू गोटे मिलिकऽ एकटा एन.जी.ओ. खोलब। तलाकशुदा आ अन्य मजबूर मुस्लिम महिलाक मदति करबै। जे नरक हमसब भोगि रहल छी तइसऽ निकासक बाट ताकब। घरे घर औरत सबसऽ बात करब। ओकर सबहक सोच बदलब। ओकर भीतरक शक्तिसऽ ओकरा परिचय करेबै। अपन पएर पर

ठाढ़ होअऽक बाट देखबै। ई जिनगी आब शोषित-पीड़ित मुस्लिम महिलाक सेवामे लगा देब। अन्यायक विरुद्ध आवाज उठाबक हिम्मति पैदा करबै ओकरा सबहक दिलमे।'' परवीना कहलकै।

''हलालाक सवाल ऐलासे हमरो नजर खुल गेल हए आपा! हलालासे मुस्लिम औरतके बचाबे खातिर हम अपन जिनगी कुरबान कऽ देब आपा। हम ने अपन हलाला करेबौ ने कोनो दोसर औरतके कराबऽ देबै आपा। पहिले हमरा ओइ हलालासे बचा ले आपा! से ओइ खातिर हम किछु करब आपा।'' करीमा अपन दृढ़ता देखैलक।

परवीना ओकर दृढ़ता भरल बात सुनि चकित भऽ गेलि। सदाचार आ सदगुण कोनो उच्च शिक्षाक मोहताज नहि, परवीना सोचलक।

''लेकिन सनस्था खोले आ चलाबेमे पैसा के खरची तऽ बड्ड हेतौ! से कतऽ सऽ औतौ आपा? हमरा लगमे एको पैसा नइ हउ।'' करीमा संदेह कएने छलि।

''हलालासऽ तोहर विद्रोह अइ संस्थाक असली पूँजी हेतै करीमा। तोहर ई हिम्मति आ चरित्र जइ संस्था लग रहतै ओकरा आर किछु नइ चाही। केहनो परिवर्तन ओही पूँजीसऽ भऽ सकैए। तौँ हमरो एकटा बाट देखा देलें करीमा।'' परवीना ओकरा अपन गला लगा लेलक।

''एखन हमरा पाँच हजार रुपया माहवारी भेटैए। एहिमे दुनू गोटेक खर्च निकलि जाएत। हमरा स्कूलमे दाइक जगह खाली हेतै तऽ कि कोनो आने स्कूलमे दाइ बनिकऽ तौँ अपन जोगर कमा लेबें। एन.जी.ओ. बनलाक बाद चन्दाक रुपया भेटतै। बहुत महिला भारतमे छै जे एहन साहसपूर्ण काज लेल धन देतै। जरूरति छै इमानदारी सऽ काज शुरू कऽ देबाक।'' परवीना कहलकै।

परवीनाक अनुमान एकदम सही साबित भेलैक। थोड़बे प्रचार-प्रसार भेला पर महिला सभ धर्रोहि लगा देलकै। जे सभ मजबूरीमे तलाक आ हलालाक जहन्नुम झेलने छल से सभ तऽ एन.जी.ओ.सँ जुड़बे कएल जे आनो बुझनुक महिला सभ एहिसँ जुड़लि। किछुए दिनमे ई मुस्लिम महिला संगठन नामी भऽ गेल। एखन आब एहि टाउनमे तीन तलाक देबऽसँ पहिले तीस बेर सोचऽ पड़ैत छैक लोककेँ। हलालाक धन्धा मन्दा भेल जाइत छैक। धरना-प्रदर्शन, हंगामा पुलिस ओ अदालत सभक सामना करऽ पड़ैत छैक। तें सभ पुरुष आब हदसल रहैए। महिला सभकेँ विभिन्न तरहक प्रशिक्षण देआकऽ अपन रोजगार ठाढ़ करबाक व्यवस्था सेहो कएने अछि संस्था। बेसी महिला सिलाइ मशीन चलाबक प्रशिक्षण लऽकऽ, बैंक लोनसँ मशीन किनलक आ कपड़ा सिबिकऽ जीवन यापन करैए। एन.जी.ओ. एकटा मुस्लिम व्यवसायीसँ अनुबंध कऽकऽ कपड़ा सिबाक ठेका लैत अछि। सभ महिला मिलिकऽ ठेकाक कपड़ा सिबि पाइ कमाइत अछि। करीमा ओकर सभक मेट अछि आ परवीना बाहरी कानूनी आ पब्लिक

रिलेशन देखैए।

साँझमे परवीना आ करीमा दुनू संगे डा. अहमदक क्लिनिक पहुँचलि। डाक्टर एकरे सभक प्रतीक्षामे छलाह। मरीज देखब बीचेमे रोकि ओहि दुनूकेँ बजौलनि। ''सभटा रिपोर्ट आबि गेल छै। रक्त अल्पता, कमजोरी आदि तऽ छैके जे एकटा गम्भीर बिमारी दिस सेहो ई रिपोर्ट संकेत कऽ रहल छै। तकर फैसला अइ टाउनमे नइ भऽ सकैए। एकर जाँच लेल पटना लऽ जाए पड़त।''

परवीना आ करीमा एक दोसरक मुँह देखऽ लागलि। ओ सभ एकटा बेसहाराकेँ मदति करबाक लेल तैयार भेल छलि मुदा तकर एकटा सीमा छैक। ओ दुनू आब एहि महिलाक सम्पूर्ण भार आ दायित्व तऽ अपन ऊपर नहि लऽ सकैत अछि। ताहूमे ई महिला अनजान छैक।

''आब की कएल जाए डाक्टर साहेब? हमर सभक तऽ एकटा सीमा अछि। ओइसऽ बेसी दूर तऽ हम नइ जा सकै छी। दोसर दिस अइ बेसहारा-बेमार औरतके सड़क पर मरबा लेल सेहो नइ छोड़ि सकै छिऐ।'' परवीना बाजलि।

''अहाँ सब कोन ऑथरिटी सऽ एकरा कतहु लऽ जेबइ? कानूनी अड़चन तऽ सेहो छै। जँ एकरा किछु भऽ जेतै आ काल्हि एकर केओ उत्तराधिकारी उगि अबैक तऽ अनेक तरहक आरोप लगा सकैए।'' डाक्टर कहलखिन।

''तऽ की कैल जाए ?''

''अहाँ सभ शोषित-पीड़ित मुस्लिम महिला लेल एतेक किछु करै छी तऽ एकरो लेल एतेक काज करू जे एकर पहचान ताकि दिऔ। ओ एखनो बाजऽ जोगर होशमे नइ छै। अहाँ सबहक नेटवर्क अइ टाउनमे सबसऽ नमहर अछि। सबसऽ पता लगाउ जे ई छै के! तकर बादे कोनो निर्णय लऽ सकब जे की करी।'' डाक्टर अहमद कहलखिन।

''ठीक सर! काल्हिसऽ हम सब खोजमे लागि जाइ छी। ओ अवस्से लगे पासक छै। ओ सड़क पर एलै कोना! केओ आबिकऽ फेकि गेल रहितै तऽ गहनाक मोटरी बाँचल नइ रहितै। तकर माने जे ई अपने घुसुकि कऽ सड़क तक आएल रहै। ई अइ हालतिमे बेसी दूर घुसकुनिया नइ काटि सकैए। तें हमर अन्दाज अइ जे ई लगेपासक हए। काल्हि हम पाँच-सात महिलाके लगाकऽ एक-एकटा घर छानि लेबै। आजुक राति एकरा अहाँ अपन क्लिनिकमे रहऽ दिऔ।'' परवीना आग्रह करैत बाजलि।

''अवश्य रहओ, मुदा अहाँ सबमे सऽ एकटा महिला एतऽ अवश्य रहिऔ।'' डाक्टर अहमद कहलखिन।

परवीना आ करीमा क्लिनिकसँ सोझे अपन कार्यालय पहुँचलि। कार्यालयमे छः-सात टा स्वयंसेविका तखनो बैसल छलैक।

‘‘की बात हए आपा! अहाँ सब एतेक फिरसान किए छी! की भेलै?’’ ओ सभ बाजि उठलि।

परवीना सभटा खिस्सा कहि सुनौलकै। हँ, गहनाक मोटरीवला बात नहि कहलकै। ओ एकर प्रचार करऽ नहि चाहैत छलि।

‘‘ओ देखऽमे केहन हए आपा?’’ रशीदा पुछलकै।

‘‘ओ तेहन बिमार हए जे ओकर रूप वर्णन नइ कैल जा सकै हए। देखले पर बुझि सकबें। मुदा से किए?’’ करीमा बाजलि।

‘‘हमरा टोलमे एकटा रहस्यमयी औरत रहै छलै। देखेमे जन्नतक हूर सन मुदा बेमारीसऽ भरल। कहीँ वेहे ने होइ।’’ रशीदा कहलकै।

परवीना ओकर बात सुनिते रशीदाकेँ लऽकऽ क्लिनिक विदा भऽ गेलि। ओकरा संग एकटा छोड़ि सभ विदा भऽ गेलि।

रशीदा ओकरा देखिते चिन्हि गेलैक। बाजलि, ‘‘आपा ई तऽ वैह महिला हए। एकर अपन घर हए हमरा मोहल्लामे। ओइठाम बेसी लोक बाहरसऽ आके भाड़ामे रहै हए। तें एकरा से बेसी जान-पहिचान लोकक नइ हए। ई अपन घरेमे बन्न रहै हए बराबरि। कमसे कम हम जहियासे ओइ मोहल्लामे एली एकरा अहिना देखै छिऐ।’’

‘‘रशीदा तोँ एकर घर देखा।’’ रशीदाक बात सुनि करीमा तुरत विदा होइत बाजलि। ओकरे संग सभ चलि देलक।

घर एक महला छलै। मुख्य सड़कसँ भीतर जाए वला सड़क पर दोसरे मकान। घरक आगू एकटा नमहर कम्पाउन्ड छलै। कम्पाउन्ड घेरल तऽ छलैक मुदा गेट टूटल छलैक। करीमा कम्पाउन्डक भीतर गेलि। घरक बाहरी गेट पर ताला पड़ल छलैक। परवीना बगलक खिड़की सभकेँ धकेलिकऽ खोलऽ चाहलक, मुदा एकोटा खिड़की नहि खुजलै। परवीना सोचलक जे अफरीदा घरसँ निकलबाक समय एतेक होशमे छलि जे घर नीक जकाँ बन्न कऽ लेलक।

‘‘रशीदा तोँ एकर कोनो रिश्तेदारके जनैत छें कि अबैत-जाइत देखने छें?’’ परवीना पुछलकै।

‘‘रिश्तेदार तऽ नइ मुदा एकरा घरमे काजवाली दाइ मालूम हए। ओ हमर डेराक पछुआरमे रहइ हए।’’ रशीदा बाजलि।

परवीना-करीमा सभ गोटे रशीदाक डेरा पर बैसलि आ रशीदा दाइकेँ बजा अनलकै।

‘‘हम अफरीदा आपाक घरमे छ: माससे काज करै छी। ओ सब दिन बिमारे रहै हए। हम ओकरा ओइठाँ ककरो कहिओ अबैत-जाइत नइ देखै छिऐ। दोकानसे सौदा सेहो हमही आनि दै छिअइ। बड़ नीक हए अफरीदा आपा। अपना बारेमे कखनो कुच्छो

नइ बोलै हए। दिनभर पड़ल अल्ला-अल्ला करैत रहै हए।'' दाइ कहलकै।

''अफरीदा लग मोबाइल हए?''

''नइ। पहिले रहै मुदा आब नइ हए?''

''पुरना मोबाइल तोरा देखल हौ?''

''नइ! हमरा मोबाइल तऽ नइ देखल हए मुदा एकदिन एकगोटाके फोन करे लेल कहने रहे, से नम्मर हए।'' दाइ अपन मोबाइलमे नम्मर तकैत कहलकै।

दाइ जे नम्मर देलकै से वैह नम्मर छलैक जे अफरीदाक कापीमे भेटल छलैक।

''फोन पर तोरा की कहबा लेल कहने छलौ अफरीदा?'' परवीना पुछलकै।

''ओ बुझबै छलै ओकरा, लेकिन ओ मना कऽ देलकै। कहलकै जे हमरा सबके आब ओकरासे कोनो मतलब नइ। ने कोनो रिश्ता।'' दाइ कहलकै।

''आर कोनो रिश्तेदार कहबे?''

''नइ।''

''तौँ ओइ नम्मर पर फोन कऽकऽ ओकर पता पुछहिन। कहिन जे अफरीदा आपा एकटा झोड़ी अहाँ ओइठाँ पहुँचाबऽ लेल देने रहे हास्पीटल जाइ से पहिले।'' परवीना कहलकै।

सभकेँ हँसी लगलै। दाइ सेहो मुस्किआएलि आ फोन लगबऽ लागलि।

''हलो! के?''

''हम अफरीदा आपाक दाइ बोलै छिऐ।'' दाइ बाजलि।

''हम एकबेर कहि देलिऔ जे हमरा अफरीदासऽ आब कोनो रिश्ता नइ अइ। तहन तौँ...।'' ओमहरसँ कहलकै।

''हम रिश्ता जोड़ऽ नइ बोलैत रही। अफरीदा दीदी हॉस्पीटल जाइसे पहिले एकटा बन्न बैग देलक जे अहाँ लग दऽ आबी। से कतऽ पहुँचा दी से कहू।'' दाइ झूठ बाजलि।

ओमहरसँ कने काल कोनो आवाज नइ अएलै। बुझेलै जेना ओ महिला ककरोसँ विमर्श कऽ रहल छैक।

''ठीक छै! काल्हि नौ बजे हमरा घर पर आबिकऽ दऽ जो।'' ओमहरसँ महिला कहलकै।

''जी आपा। पता कहू।'' दाइ कहलकै। मोबाइल पर ओ पता कहने गेलै। दाइ हूँ-हूँ बजने गेलि आ परवीना पता नोट कऽ लेलक। महिलाक नाम जाहिरा छलैक।

दोसर दिन परवीना, करीमा आ रशीदा ठीक नौ बजे शहरक दोसर छोर पर अवस्थित एकटा पॉश कॉलोनीमे पहुँचलि। पुछिकऽ जाहिराक घर पर जुमि गेलि। घरक बनावट आ सफाईसँ बुझा रहल छलैक जे सत्ते पॉश कॉलोनीक घर छैक। जाहिरा घर खोलि हिन्दीमे पुछलकै, ''कहू?''

''हमरा अहाँसऽ किछु बात करबाक अइ।'' परवीना कहलकै।

''कोन बारेमे?''

''यदि बैसिकऽ बात करी तऽ नीक।''

''ठीक छै! आउ।'' जाहिरा बाट दैत बाजलि।

''हम परसू सेहो अहाँके फोन केने छलउँ।'' परवीना कहलकै।

''हमरा नइ मोन अइ। कथी लेल?''

''अफरीदाक बारेमे।'' परवीना कहलकै।

अफरीदाक नाम सुनिते जाहिराक मोन तीत भऽ गेलै। चेहराक रंग सेहो बदरंग भऽ गेलैक। ''हम कहलौं ने जे ओकरासऽ हमर आब कोनो रिश्ता नइ अइ। तखन एना खेहारक की माने?'' जाहिरा ओहने तीत बात बाजलि।

''अहाँक तऽ आब कोनो रिश्ता नहि हए। अर्थात् पहिले रिश्ता रहे। लेकिन हमरा सबहक तऽ ओकरासे इन्सानियत छोड़ि आर कोनो रिश्ता कहिओ नइ रहे। तखनो ओइ बेहोश आ लाचार महिलाक मदति हम सब इन्सानियत के नाते कऽ रहल छिऐ। तखन कहिओ रिश्ता राखेबाली एतेक क्रूर कोना हो सकैए जे अन्तिम साँस लऽ रहल रिश्तेदारक बारेमे बात धरि करबा लेल तैयार नइ रहत।'' करीमा तमसाकऽ कहलकै।

''एकटा बात बूझि लिअ जाहिराजी! हम सभ अहाँ पर कोनो आर्थिक भार कि सेवाक उत्तरदायित्व नइ लादऽ चाहै छी। अहाँ तकर एकोरत्ती चिन्ता नइ करू। मात्र अफरीदाक परिचय आ इतिहास कहू। कनिञो नइ डेराउ। हम अपन संगठन दिससँ ओहि लाचार महिलाक पूरा देखभाल करबै आ खर्च करबै।'' परवीना साफ बोलीमे बाजलि।

जाहिरा उठिकऽ घरक भीतर गेलि। ओकरा संग एकटा बूढ़ी ड्राईंग रूममे अएलै। परवीना आ रशीदा ओकर अभिवादन कएलक।

''तौँ सब की जानऽ चाहै छें अफरीदाक मादे। हमरा कोन काज ओकरासऽ। ओ मरओ कि जीबओ। जीबिकऽ तऽ खनदानके कलंके लगबैत रहलि। आब मरि जाएत तऽ जहान हल्लुक भऽ जेतै।'' बूढ़ीक भाषा बड़ साफ छलैक।

तखन परवीना बूढ़ीकेँ सभटा खेढ़ा कहलकै। संगे कहलकै, ''हम सभ मात्र इन्सानियतक कारणे मदति कऽ रहल छिऐ। हमरा मात्र ओकरा बारेमे बुझबाक अछि। सेवा हम सभ मरऽ दिन धरि कऽ देबै। शोषित-पीड़ित लाचार मुस्लिम महिलाक मदति आ सेवा हमर संगठनक उद्देश्य अछि। तें कहू ओकर इतिहास। कोनो तरहक भारक चिन्ता नइ करू।''

''हम तोहर संगठन के जनैत छी परवीना। बड़ खुशी अछि जे तौँ सब अपन जीनगीक आनन्दसऽ ऊपर उठिकऽ अनकर सेवा करै छें। तोरा सबहक कारण दबल मुस्लिम महिला सबहक मुँहमे बोली एलैए। मर्द सभ तलाक कि आन कोनो अत्याचार

करऽ सऽ पहिले सौ बेर सोचैए, जे के ई धरना, प्रदर्शन आ पुलिसक सामना करत। बड़ नीक काज करै छें तोँ सब।'' बूढ़ी बाजलि।

''तखन कहू हमरा अफरीदाक बारेमे।'' परवीना हाथ जोड़िकऽ कहलकै।

''तोरामे करीमा के छौ?'' बूढ़ी पुछलकै।

''हम छी करीमा दादीजान।'' करीमा लग जाकऽ बाजलि।

बूढ़ी उठिकऽ करीमाके अपन बाँहिमे लऽकऽ चूमि लेलकै। ''तोँ बहादुर लड़की छें करीमा। हमरा तोहर दर्द आ संघर्ष सबटा बूझल अइ। तोरा देखेके बड्ड मोन रहे। हलालाक प्रति लोकमे घृणा आ विद्रोह अइ नग्गरमे तोरे त्यागक कारण पैदा भेलै।''

बूढ़ीक अनुराग सुनि करीमा कानऽ लागलि।

बूढ़ी करीमाक माथ हँसोथैत कहऽ लगलै, ''अफरीदा हमर अपन भतीजी अइ। हमर निकाह हमर अब्बा कराकऽ मरल छला। हमर भाइ शाहिद बचपनेसऽ चोरनराह आ चरित्रहीन रहे। निकाह सेहो एकटा ओहने मौगी सऽ पढ़ि लेलक। ओ मौगी छलै बड़ खपसुरत। एकेटा बेटी भेलै अफरीदा। ओ खपसुरतीमे अपन माइओक कान कटै छलै। बाप ओकरा अफरीदा आ माए नूरजहाँ कहै छलै। शाहिद बड्ड खराप लोक रहे आ खरापे लोकक संगति रहै। अफरीदा जखन चौदह बरखक भेलै तखने शाहिदके एकटा एजेन्टक मारफत हैदराबादक एक एजेन्सीसऽ सम्पर्क भऽ गेलै। चौदहे बरखक उमेरमे ओ अफरीदा के हैदराबाद लऽ गेल। खूब बेसीकऽ रुपया लऽकऽ अफरीदा के अरबक शेखक संग नकली निकाह करा देलकै। शेख दू मास हिन्दोस्तानमे रहल। ताधरि अफरीदाक देहके नोचिकऽ मजा लेलक आ जएबा काल ढेर रुपैयाक संग तलाक दऽ देलकै। शाहिद बेटी लऽकऽ घर घुरि आएल। अफरीदा ऊपरसऽ ओहिना रहलि। ककरो किछु बूझऽमे नइ अएलै।

तकर बाद शाहिद दुनू बेकती बेटीक देहक कमाइसऽ ऐश करऽ लागल। एकबेर मोन पड़कि गेलै तऽ सिलसिला चालू भऽ गेलै। एक शेखक बाद दोसर शेख आ तखन तेसर शेख संग निकाह तलाक आ रुपयाक खेल चलऽ लगलै। शुरूमे अफरीदाके खराप लगलै। मुदा अफरात धन अबैत देखि ओहो ओहि घृणित खेलक मजा लेबऽ लागलि। ओ सब पहिले बुझलकै जे लोक नइ बूझत, मुदा आइ-काल्हि कोनो बात नुकाकऽ राखब बड़ मोसकिल छै। जइ शहरमे हमर अब्बाक घर रहै ओ बड़ छोट कस्बा रहै। ओइठाँ ततेक बदनामी भेलै जे शाहिदके ओइठाम रहब मोसकिल भऽ गेलै। ओ ओइ घरके भाड़ा पर लगाकऽ एतऽ आबि गेल। रुपयाक कमी तऽ छलैके नइ तें घर कीनि कऽ बसि गेल। सोलह बरस धरि अफरीदा निकाह-तलाकक पेशामे कमाइत रहलि। बेसी शेखक हाथ बिकाइत-बिकाइत तीस-बतीसे बरखक उमेरमे जवानी ढलऽ लगलै। ताहि पर मोन सेहो खराप रहऽ लगलै। हम सब ओकर धन्धासऽ दुखी भऽकऽ शाहिदक जीबितेमे रिश्ता समाप्त कऽ लेलउँ। ओ सब हमर केओ नइ अछि।

अफरीदाक बिमारी की छै तकर पता तऽ नइ अइ, मुदा ओ गोटे पाँच-छः सालसऽ इलाज करा रहल अछि। बिमारी कोनो गन्दे हेतै। जे, सब दिन शौहर बदलत तकर यैह गति हेतै। आब एतेक धन लऽकऽ की करत?'' बूढ़ी बाजिकऽ कानऽ लागलि।

पुतोहु आबिकऽ सभकेँ चाह परसि देलकै। परवीना, करीमा आ रशीदाकेँ ठकमूड़ी लागि गेलैक। चुपचाप चाह पीबऽ लागलि।

''आब की करबाक चाही! अफरीदा कतबो कुकर्म कएने होए मुदा अइ लेल वैह टा दोखी नइ अइ। ओकरा अइ जहन्नुममे धकेलऽबला ओकर अब्बा छलै। मुस्लिम औरतक लेल, ने अब्बा, ने भाइ, ने शौहर, ने धर्म, ने समाज। हमर सबहक सब दुख अपमान आ जलालतक भागी मात्र ई मुस्लिम पुरुख वर्ग अइ। चौदह बरखक उमेरमे ओकरा बुद्धिए कते छल हेतै? एकबेर जखन अब्बा ओइ थालमे फँसा देलकै तऽ ओकरा निकलक राह नइ भेटल हेतै। अफरीदा सेहो असलमे शोषिते-पीड़ित अइ। अत्याचार आ पुरुषक लोभक मारलि अइ। अहाँ सब जे करी से करू, मुदा हम अफरीदाके असहाय नइ छोड़बै। जँ छोड़ि देबै तऽ हमर संगठनक मूल उद्‌देश्य गलत भऽ जाएत। अफरीदाके हम करुणा, दया आ बराबरीक नजरि सऽ मदति करबै। अहाँ सब ओकर त्याग तऽ कऽ देलिऐ, मुदा ओकर विवशता आ अब्बाक अत्याचार पर ध्यान नइ देलिऐ। आबो अहाँ ओकरे दोखी मानै छिअइ। अहाँ सब सेहो औरत छी। कतबो बड़का लोक होइ मुदा औरत तऽ छी! दोसर असहाय औरत सऽ एना मुँह नहि मोड़ू। ताहूमे अनाथ भतीजी सऽ तऽ...।'' परवीना बाजि कऽ उठि गेलि। ओकरा सभकेँ धन्यवाद कहि घुरि गेलि।

अफरीदाक बिमारी एड्‌स निकललै। सेहो अन्तिम स्टेजमे। लाइलाज बिमारीक संग अफरीदा अपन घर घुरि आएलि। परवीना-करीमाक संस्था ओकरा गोद लऽ लेलकै। सेवा करऽ लगलै। अफरीदाक कहला पर संस्थाक कार्यालय भाड़ाक घरसँ ओकरे घरमे शिफ्ट कऽ लेल गेलैक। अफरीदाकेँ सेवामे सुविधा भऽ गेलैक। अफरीदा अपन सभ सम्पत्ति एहि रजिस्टर्ड संस्थाकेँ दान कऽ देबाक कागज बना लेने अछि। एखनो पुरुखकेँ कलंकक दाग मोन पाड़ैत ओ जीविते अछि। मोन होअए तऽ देखि आउ एक दिन। तखन ई बुझबामे आओत जे स्त्री जातिक उपयोग हम सभ कतेक तरहसँ करैत आबि रहल छी।





लघुकथा

लघुकथा संग्रह : भाइरस
लेखक : ज्ञानवर्द्धन कंठ

फगुनियाँक फगुआ

बच्चेसँ फगुनियाँ फगुआ-दिन भोरेसँ नुका जाइत छल। हुड़दंगी संगी सभक टोली तैयो ओकरा ताकिये लैक। पहिने पोल्हा क' घरसँ निकलै लेल कहैक। तखन खिड़की आ केबाड़क दोगसँ पिचकारी ल' क' रंग फेकैक। ताहिसँ नहि होइ त' रोशनदानदने सौंसे घर रंग पटा दैक। मुदा फगुनियाँ केबाड़क छिटकिन्नी किन्हुँ नहि खोलय। नतीजा होइक जे साँझूपहरो जँ ओ कतहु धरा-पकड़ा जाय त' छौंड़ा सभ सभटा ओलि सधा क' रहैक।

एहिबेरि फेर पुरनका टोली गाममे जुटल अछि। नओ बरीसपर फगुआमे फगुनियाँ काल्हि सँझुका बससँ गाम आयल छल। कोनटाबला घर भिनसरेसँ बन्न क' क' पड़ल अछि। ई भनक हुड़दंगी-दलकेँ लागि गेलैक। पूरा प्लान बना सभ पहुँचि गेलैक। डंफ पीटय लगलैक।

सोमन बाजल— "रौ फगुनियाँ ! बाहर निकल सोझ मोने। आइ नहि मानबौ हम सभ।"

फगुनियाँ— "रौ, मोन खराप अछि। खोंखी होइए।"

तिलका— "कोनो बहन्ना चलैबला नहि छौ। बाहर निकल। सा रा रा रा ..."

सभ— ''सा रा रा रा...''

फगुनियाँ— "रौ, सत्ते कहै छियौ, बड्ड बोखार भ' गेल अछि। हमरा छोड़ि दे।"

लूटन— “अच्छा,केबाड़ खोल ने पहिने। सभटा बोखार उतारि दै छियौक। डाक्टरसँ भेँट करा दैत छियौक।”

फगुनियाँ— “रौ,आइ कोनो डाक्टर क्लिनिक नहि खोलने छैक। नहि त' हम ओत्तहि रहितियौक।”

उत्तिम— “रौ फगुनियाँ! नओ सालपर गाममे धरेलें अछि आ फगुआक ड'र एखनो नहि गेलौक अछि जे सर्दी-बोखारक बहन्ना केने छें ? बाहर निकल पहिने।”

फगुनियाँ— “हे हमरा छोड़ि दे भाय। जीयब त' खेलब फगुआ तोरा सभक संगे।”

सोमन— “नहि रौ, तों फेर दिल्ली भागि जेबें त' कहिया धरेबें ? खोल घर,खोल।”

फगुनियाँ— “दू सालसँ दिल्ली कहाँ रहै छियैक ?”

उत्तिम— “त' कत' काज करै छही ?”

फगुनियाँ— “हम त' रेजामे काज करै छलियैक ने ? बुसानमे। चीन...”

ई कहि फगुनियाँ केबाड़ खोलि जोरसँ उकासी केलक। हुड़दंगी सभ पड़ा गेलैक। फगुनियाँ हँसय लागल।

कोरोनासँ बचाव

भगलूक कनियाँ रौदमे बिछौना-चद्दरि सुखाबय गेल रहैक। ओकर ननकिरबा रोजे राति क' मूति दै छैक। खर्राइन महँकै छलैक। सुरतिया दूनू परानी सड़ल गोबरक गोइठा ठोकि रहल छलैक। ककरो नाक नहि देल जा रहल छलैक। भुट्टा नदी फिरि क' एलैक आ एक मुट्ठी माटि ल' क' कलपर हाथ मटियाबैत रहैक। छौड़ी सभ गोटरस खेलाइत रहैक। ओही ठाम सुकनाक बच्चा लघ्घी केने ठाढ़ रहैक। भरिसक पैंटेमे नदी फिरने रहैक। लगेदने जहुरिया डोमक ढेलबा-ढेलबी एक हेंज सुग्गर लेने चराब' जा रहल छलैक। जकिन्दर खा क' दूरापर एलैक आ बापक तौनी कन्हासँ घीचि हाथ-मुँह पोछैत रहैक। तखने बड़का मेला-तमाशा लागि गेलैक। नओ गोटेक दल लाउड-स्पीकर लेने आबि धमकलैक। सौंसे गाम ओकरा घेरने जमा भ' गेलैक। एक गोटे माइकपर बाजय लगलैक—

“अहाँ सभकेँ बूझल नहि हैत जे कतेक बड़का संकट दुनियाँमे आबि गेलैक अछि। एकटा बीमारी तेहन ने पसरि गेलैक अछि जकर चपेटमे आबि कतेको मनुक्ख नोकसान भ' रहल छैक। ओकर कोनो कारगर इलाज नहि भ' पाबि रहल छैक। ओहि

रोगक कारण छैक एकटा सूक्ष्मजीव जे आँखिसँ देखबामे नहि अबै छैक। ओकर नाम छैक-कोरोना विषाणु। कोरोना भाइरस। अपनो देशमे चारि गोटे एकर कारणें जान गमा देलक अछि।

एहि रोगसँ बचबाक लेल साफ-सफाइ रखै जाउ। एकठाम बैसारसँ बचू। लोकसँ लोक हटि क' रहय। घरेमे रहू। अहाँ सभ अखबार नहि पढ़ै छी ? हमर हाथ दिस ताकू। एहि अखबारमे की लिखलकैक अछि ? बाहरी चीजकेँ छूबैसँ बचू। अपनो मुँह-कान बेरि-बेरि नहि छूबू। हाथकेँ साबुनसँ बरोबरि साफ करू।"

तदुपरांत जगसँ पानि ढारि चारि गोटे साबुन ल' क' हाथ धोलनि। फोटो झिकबौलनि। जन-जागृति लेल दल बिचला टोल दिस प्रस्थान केलक। छौड़ी सभ गोटरस खेलाय लागल। सुरतिया दूनू परानी गोइठा ठोकय लागल। ओमहरसँ सुग्गर चराकय जहुरियाक दूनू टेल घूमल आबि रहल छल। सभ केओ अपन-अपन काजमे लागि गेल। दलानपर तशखेली सेहो हुअ लागल।

मुनिलालजीक निश्चय

'जनता कर्फ्यू'क नाम सुनिते मुनिलालजी आँखि मूनि माथ पकड़ि लेलनि। शंकरजी पुछलथिन—

"किछु होइए भाइ ? '

मुनिलालजी मूड़ी डोला नकियाइत बजलाह — "नञ, किछु नञ।"

शंकरजी— "नञ यौ,अहाँ कहब त' हम मानि लेब ? बाजू, की बात थिकैक ? किएक सोचमे पड़ल छी ? मित्रसँ बात नञ छुपाउ। भ' सकैए जे समस्याक निदान निकलि जाय।"

बहुत जोर देलापर इमहर-ओमहर ताकि मुनिलालजी नहूँ-नहूँ बजलाह— "की कहू भाइ, काल्हि भरिदिन घरेपर रह' पड़त। कनियाँ बड्ड खटाओत हमरा। झोल झड़बाओत,आँटा सनबाओत, भानस बनबाओत आ जे-जे काज फुरेतैक,सभटा करबाओत। एहिसँ ऑफिसे नीक। तेँ कोंढ़-करेज थर-थर काँपि रहल अछि।"

शंकरजी बुझौलथिन— "धू: मरदे!एतबी लेल अहाँ घबड़ा गेलहुँ ? सुनू। जे कहै छी, से ध्यानसँ सुनू। अहाँ शुरुहेसँ कड़ा रूप केने जाउ। तनल रहब। जे बाजब, से कड़किये क'। जाइते हुकुम चलाबय लागब। किछु अढ़ेबाक अवसरे नहि देब। देखब,केहनो बमचट कनियाँ हेतीह, पाछाँ-पाछाँ नांगरि डोलब' लगतीह। ई मंतर हमरा आजमायल अछि।"

मुनिलालजी गीरह बान्हि लेलनि। सूति उठि रोबसँ फरमौलनि—

“हय, कत' छी ? मुँह की तकै छी ? जाउ, बेड-टी बना क' आनू। जल्दी करू।”

आगाँ सेहो तहिना हुकुम दैत गेलथिन। जेना,

— “ब्रश आनू। मंजन लाउ।”

— “पानि गरम करू।”

— “डोलमे पानि भरि क' बाथरूममे राखू।”

— “पहिरना कपड़ा निकालू। अरगनीपर राखू। गमछा इमहर दिय।” आदि-आदि।

हुकुमक तामील होइत गेलनि। मुनिलालजी भितरे-भीतर प्रसन्न छलाह,मुदा चेहरा तमतमेने छलाह। मोन बढ़ल रहबे करनि।

जोरसँ बजलाह— “हय, भानस भेल ? नञ ? जाउ, जल्दी भानस-भात बनाउ ग'।”

कनियाँ कहलथिन— “आ नञ बनायब त' अहाँ की क' लेब ? बाजू ! बजै ने छी किएक ? मुँहमे जाबी लागि गेल ? बाजू,की क' लेब अहाँ ? ”

मुनिलालजी— ‘‘तखन की करब ? हम अपने भनसा क' लेबैक।”

लॉकडाउन

लुट्टी'का दिने-देखार आँटा-चाउर, नून-तेल-मसाला, आलू-पियाउज कीनि-बेसाहि क' ध' रखलनि। चूड़ा,सोयाबीन,दूधक पाउडर, बदाम,चीनी आदि जोगा क' राखि लेलनि। काल्हिसँ चैती नवरात्र शुरू भ' रहल छैक। तेँ किछु फल-फलहरी सेहो ल' अनलनि। मथदुक्खी आ पेटझर्रीक गोटी सेहो कीनि क' राखि लेलनि। मुदा जीह छनगले रहनि। दोकानपर लोकसँ तीन हाथ दूरे ठाढ़ होथि, मुदा जँ केओ छींक-उकासी क' दैनि, लुट्टी'काक जीह हरहर कर' लगनि। बाजि उठथि—

“औजी, कनी हटि क' ठाढ़ हैब से नहि ? उकासी काल मुँह झाँपि नहि होइए ? हिनका देखियौन्ह। गुटका खाक' सौंसे पीक फेकने जा रहल छथि। अल्हड़ नहितन।”

भयक माहौलमे हिनकासँ के झगड़ा करितनि ? सभकेँ अपने हड़बड़ी रहैक। लुट्टी'का अपने बहुत डेरायल छलाह। एक मासक सामान जमा क' लेब' चाहैत छलाह। कोन ठेकान ? प्रधानमंत्री फेर आठ बजे बजैबला छथि। नहि जानि, की कहताह ?

सभ सामान घरमे राखि लुट्टी'का पुर्जासँ मिलान केलनि। जाह,आँटाक दूनू पैकेट त' दोकानेमे छूटि गेलनि। साइकिलसँ चट्टे घुरलाह। मुदा दोकान लॉक भ' गेल रहैक। घुरल अबै छलाह। पाछाँसँ सिपाही आवाज देलकनि—

"तुम तभी से सड़क पर साइकिल से बेमतलब काहे लेफ्ट-राइट कर रहा है जी ? "

ई जावत किछु बाजथि, एक डंटा पाँखुरपर बजारि देलकनि। लोहछि गेलाह। आठ बजेसँ पहिने 'टी भी' लग आबि नजरि गड़ौने आ कान पथने बैसि गेलाह। 21 दिनक लॉकडाउनक समाचार सुनि मोन डाउन भ' गेलनि। दोकानदारकेँ गारि पढ़' लगलथिन—

"सार, माल डाउन करा दोकान लॉक क' लेलक!आब एहि लॉकडाउनमे लॉक खोलत कि नहि ? जँ किंसाइत खोलियो देत,त' सार सिपहियाक कोन उपाय करब ? "

घरनीकेँ आवाज देलथिन— "यै सुनै छी ? कनी तेल गरम क' क' मलसीमे नेने आयब। दिनमे साइकिलसँ खसि गेल रही। पाँखुर बड्ड दुखाइए।"

कोरोनाक भय

मनटुनजी बड्ड लोकमंत लोक। सभक मदतिगार। शिक्षकगण आ खास क' शिक्षिका लोकनि हुनका लग अपन सर्विस-बुक, आयकरक कागत आदि जमा क' क' निश्चिंत भ' जाइत छथि। कोना की करबाक-धरबाक छैक, मनटुनजी जानथि। हुनका लोकनिकेर खातामे दरमाहा चलि जाइत छनि, मुदा खाता चेक करबाक झमेलामे नहि पड़ि ओ मनटुनेजीकेँ फोन क' क' पता क' लैत छथि जे पाइ गेलनि वा नहि।

इमहर मनटुनजी जहियासँ कोरोना भाइरसक प्रकोप बढ़बाक चर्च सुनलनि अछि, हुनका बड़का अदंक पैसि गेलनि अछि। एते लोकक छूअल-छाबल कागत छूबै छी, पता नहि कोनमे कोरोना सटल हो। लोकक कल्याण करैत-करैत किंसाइत अपनो परम कल्याण नहि भ' जाइन!लोककेँ लाभ पहुँचाबैमे कहूँ अपनो गंगा-लाभ ने भ' जाइन!मनटुन अज्ञात भयसँ सिहरि जाथि। तैयो फोन-पर-फोन आ लोकक अबरजात!अकच्छ भ' गेलाह मनटुनजी। फोन बन्न क' लेलनि। घर बन्न क' लेलनि। केओ केबाड़ पीट' लगलनि। खोलिक' बमकि गेलाह—

''की बात थिकैक ? हम सभक ठेका नहि लेने छी। जीयब त' बहुते कागत लिखब। अहाँ सभकेँ अपन जानक फिकिर नहि अछि। अनको जान खतरामे ध' देब'पर उताहुल छी। लोकसँ हटि क' रहबाक छैक, त' चलि एलहुँ लोकमे सट'। जाउ, हम

बड्ड खराप लोक भ' गेल छी अखन। हमर सभटा निकपन देखाबा छल।"
आगंतुक कहलकनि— "यौ, हमरा कागत-पत्तरसँ कोन काज ? एना किएक बाजै छी हाकिम ? हम त' मुर्गा बेच' एलहुँ अछि। सय टकामे पाँच गोट मुर्गा।"

मनटुनजी तत्मतमे पड़ि गेलाह। तीन दिनसँ रोटी-दालि-चोखा चलि रहल छलनि। मोन लुसफुसेलनि। मुर्गा खाइ लेल त' कतहु मना नहि कैल गेलैक अछि। मुदा एतेक सस्ता किएक बेचि रहल अछि ? घरनी केँ पुछलथिन —

"सुनै छी यै ? मुर्गा बिकाइ लेल आयल अछि..."

शंकाक ओझरी

मिंत्र बड्ड शंकालु लोक। कतहु जाइकाल तीन बेरि ताला घीचि क' जाँच करैबला। एहि देशव्यापी लॉक डाउनमे रंग-बिरंगक शंका असबार भ' गेलनि।

ककरो देहमे भीर' नहि कहलकैक अछि। ने कतहु जाइ, ने केओ आबय। मिंत्रकेँ मित्रक कमी नहि। फोनक आसरा। लगलाह बाते-बाते सुझाव माँग'। अमल कर'। हाथ धोऐत-धोऐत चमड़ी उज्जर क' लेलनि। तैयो नाक-मुँह बेसिये कुरियाइ छनि। आलू-पियौज,तरकारी कीनि अनैत छथि। ककरो छूब' नहि दै छथिन। एककटाकेँ सबुनाइन पानिमे बाहरेमे पहिने धो दैत छथिन। तखन झोरा आ अपन पहिरल कपड़ाकेँ साफ क' क' नहा लैत छथि। आधा आलू दुइये दिनमे सड़ि गेलनि अछि। रान्हल तीमन सेहो सबुनाइन लगैत रहैत छनि। अखबार बन्न करा देने छथिन। आफत त' दूध ल' क' भेल छनि। पता नहि के दुहने हेतैक ? कैक गोटा छूने हेतैक ? दूधबला बासन कैक दिनपर माँजैत हैत ? मँजितो हैत कि नहि ? दूध लैसँ पहिने सस्पेन साबुनसँ माँजि लेलाह, त' ओहि दिन दूधे फाटि गेलनि। घरनीकेँ कहलथिन—
"आँय यै,किछु दिन दूध बन्न करबा दियैक ? "

ओ कहलथिन— "से कोना हेतैक ? चाह बिना हमरा माथ ध' लैये। पैकेटबला दूध गंधक मारे हमरा अरघइ नहि अछि। लाल चाहसँ हमरा छाक नहि पूरै अछि। हम त' भला दूधक बिना कहुना रहि लेब,मुदा पोती कोना रहत ? भगवानेपर छोड़ि दियौक। एतेक लोक त' ओकरेसँ दूध लैत छैक।"

मिंत्र ठकबक जकाँ बैसल छथि। अकबक बन्न छनि। जिम्हरे देखै छथि, कोरोनाक शंकासँ सिहरि जा रहल छथि। शंकाक ओझरी जतेक सोझराबैत छथि, ओ ततेक ओझरायल जा रहल छनि। फोनक घंटी बाजि उठै छनि। कहै छथिन—

"के कोरोना ? धू:, तों छह हौ ? दूध कत'सँ लैत छह ?"

कोरोना-वारियर

बच्चाबाबू लॉकडाउनक पूरा पालन क' रहल छलाह। कोरोना-वारियरक सम्मानमे खूब थपड़ी बजौलनि। 'टी. भी.'पर रामायण-महाभारतक आनंद ल' रहल छलाह। राति दीप जराक' बालकनीसँ बाहर तकलनि। अद्भुत दृश्य निरखि भाव-विह्वल भ' गेलाह। सौंसे देश कोरोनाक अंधकेँ चीरि एकबद्ध संकल्पक प्रकाशसँ आलोकित भ' उठल छल। आँखिमे नोर छलछला गेलनि। भावलोकमे विचरण करैत आँखि लागि गेलनि।

भोरे बच्चाबाबू आँखि फोलै छथि। सम्पूर्ण भूमंडल चलायमान नजरि आबि रहल छलनि। चक्कर खाक' चौकीसँ नीचाँ खसि पड़ैत छथि। सौंसे शहर घुमा अबै गेलनि। कोनो प्राइवेट क्लिनिक फुजल नहि। सरकारीमे चुट्टी ससरबाक जगह नहि। गामक क्वेककेँ फोन केलनि। कहलकनि—

"ई. सी. जी. कराक' व्हाट्सएप्पपर पठाउ।"

कोरोनाक भयसँ कोनो डाक्टर नहि गछलकनि। अहुछिया काटिक' रहि गेलाह। दवाइ-दोकानसँ पूछि गोटी खाक' सूति रहलाह। साँझमे मोन किछु हल्लुक भेलनि। पोता कहलकनि —

"बाबा, रामायण शुरू भ' रहल अछि। देखबैक नहि ?"

बजलाह —"नहि, प्रधानमंत्रीकेँ चिट्ठी लिखि रहल छियनि। एहेन-एहेन कोरोना-वारियरक लेल आगूसँ थपड़ी पार' आ दीप जराब' कहताह त' हम नहि मानबनि। पहिने हिनका सभक लाइसेंस कैंसिल करथु,तखने कोनो भाषण सुनबनि।"

बुच्ची काकाक चिकित्सा

तहिया बुच्ची काका नओ बरखसँ बेसीक नहि रहल हेताह। भिनुसरबामे खूब जाड़ लागिक' बोखार भ' जाइन। कनिये कालमे छिछरी-पथिया भ' जाथि। देह तोड़' लगनि। तीन-तीनटा सीरक ओढ़ि लेथि,मुदा कछमच्छी कम नहि होइन। दिनभरि देह शुद्ध रहनि आ भिनुसरे वैह कछमच्छी!ओझाइ-धमाइ भेलनि। फकीरन माथा-हाथ देलकनि। इस्माइल मियाँ महजिदसँ आबि एकटा ताबीज गरमे लटका देलकनि। एक राति बुच्ची काकाक दाइ एकटा बाढ़निकेँ हुनक अंगा पहिराक' बिछानपर हुनकर बदला सुता देलकनि आ हुनका अपना संगे दोसर कोठलीमे सुता लेलकनि। मुदा ओ बोखार कहूँ मानैक ? फेर भिनुसरे ध'ए लेलकनि। तखन पुतई अस्पतालक डॉ. भगत बजाओल गेलाह आ मलेरियाक गोटी खोआओल गेलनि। स्वस्थ भेलाह। तहियासँ बुच्ची काका अन्धविश्वासक घोर विरोधी भ' गेलाह। झाड़-फूक आ टोना-टापड़केँ बड्ड दूस'

लगलाह। पूजा-पाठ आ कर्मकांड सेहो नहि सोहाइन। ओ आस्था-विश्वासमे सेहो अन्धविश्वासक प्राबल्य स्थापित कर' लगलाह।

एहिबेरक लॉकडाउनमे त' ओ आओर मुखर भ' गेलाह। बाज' लगलाह— ''कत' अछि मंदिर-महजिद? सभ धर्माधीशक शक्ति कत' नुकायल छनि ? सभटा ढोंग सम्मुख आबि हिनका लोकनिकेँ देखार क' देलक। आब विज्ञाने भरोसे टकटकी लगौने छथि। जहिया संकट दूर हैत, तहिया सूनब हिनका लोकनिक गलथोंथी— 'ई त' पतरामे पहिनेसँ लिखल छलैक। फलाँ शास्त्रमे भविष्यवाणी कैल गेल छलैक जे लोक नहि देखलक। फलाँ ग्रंथमे केश भेटल छल कि नहि ? की कहने रही,मोन अछि ? आदि-आदि।' तकर बाद फेर जगह-जगह पंडाल खस' लागत। यजमान आ दर्शनियाँ सभ मुड़ाय लगताह।"

परसू भोरमे बुच्ची काका जगलाह। चौकीसँ नीचाँ पएर देबाकाल मशहरीमे ओझरा गेलनि। पोनेभरे खसि पड़लाह। प्राय: पोनक हड्डी टूटि गेलनि। पोन फूलिक' तुम्मा भेल रहनि। पीड़ासँ छटपटा रहल छलाह। शहरक कोनो डाक्टर छूब' लेल तैयार नहि भेलनि। एकटा दया देखौलकनि। फोनेपर उपचार बता देलकनि। घरक लोक तदनुसार बाँसक कमची पोनमे बान्हि घरेमे चौकीपर सुता देने छनि। दूनू पएरमे पजेबा लटका देने छनि। दर्दक गोटी खोआ-खोआ क' रखने छनि। सभटा चार्वाक-दर्शन बिसरायल छनि। केओ माथपर सिंदूर-भभूत लगा दैत छनि। घरनी सूर्यपुराणक पाठ कर' लगलथिन अछि। मोन बहटारबाक लेल अपनो मोनेमोन 'हनुमान चालीसा'क पाठ क' रहल छथि। एहि लॉकडाउनमे दोसर सक्के की ?

भाइरस

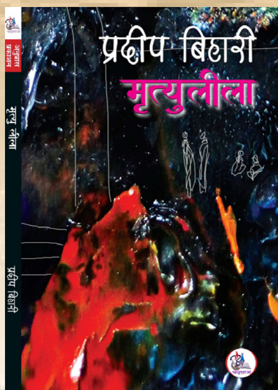
कोरोना-भाइरस पसरल छैक। कखन ककरा गछारि लेतैक, से नहि कहि। कतोक प्राण ल' चुकल छैक। 'टी. भी.'पर पीड़ित आ मरनिहारक संख्या बढ़ले जा रहल छैक। सरकार लॉकडाउन लगा देलकैक अछि। लोक घरसँ निकलै नहि अछि। सप्ताहमे एकदिन मुँह-कान झाँपि-झूपि डेराक आगाँ आयल ठेलासँ आलू-पियौज-तरकारी जे-ने-से भाओ कीनि लैत अछि। घुरती पाइ फराके राखि पाइ आ हाथ सेनिटाइज करैए। उठौनाबला दूध अबितहि गरम क' राखि लेल जाइत छैक। भाइरस हेतैक त' मरि ने जेतैक ? अखबार बंद। कोन ठेकान ओहीमे सट्टल भाइरस कंठ ने मोकि दिअय! 'टी. भी.'पर दू-दू बेरिक' 'रामायण' आ 'महाभारत' सीरियल द' रहल छैक। ओहीमे सौंसे घर लागल अछि। फोनपर अपन-अपरारक समाचार ल' रहल अछि लोक। ककरो

केओ अस्पतालमे भरती छैक। केओ पूरा परिवार कोरेंटीन भेल अछि। ककरो प्रियजनक प्राणान्त भ' गेलैक आ अस्पतालबला दूरेसँ लहास देखा ल' गेलैक। सुख-सराध,यज्ञ-जाप, बियाह-दान सभ किछु बंद। मंदिर-महजिदक कपाट बंद। दुखी-रोगीकेँ देखैलेल कोनो प्राइवेट क्लिनिक खुजल नहि। सरकारीमे रोगीक पथार लागल। ओतय जाउ त' नहियो रहत त' कोरोना ध' लेत,तकरे डर। आवागमन बंद। जिनगी अवरुद्ध।

एहने स्थितिमे 'कैलाशपुरी' मोहल्लामे बिरजू बाबू राति सुतलाह, से सुतले रहि गेलाह। अस्सीसँ उपरे बयस रहनि। घरमे खाली बेटा-पुतोहु। बेटा टेकनाथ अपने ट' हनैत। कैंसर-पेशेंट। बेटा बापसँ बेसी बेमार, मुदा बापे पहिने पार। परिवार नचार। एहिमे अड़ोसी-पड़ोसीक की कहल जाय विचार ? सभकेँ इएह शंका भेलैक जे किंसाइत कोरोनेसँ ने मरल होइक बुढ़बा। केओ हुलकियो देब' नहि एलैक। सामाजिक तानी-भरनी टूटि रहल छैक। भाइ-भैयारी छूटि रहल छैक। भाइरस खा गेलैक सभ सामाजिकता,संस्कार आ संस्कृतिकेँ। जानक डर बेजान केने छैक लोककेँ। ई लोक आब ओ लोक नहि रहलैक।

लोक देखलकैक— बिनु हवाक टायरबला स्कूटरपर मरल बापकेँ लदने टेकनाथ अपन पत्नीक संगे ठेलि-ठूलि क' जा रहलाह। लखनदेइक कातमे खधिया कोड़ि बापकेँ गाड़ि अयलाह। केम्हरोसँ कोनो खोज-पुछारि नहि। भाइ-रस सुखा गेलैक। भाइरस ग्रसने छैक।





उपन्यास अंश

उपन्यास : मृत्युलीला
लेखक : प्रदीप बिहारी

पी.पी.ई किट पहिरने ओ आदमी हॉलक गेटसँ एकमोने ठेलैत कहलकै, ''दहिना कात बला अंतिम बेड सँ पहिने बला बेड पर चलि जाउ।''

अविनाश दुआरिक बोर्ड पढ़लक आ बाजल, ''हइ। महिला वार्डमे किएक पठा रहल छह?''

ओ व्यक्ति बाजल, ''चुपचाप चलि जाउ। नहि तँ कनेकाल मे इहो नहि भेटत। जखन मृत्यु माथ पर नचैत होअय, तँ महिला-पुरुष नहि देखी। जतहि गऽर भेटय, धऽ ली।''

ओ व्यक्ति हिन्दीक दिल्ली बला अपभ्रंशमे बाजि रहल छल।

अविनाश दुआरि परसँ भीतर हुलकी देलक। ठीके, स्त्री आ पुरुष समगर्दा भेल एकहकटा बेड पकड़ने छल। ओकरा बुझयलैक जेना-जेना रोगी सभ आयल, बेड पकड़ने गेल। ओ अपन हाथक बेग सम्हारलक। मोन होइत छलैक जे जल्दी बेड भेटैक आ ओ पसरि जाय। ओकरा स्वयं पर अचरज होइत छलैक जे एतेक बोखारमे गेट परसँ कोविड वार्ड धरि कोना बूलि कऽ आबि सकल। एकबेर अपन तरहत्थीकें कपार पर लऽ जा कऽ बोखारक अखियास कयलक।

ओ झटकल गेल आ बेड छापि लेलक। अनुभव कयलक जे जागल रोगी सभ ओकरा देखि रहल छैक। ओछाओन पर पसरि गेल। पसरलाक बाद बुझयलैक जे छओ फुटक ओकर देह लेल ओ बेड यथेष्ट नहि छलैक। करोटो सावधानिएसँ फेरऽ पड़तैक। मने, जखन-जखन करोट फेरत, तखन-तखन निन्न टुटी जयतैक।

कनेकाल आँखि मुनने पड़ल रहल। किछुओ सोचबाक स्थितिमे स्वयंकें नहि पाबय। एक तरहें निस्तेज पड़ल छल। नहूँ-नहूँ ऊर्जा प्राप्त करबाक स्थितिमे स्वयंके आनि रहल छल। दिन भरिक थकान झमाड़ि देने रहैक मने। कनिए कालक बाद एकगोटें कहलकै, ''हे! ई दवाइ लिअऽ। तीन-तीनटा गोटीक दूटा पैकेट अछि। एकटा एखनि खा लिअऽ आ दोसर खेनाइ खयलाक बाद खा लेब। काल्हिसँ खाइ बला दवाइ सभ काल्हि भिनसरमे एक्के बेर भेटि जायत। कफ सीरप

सेहो राखि दै छी। खोंखी होअय तँ एक चम्मच पी लेब। चम्मच सहो राखल अछि। आ हँ...कफ सीरप पीलाक बाद पानि नहि पीयब। कोनो प्रकारक बेसी दिक्कत भेने हॉलक गेट लग बामा कात मे इंटरकॉम छै, नम्मर सेहो साटल छै। हॉल इंचार्ज के फोन कऽ देबै आ हँ... इंटरकॉम छै, तें मामूलियो बात लेल जखन-तखन फोनियबैत नहि रहबै।''

अविनाशकें बुझयलैक जे ओकरा मिडिल स्कूलक छात्र बूझि, स्वयं शिक्षक बनि बुझबैत होइक आ हिदायतो दैत होइक।

एतेक निर्देश देलाक बाद ओ व्यक्ति घुरि गेल। अविनाश कनेकाल बाद हिम्मति कयकल आ उठि कऽ बैसल। चारूकात नजरि खिड़ौलक। दू-दू गजक दूरी पर बेड लागल छलैक। बेड सभक बीच-बीचमे मोट सनक पारदर्शी पन्नीक देबाल सनक बनाओल छलैक। अपन दुनू कात देखलक। बामा कातक बेड पर एकटा बूढ़ी कुहरैत छलीह। दहिना कातक बेड खाली छलैक। तकर बाद दूटा स्नान घर। स्नान घरक सोझाँमे सेहो दूटा स्नान घर। ओ अखियासलक-चारू स्नान घर मे शौचक सुविधा सेहो होयतैक। तकर बाद ओकर नजरि अपन सोझाँ बला बेड पर गेलैक। ओहिपर एकटा युवती छलि। ओ अविनाशकें देखि रहल छलि। अविनाश एक नजरि ओहि युवतीकें देखि ओकर दहिना कात बला बेड पर हकमैत एकटा प्रौढ़कें देखलक। अविनाश चौदह नम्मर बेड पर छल। ओकर सोझाँक सात नम्मर बेड पर ओ युवती छलि। एकरा कातक पनरह नम्मर बेड खाली छलैक। जानि नहि, ककरा लेल अजबारल छलैक ओ बेड। अस्पतालमे जगह भेटि पयबाक एहि संकटमे कोन भाग्यशाली छल, जकर प्रतीक्षा पनरह नम्मर बेड कऽ रहल छलैक।

लीला देखयबा लेल मृत्यु ओहि हॉलमे चकभाउर दऽ रहल छल। ओ हॉल मृत्युक प्रेक्षागृह बनि गेल छल मने। जानि नहि, कखन ककर भूमिका समाप्त भऽ जयतैक? ककर संवाद आ उपस्थिति पूरा भऽ जयतैक आ मंच प्रबंधक ओकरा व्यवहृत मंच-सामग्री बूझि घिसिया कऽ नेपथ्यमे लऽ जयतैक। फेड आउट। फेड इन। चालू। लीला चालू। नव-नव लोक।

जाहि बेड पर अविनाश बैसल छल, ताहि पर ओकरासँ पहिलुक रोगी ठीक भऽ कऽ गेल छल कि ओकरा मंच-सामग्री बूझि घिसिया कऽ नेपथ्यमे लऽ गेलैक से ओ की जानऽ गेल? भऽ सकैछ ओहि हॉलक किछु पुरान रोगीकें बुझल होइक।

ओ अपन बेग खोललक। सुसुम पानि बला बोतल बाहर कयलक। बेडक कात बला स्टूल पर गिलास आ पानि भरल प्लास्टिकक बोतल राखल छलैक। ओ बोतल छूबि कऽ देखलक। पानि ठंढा छलैक। गिलासमे सुसुम पानि ढारलक आ तीनू गोटी एक्के बेर मुँहमे राखि पानि पीबि घोंटि गेल। तखनहिं माय मोन पड़लखिन। एखनि माय रहितथिन तँ ओकर गट्टा पकड़ि लितथिन। कहितथिन जे दवाइक गोटी बेरा-बेरी खयबाक चाही। एकटा खाउ, तकर कमसँ कम पाँच मिनटक बाद दोसर, तकर पाँच मिनटक बाद तेसर। माय कहथिन जे एकटा गोटीकें पेटमे फूलि कऽ कनियो पसरबाक समय दी, तखन दोसर खाइ। मुदा जाधरि माय 'हाँ-हाँ' करितथिन ओ गोटी फाँकि जाइत छल। माय खौंझा जइतथिन। मायकें खौंझाबऽ मे ओकरा आनन्द भेटैक। कहियो काल तँ तीन-चारिटा गोटी लऽ कऽ मायकें देखाबय आ फाँकि जयबाक अभिनय करय। माय खौंझा जइतथिन। फेर ओ थम्हि जाय। मायकें कहय जे तोहर बात हम काटि नहि सकैत छियौक। हे, ले...एक्कहिटा खाइत छियौ। माय ओकर प्रशंसा करथिन- तों तँ हमर बुधियार बेटा छें। मायक

मुहें अपन प्रशंसा सूनि ओ मुस्किया दिअय।

से, तीनू गोटी फाँकि लेलाक बाद मायक स्मृतिसँ मुस्किअयबाक मोन भेलैक, मुदा प्रयासक बादो मुस्किया नहि सकल। मोन भेलैक जे माय ओकरा लग रहितथिन, तँ हुनक कोरामे माथ राखि कनितय आ माय ओकर केश सोहरबितथि। नोकरीक बाद जतेक बेर मायसँ भेंट होइत छलैक, ओ मायक कोरामे माथ राखि कानबाक अभिनय करय। माय ओकर केश सोहरबैत कहथिन, ''आब ई लीला छोड़। नमहर भेलें।''

ओ बाजय, ''माते! तोरा कोरामे हम अपन नेनपनकें मोन पाड़ैत छी, तँ मोन खूब हल्लुक भऽ जाइए। आब महानगरक जीवनमे एहन संयोग कहाँ भेटैए माते?''

आ माय ओकर नोर पोछबाक अभिनय करथिन, ''ले। नोर पोछि देलियौ।'' तकर बाद माय गंभीर भऽ जाइत छलीह, ''हमरा कोरामे तोरा आँखिमे नोर नहि रहक चाही। हमर कोरे की? हमर सोझोमे तोरा आँखिमे नोर नहि रहौक। तोरा आँखिमे हम नोर हम देखिये ने सकैत छी। सहिये ने सकैत छी?''

अविनाश मायक गंभीर मन:स्थितिकें सहज करबाक प्रयास करय, ''आ दुलरा दयालक?''

अपन छोट भाइ अनूपकें ओ मायक दुलरा दयाल कहैत अछि। परिवारक किछु आर गोटें अनूपकें दुलरा दयाल कहैत छैक।

माय बजलीह, ''ओकरो। हमरा लेल दुनू एक्के रंग।''

''बेस। कह तँ। तों हमरा बेसी मानैत छें कि दुलरा दयाल के?''

''दुनूकें। बराबर।''

''कहैत तँ एना छें जेना हमरा दुनू भाइकें तराजू पर तौलि कऽ दुलार करैत छें। बराबर। तैयो...कनियो लऽत-उनार तँ अबस्से होइत होयतौक?''

''बेटा रे। मायक हृदयक तराजूमे ने पासंग रहैत छैक आ ने ओकर जोख मे लऽत-उनार होइत छैक।'' माय बजलीह, ''बेस उठ। किछु खो-पी गऽ। ई कानऽ-तानऽ के एक्टिंग नहि कर।''

''मुदा, माते!''

''की?''

''जखन हम खूब चिंतित रहैत छी, फिरीसान रहैत छी, थाकल रहैत छी, तनाओमे रहैत छी, तखन हमरा आर किछु ने सोहाइ-ए। मोन होइए जे तोरा कोरामे माथ राखि कऽ हबो-डकार भऽ कानि ली। मुदा, ताहि समय हम तोरा मिस करैत रहैत छी माते।''

माय-बेटाक एहन-एहन दृश्य आ संवाद देखि-सुनि सोनी गौरवान्वित होइत रहैत अछि। पतिक ताहि समयक अवस्था देखि कखनो कऽ मुस्किआइत सेहो रहैत अछि।

से गोटी फाँकलाक बाद ओकरा बुझयलैक जे ओ मायकें मिस कऽ रहल अछि। मोन भेलैक जे नेना बनि जाय आ मायक कोरमे माथ राखि कानऽ लागय। माय अपना हाथें ओकर केश सोहरयथिन, तँ ओकर दुख दूर भऽ जयतैक। मुदा, से तखन संभव नहि छलैक। ओ हॉलमे फेर नजरि खिड़ौलक। कनेकाल आँखि मुनि लेलक। आँखि मुनने सोचलक जे एहि अवस्थामे एतेक भावुक नहि होमक चाही ओकरा। ओ अपन आँखि खोललक।

ओकरा एकटा बातक संतोष भेलैक जे ओकरा बेड लग मोबाइल चार्ज करबाक बोर्ड

बनाओल छलैक। ओ आन-आन बेड दिस सेहो हुलकी देलक। आश्वस्त होमऽ चाहैत छल जे सभ बेड लग छैक कि कतहु-कतहु छैक। मुदा, जतऽ धरि ओकर नजरि गेलैक, सभ बेड लग मोबाइल चार्जिंग प्वाइंट देखयलैक।

ओकरा बड़का बाबू मोन पड़लखिन। बड़का बाबू माने ओकर पिताक पितियौत। ओकर पितासँ जेठ। हुनका ओ दुनू भाइ बड़का बाबू कहैत छनि। अविनाश हुनक प्रिय अछि। ओकर गपसँ आनन्दित होइत छथि ओ। मोबाइलक अनिवार्यताक सम्बन्धमे ओ एकबेर कहने रहथिन जे आब सर-कुटुम अबै छै, तँ लोक पयर धोबऽ लेल जल देबऽ सँ पहिने पुछैत छैक- मोबाइल चार्ज करबाक होअय, तँ... हे, ओहिठाम प्वाइंट छैक। समय कत्ते बदलि गेलै।

ताहि पर अविनाश हुनका कहनि जे समय जे बदलल होउक, मुदा हम नहि बदलल छी। हम बदलब तँ बड़का बाबू नहि, 'बड़े पापा' कहब। ताहि पर ओ तुरुछि जाथि आ कहथि ई बड़े-तड़े कहबें तँ मारबौ। ई नहि बुझबौ जे बाँहि पूरऽ योग्य भऽ गेलें। एतेक बजलाक बाद ओ मुस्किआइयो दैथि। अविनाश सेहो मुस्किआ दिअय।

ओ सोचलक- अजब स्वभाव छनि बड़का बाबूक। जकरासँ गप करताह तकरे बयसक बनि जयताह।

ओ बेगसँ हेडफोन बहार कऽ माथमे लगौलक। ओहि हॉलमे सभकें अपने सनक देखि ओकरा अपन बोखारक सोहे ने रहैक मने। मोबाइलमे गीत लगा कऽ सूनऽ लागल।

मुदा, बेसीकाल गीतो नहि सुनि सकल। उदासीक आभास भेलैक। तौलियासँ मुँह झाँपि उकासी कयलक आ ओछाओन पर पड़ि रहल। नजरि पंखा पर गेलैक। ओहि हॉलक बेरामिए सभ सन पंखा सेहो कुहरि रहल छलैक। ओह! एतहु ओकरा उसनाइए पड़तैक। ओ हॉलमे चारूकात ए.सी. ताकबा लेल नजरि खिड़ौलक। ए.सी. लागल तँ छलैक, मुदा बन्न छलैक। तखने मोन पड़लैक जे कोविड वार्डमे ए.सी. बन्न राखल जाइत छैक। मुदा ओहि हॉलक ए.सी.क हालति देखने लगैत छलैक जे कोनो ऐतिहासिक अवशेष होइक। जहियासँ कोविडक संक्रमण बढ़ऽ लगलैक, तहियेसँ ओ अपन ऑफिसक ए.सी. सेहो बन्न करबा देने छल। डॉक्टर सभ टी.वीक विभिन्न चैनल पर कहब शुरुह कऽ देने छल जे ए.सी.सँ संक्रमण द्रुत गतिएँ पसरैत छैक। जँ किनको ए.सी. अतिआवश्यक बुझाइन, तँ जाहि तापमानक अनुमोदन डाक्टर सभ करैत छलाह, ताहिसँ नीक पंखे। तैयो, ई सभटा बात व्यक्ति-व्यक्ति पर निर्भर करैक।

कोविड वार्डमे ए.सी.सँ पंखा नीक, मुदा ओ नीक जकाँ घुमय तखन ने।

घरोमे तेहने हाल छलैक। अपन तीन कोठरी बला फ्लैटक जाहि कोठरीमे ओ छओ दिन बन्दी बनल रहल, ओहि कोठरीक पंखा एहिना चलैत छलैक। नहि, एहिसँ कने तेज घुमैत छलैक। असल मे, ओहि कोठरीमे बरोबरि खगता नहि होइक, तें पंखाक गति पर ध्यान नहि जाइक। एक बेर सोचने छल जे मिस्त्रीकें बजा कऽ देखा दिअय, मुदा से आसकतिए छुटले रहलैक।

बेटीक कारणें ओहि कोठरीकें बन्न राखऽ पड़ैक। तीन बरखक नेनाक कोन ठेकान? कोठरीमे पैसि ने जाइक। पहिले दिन ऑफिससँ घुरलाक बाद जखने ड्राइंग रूममे पैसल तँ बेटीकें डाइनिंग रूमक कातमे ठाढ़ देखलक। बुझयलै जे सोनी ओकरा कहने होयति। आ, ओ सोझें एकान्तवासक कोठरीमे चलि गेल। ओना तखन संक्रमणक शंका नहि रहैक, मुदा एकटा संभावित डर रहैक। तें कोठरीकें बन्न कऽ राखऽ पड़ैक। बाल्कनी दिसक खिड़की दिनमे धाह दुआरें खोलि नहि पबैत छल।

गुरुग्रामक मइ मासक दुपहिरया। मने, आठे-नओ बजे दुपहर भऽ जाइत होइक। वातावारणकें ठंढ़ाइत-ठंढ़ाइत रातिक दस-एगारह बाजि जाइक, तैयो लगैक जेना कोठरी उसनि रहल होइक। तकर बाद निन्न लेल संघर्ष। अबेर कऽ सुति पाबय। सोचलक, एहू हॉलमे निन्न लेल अहूरिये काटऽ पड़तैक।

स्वयंकें एहि तरहें गोड़ि कऽ राखबाक अतिरिक्त आर कोनो विकल्प नहि रहैक ओकरा लग। बेटी जाधरि ओकर पेट पर ओंघा नहि जाइक, पिताक तरहत्थीक बुलब अपन पीठ पर अनुभव नहि करैक, सुतब ने करैक। माइयो लग नहि जाइक। एहिने स्थितिमे ओकर निनिया अबैक। कहियोकाल एहुना होइक जे पिताक पेट पर रहैत छलि, पिताक तरहत्थी ओकर पीठ पर बुलैत रहैत छलैक आ माय नहूँ-नहूँ गबैत रहैत छलि— आ...गे...निनिया...आ...गे... आ...। तखन छौंड़ीकें निन्न होइक आ पिताक पीठ परसँ माय ओकरा ओछाओन पर सुता दैथि। एहने बानि रहैक ओहि नेनाक।

राति कऽ बेटीक अनुपस्थितिमे अविनाशकें निन्न नहि होइक। एकाध दिन वीडियो कॉलिंग कऽ बेटीकें देखलक, तँ ओ एकरा देखि कानऽ लागलि।

ऑफिसमे अनचोके माथ दुखाय लगलैक। कनेकाल आँखि मुनि कऽ बैसल रहल। नहूँ-नहूँ लगलैक जेना देह टटाइत होइक। अपनेसँ अपन नाड़ी छूबि कऽ देखलक। देह धधाइत बुझयलैक। ओ मोन बहटारबा लेल स्वयंकें काज पर केन्द्रित कयलक। माउस पर हाथ चलि गेलैक। कम्प्यूटर पर एकटा फाइल खोलि देखऽ लागल। नहूँ-नहूँ माउस ठंढ़ा बुझाय लगलैक। तखने एकटा अधीनस्थ कर्मचारीकें बजा कऽ फर्स्ट एड बॉक्ससँ थर्मामीटर आनऽ कहलकै। जाधरि थर्मामीटर लऽ कऽ ओ आयल, अविनाश बोखारसँ हुहुआय लागल। डॉक्टरसँ सम्पर्क कयलक। कोनो डाक्टर सोझाँ-सोझी देखबा लेल तैयार नहि भेलैक। कोरोनाक नाँगट नाच पूरे देशकें गनगनौने छलैक। दिल्ली-मुम्बै तँ नाच बला मंचक मध्य भाग छलैक। ओकरो शहर प्राय: सैह। वीडियो कॉलिंग पर लक्षण सभ बूझि एकटा डाक्टर कहलकै जे वाइरल बोखार लगैए। दवाइ लिखि कऽ व्हाट्सएप कयलकै, संगहि सलाह जे सुरक्षा लेल परिवारक लोक सभसँ दूर रहय...फराक रहय। वाइरल बोखार सेहो लसेढ़ बला होइत छैक।

क्षणहिंमे ई सूचना ओकरा ऑफिसमे तार जकाँ पसरि गेलैक। ऑफिसक सहकर्मी सभ एहि तरहें अस्त-व्यस्त आ डेरायल बुझयलैक जेना महाभारत कालक राक्षस बकासुर लोकक संहार करबा लेल ओकरा ऑफिसमे पैसि गेल होइक। ई बात पसरि गेलैक जे कोरोना ओकरा ऑफिसमे हरकंप मचाबऽ आबि गेलेए। ओना ओकर ऑफिसक उपरका तल्ला पर तीन दिन पहिने दू गोटेक कोविड पॉजिटिवक रिपोर्ट आयल छलैक। मुदा, एकरा फ्लोर पर ई पहिल घटना छलैक, तें लोक बेसी डेरा गेल। अविनाश अखियासलक जे सहकर्मी सभ ओकरासँ फराके-फराक रहब शुरुह कऽ देलकैक।

ओ सोचलक जे ओकरा डेरा चलि जयबाक चाही।

मुदा, ओकर दूटा मित्र ई गप सुनितहिं ओकरा लग जूमि गेलैक। ई तीनू एक्कहि अपार्टमेंटमे रहैत छल। ओकरा दुनूकें अविनाश लग जाइत देखि किछु गोटें मना कयलकैक।

माने, सभ धोषित कऽ देलकैक जे बोखार आबि गेलैक, तँ कोरोना भऽ गेलैक। मुदा, ओ दुनू नहि मानलक। एकटा सीनियर टोकनहुँ रहैक, ''मि. जॉन! फोनसँ सेहो हालचाल पुछि सकैत छियैक अहाँ। एखनि मि. अविनाशसँ भेंट करबनि आ तकर बाद अपना फ्लोर पर जायब। लिफ्टेसँ जायब ने। सौंसे पसरि जेतैक।''

''अहाँकें बुझल अछि जे हम एहि मामिलामे अहाँक बात नहि मानि सकैत छी।'' जॉन बाजल।

''से अहाँक जिद हमरा बूझल अछि।'' ओ व्यक्ति दोसर मित्रकें कहलक, ''अखिलेश जी! अहीं बुझबियनु ने।''

बिच्चहिमे एकटा तेसर व्यक्ति बाजल, ''ई कोना बुझयथिन? ई दुनू तँ जिज्ञासा करऽ जाइते छथि। दुनू एक्के पाटिक लोक छथि।''

अखिलेश बाजल, ''अनेरेक पहाड़ ठाढ़ कऽ रहल छी अहाँ सभ। बड़ डर होइए, तँ स्वयं सावधान भऽ जाउ। एकटा कलीग बोखारसँ हुहुआ रहल अछि आ अहाँ सभ कोरोना-कोरोना डिरिआइत छी।''

''यौ! समये एहन छै जे दोसर रोगक चिन्ता नञि होइत छै। जे सौंसे पसरल रहतै, सैह ने देखत लोक।''

अखिलेश आ जॉन अविनाश लग गेल। दुनू मास्क पहिरनहि छल। तय भेलैक जे सभसँ पहिने डेरा गेल जाय। बाटमे दवाइ कीनि लेत ओ सभ। जॉन तय कयलक जे ओ अपन गाड़ी ऑफिसेमे छोड़ि देत आ अविनाशक कार ड्राइव करैत ओकरा लऽ जायत। अखिलेश अपन कारसँ ओकरा संगहि रहत। मुदा, अविनाश से नहि चाहैत छल। बोखार भने बेसी होउक, मुदा ओकरा हिआव रहैक जे ओ स्वयं ड्राइव कऽ डेरा जा सकैत छल। आशंका ओकरा डेरा रहल छलैक। तें ओ जिद धऽ लेलक जे तीनू फराके-फराक डेरा जायत। आ, अन्तमे सैह भेलैक। अविनाश अपन कारसँ आगाँ-आगाँ आ ई दुनू पाछाँ-पाछाँ बिदा भेल। बाटमे अखिलेश दवाइ लेल रुकि गेल।

अविनाश पत्नीकें फोन कयलक, ''सोनी! भानसघरक कातबला कोठरी हमरा लेल ठीक कऽ दिअऽ। हमरा एखनि बोखारक शंका भऽ रहल अछि।''

ओ अपन बोखारक मादे साँच नहि बाजल, तैयो पत्नी डरे अवाक् भऽ गेलि। सोनीक कोनो स्वर नहि सुनलक।

ओ पुछलक, ''सोनी! हमरा सूनि रहल छी ने। बाजू। अहाँ बजै किएक ने छी?''

की बजितय सोनी? लगलैक जेना ओकर जीह घिचा गेल होइक।

''सोनी! बाजू ने सोनी।''

सोनीक देह काँपऽ लगलैक। स्वर थरथराय लगलैक। बाजलि, ''साँच-साँच कहू जे की भेल-ए? कतऽ छी अहाँ? फोन राखू। वीडियो कॉल करू वा हमहीं करै छी। फोन राखू ने।''

''नहि, हम वीडियो पर नहि आबि सकब।''

''से की भेलए अहाँकें?'' सोनी अविनाशकें आगाँ बाजऽ नहि देलकि, ''बाजू ने! कोन हालमे छी अहाँ? वीडियो पर किएक ने आबि सकै छी?''

''अरे, हम कार चला रहल छी।'' अविनाश बाजल, ''डेरे आबि रहल छी। अहीं लग। भरोस करू। चिन्ताक कोनो बात नहि छै। डेराउ नहि। ओहि कोठरीमे हमर डेली यूजक समान सभ

राखि दियौ।''

अविनाश मोबाइल बन्न कऽ लेलक। ओ सोनीकें भरोस दिअयबाक प्रयास कयलक, मुदा अपने भरोस नहि छलैक। जँ वायरल बोखार नहि भऽ कोनो दोसरे होइक तँ? तँ की? आब जे हेतै, से हेतै।''

ओ कनेकाल लेल एहि बातसँ संतुष्ट भेल जे अपना मादे सोनीकें भरोस दिअयलक, मुदा सोनी ओकर बातसँ संतुष्ट भेलि आकि नहि, से के जानय?

सोनीकें लगलैक जे कोठरी घिर्नी बनि गेल छैक। ओहिमे ओ नाचि रहल अछि। बिनु कोनो सम्बलक नाचि रहल अछि। इहो नहि बुझाइक जे ओकर पयर फर्श पर छैक वा नहि। मने, एतबे बात पर ओ स्वयंकें सम्हारि नहि पाबि रहल छलि। ओकरा सोझाँ एक्कहि पलमे बहुत रास परिस्थिति ठाढ़ भऽ गेलैक। कीदन कहाँदन दिमागमे घूमऽ लगलैक। बेसी बेजाइए।

कोरोनाक नंगटैसँ भिज्ञ छलि सोनी। टी.वी. एहि मादे ओकरो अपडेट रखने छलैक। टी.वीक कोरोना सम्बन्धी बहुत किसिमक फोटो सभ आँखिक सोझाँ नाचऽ लगलैक। ओहिमे जे खराप सनक फोटो रहैक, ताहिमे ओकरा अविनाश देखाय लगलैक।

एकटा अज्ञात आशंका ओकरा सकपंज करऽ लगलैक। ओ झूर-झमान भेल ड्राइंग रूमक सोफा पर बैसल रहलि। उठबाक हूबे ने होइक। लगैक जेना देहमे सक्के ने छैक। ओकरा अविनाशक दैनिक उपयोगक समान ओहि कोठरीमे राखबाक छैक। मात्र समाने नहि राखबाक छैक, ओहि कोठीरीकें 'आइसोलेशन' रूम बनयबाक छैक। भने अविनाश जे कहौक, मुदा फराक रहबाक माने ओकरा दिमाग मे एक्केटा बेरामी आबि रहल छलैक। वैह बेरामी जे सभक धियान अपन तांडव पर केन्द्रित कयने छल- कोरोना।

सोनी सोझाँक देबाल घड़ी पर नजरि टिकौलकि। जा... ई बन्न किएक भऽ गेलैक? एखने तँ चलैत छलैक। अविनाशक कॉल अयलैक तँ मोबाइल एही कोठरीमे छलैक। से, ओकरासँ गप करऽ एहि कोठरीमे आयलि, तँ नजरि एहि देबाल घड़ी पर गेल छलैक। एतबे कालमे कोना बन्न भऽ गेलैक? किएक बन्न भऽ गेलैक? एकटा आशंका फेर घेरऽ लगलैक। ओ मोबाइल उठौलकि आ अविनाशकें कॉल कयलकि। मोबाइल स्वीच ऑफ छलैक। एकमोने ओ मोबाइलकें अपन कातमे पटकि देलकि। तखने मोन भेलैक जे मोबाइलमे समय देखय। से, ओ देखलकि। ओ अविनाशक इनकमिंग कॉलक समय देखलकि आ मोने-मोन गणना कयलकि। पनरहसँ बीस मिनटक बीचमे अविनाशकें पहुँचि जयबाक चाही। ओकरा एही बीचमे ओहि कोठरीकें तैयार करबाक छैक। आ उठि कऽ ठाढ़ भेलि।

मुदा, ई देबाल घड़ी किएक बन्न छैक? बैटरी खतम भऽ गेल होयतैक। मोन पड़लैक। माय कहथिन जे घरमे बन्न घड़ी नहि राखी। घड़ी बन्न माने घरक गति बन्न। नहि, एहि घरक गति बन्न नहि होयतैक। से, ओ किन्नहुँ ने होमऽ देति। ओ डायनिंग हॉलक शो-केशसँ दूटा बैटरी आनलकि। बैटरी बदलबा लेल घड़ी उतारऽ लागलि तँ देखैत अछि जे...।

घड़ी बन्न नहि छलैक। घड़ी चलि रहल छलैक। जँ घड़ी चलिए रहल छलैक, तँ ओकरा बन्न किएक बुझयलैक?

ई की भऽ रहल छैक ओकरा? ओ सोचलकि। नहि, ओकरा एहि तरहें हतोत्साह नहि होयबाक चाही। ओ घड़ीक बैटरी लऽ ड्राइंग रूममे घुरि गेलि।

अविनाशक दिनचर्याक समान ओरिया रहल छलि, तखने बेटी जागि गेलैक। जगितहिं पुछलकि, ''ममी! हम सभ कत्तौ टूर पर जेबै?''

''नहि बेटी! पापाक समान तैयार करैत छी। ठीकसँ राखल नहि छलै, सैह सरियबैत छी।'' सोनी बाजलि।

''ठीक करै छी, तँ अलमारीसँ बाहर किए करै छियै?'' बेटी बाजलि, ''हमरो समान पैक कऽ दिअऽ। पापा संगे हमहूँ जेबै।''

''निशू बेटी!'' सोनी बाजलि, ''पापा कतहु नहि जयताह। एत्तहि घरेमे रहताह। खाली हुनकर समान सैंति दै छियनि।''

''नहि, अहाँ हमरा ठकै छी मम्मी। हमरो समान पैक कऽ दिअऽ।'' निशू बाजलि आ उठि कऽ वार्डरॉव दिस गेलि।

''बेटी! जिद नहि करू। अहाँ दुलारी बेटी छी ने। पापा घरेमे रहताह। कतहु जयताह, तँ अहाँ के लऽ जयताह। हमरो।'' सोनी बाजलि, ''हम तीनू गोटें संगहि जायब।''

सोनी तीन-चारि दिनक अनुमानित उपयोगक समान सभ ओरिया कऽ ओहि कोठरीमे गेलि, जाहिमे अविनाशकें रहबाक छलैक। ओहि कोठरीक ओछाओनक चद्दरि आ गेरुआक खोल बदललकि। आ से बदलैत देखि निशू फेर मायसँ पुछलाकि, ''मम्मी। दादू आ दादी अयथिन?''

पहिने किछु बेर पितामह आ पितामहीक आगमनसँ पहिने ओहि पर ओछाओनक चद्दरि आ गेरुआक खोल बदलाइत देखने छलि निशू।

''नहि बेटी। एखनि ओ सभ नहि औथिन।''

''किएक?''

''सरकार बाट बन्न कयने छै।''

''तखन?'' निशू किछु सोचैत बाजलि, ''तखन फ्लाइटसँ चलि औथिन।''

''नहि, ओहो बन्न छै।''

''तँ नानू औथिन?''

''बेटी। कहलहुँ ने। जखन ट्रेन बन्न छै, फ्लाइट बन्न छै, तँ केओ कोना औथिन?''

''तखन किएक बदलै छियै ई सभ?'' निशू फेर पुछलकि।

सोनी सोचलकि। कतेक बहन्ना करति निशूसँ? ओकरा बुझाबहि पड़तैक। भगवान करथिन जे वाइरस बोखार होइक। से जँ भेलै, तँ तीन दिनमे उतरि जयतैक। ओकरा मोन पड़लैक। माय एहिना कहथिन। आ, जँ से नहि भऽ कऽ, किछु आओरे भऽ गेले तँ...? तखन तँ बेसियो दिन 'आइसोलेट' रहऽ पड़तैक। तखन कतेक बहन्ना करति निशूसँ?

ओ बाजलि, ''बेटी! पापा ऑफिस सँ आबि रहल छथि।''

बिच्चहिंमे निशू टिपलकि, ''हमरा लेल आइसक्रीम अनै छथि ने ? फोन कऽ कऽ मोन पाड़ि दियनु।''

''नहि बेटी! पापाक मोन खराप भऽ गेलनिहें। बोखार लागि गेलनिहें। तें अपना दुनू गोटे सँ अलग भऽ कऽ दू-तीन दिन रहताह। हुनके रहऽ लेल ई रूम ठीक करैत छी।'' सोनी बाजलि, ''अहाँ बुधियारि बेटी छी। गुड गर्ल। आब बेसी प्रश्न नहि पुछू।''

मुदा, निशू नहि थम्हलि। ओकर जिज्ञासा बढ़ि गेलैक। पुछलकि, ''मम्मी! पापा के कोरोना भऽ गेलनिहें?''

सोनी सन्न रहि गेलि। मुदा, तुरन्त स्वयंकें सम्हारैत बाजलि, ''नहि, मामूली फीवर छनि। फीवर माने बोखार।''

''ओ.के.।'' एतेक बाजि निशू चुप भऽ गेलि।

सोनी देखलकि जे निशूक चेहरा उतरि गेलैक अछि। उदासीक चेन्ह पसरऽ लागल छलैक ओकरा चेहरा पर।

''आ, बेटी...।''

निशू माय दिस ताकलकि।

सोनी बाजलि, ''पापा औताह, तँ आन दिन जकाँ हुनक टिफिन बैग नहि लेब। हुनकासँ दूरे रहब।''

निशू चुपचाप मायकें देखि रहल छलि।

पापासँ दूर रहबाक बात कहऽमे बड़ कष्ट भेल रहैक सोनीकें। प्रतिदिनक पिता-पुत्रीक चर्या छैक जे जखने अविनाश ऑफिससँ अबैत अछि, तँ निशू दौगल ओकरा लग जाइछ आ ओकर टिफिन बैग लऽ लैछ। पिताक आँगुर पकड़ने भीतर लऽ जाइछ। सोनी निशूकें मना तँ कयलकि, मुदा ओकरा मोनमे एकटा आशंका रहैक, जे भावावेशमे पिता-पुत्री आने दिन सन ने भऽ जाय।

ओ फेर निशूकें कहलकि, ''बुझलहुँ बेटी। पापा लग नहि जायब। हमरा सभक दुलारी बेटी! प्लीज।''

''ओ.के. मम्मी। ओ.के.।'' निशू नहुएँसँ बाजलि।

तखने कॉलबेल बजलैक। सोनी संकेतसँ निशूकें कहलकि जे बेडरूममे चलि जाय, मुदा निशू नहि मानलकि। बाजलि, ''मम्मी। हम डाइनिंग हॉलमे रहब। ओत्तैसँ पापाकें देखबै। प्रॉमिश।''

सोनी बाजलि, ''ओ.के.।'' आ केबाड़ खोलऽ चलि गेल।

अविनाश भीतर प्रवेश करऽसँ पहिने सोनीकें दूर जयबा लेल कहलक। सोनी सेहो बेटी लग चल गेलि। अविनाश अपन समान सभक संग कोठरीमे चलि गेल। निशूकें देखि मुस्किआयल। निशू सेहो अपन मुस्कीसँ उतारा देलकि। मुदा, बाप-बेटीक मुस्की आन दिन सनक नहि रहैक। सोनी किछु पूछऽ चाहलकि। मुदा, ताहिसँ पहिने अविनाश बाजल, ''पहिने एकाध घंटा सूतऽ चाहैत छी। तकर बाद गप करैत छी।''

अविनाश कोठरीमे चलि गेल आ केबाड़ बन्न कऽ लेलक।

सोनी केबाड़ बन्न करबा लेल ड्राइंग रूममे गेलि, तँ जॉन आ अखिलेश ठाढ़ छल। ओकरा भीतर आबऽ कहलकि, मुदा ओ दुनू सोनीकें प्राय: संगहि कहलक, ''भाभी जी! किसी चीज की जरूरत हो तो नि:संकोच बताइएगा।''

अखिलेश दवाइक पैकेट सोनीकें देलक। दुनू मित्र घुरि गेल।

सोनी केबाड़ बन्न कऽ घुरलि, तँ निशूकें डाइनिंग हॉलमे ओहिना हतप्रभ ठाढ़ देखलकि। ओ स्नेहें निशूकें पकड़ि बेडरूममे चलि गेलि।

अविनाशक मोबाइल बजलैक। पहिने सोनी, तकर बाद पिता... माय... अनूप... कका... काकी... पितियौत...। सभ बेराबेरी गप कयलकैक आ हालचाल भेलैक। ओ सभकें कहलक जे सरकारी अस्पतालमे एकटा बेड भेटि गेलैए। एखने दवाइ खा कऽ पसरलहुँ अछि। दिन भरिक अस्पतालक चक्करसँ थाकल छी। कनेकाल सुतब, तखन विस्तारसँ बतिआयब। सभकें कॉन्फ्रेंस पर लऽ कऽ गप करब। चिन्ताक कोनो बात नहि छैक। एखनि छातीक दर्द बर्दासि करऽ योग्य अछि- माइल्ड।

मुदा, ओकरा निन्न नहि भेलैक। कतबो चुप रहबाक निर्देश होइक, सरकारी अस्पतालक वार्डमे चुप रहब आ चुप राखब संभव नहि होइत छैक। ओहिठाम कोनो रोगीक पारिवारिक सहयोगी नहि रहैक, तें सभ हालचाल लेल रोगियेकें फोन करैत छल।

ओहि हॉलमे दुइए प्रकारक स्वर गनगनाइक। मोबाइलक आ व्यथासँ कुहरबाक। ककरो ने ककरो मोबाइल बाजिते रहैक। बेसी लोक मोबाइलकें सैलेन्ट मोड पर नहि राखबाक किरिया खयने छल।

बेड नम्मर पाँच बला एतेक जोरसँ बतिआइक जे किछु गोटेक कुहरब सेहो झँपा जाइक।

अविनाश अपन हेडफोन पहिरलक। मोबाइल खोललक। मोन भेलैक जे फेसबुक पर अपन स्थिति अपडेट कऽ दिअय, मुदा नहि कयलक। तखनहिं ककरो चिचिअयबाक स्वर सुनाइ पड़लैक। हेडफोन पहिरने छल, तें स्वर बड़ मद्धिम सुनाइ पड़ैक, मुदा ओ अखियासलक जे स्वर कुहरबाक नहि, चिचिअएबाक छैक। चारूकात नजरि खिडौलक।

ओकरे कातक बेड पर पड़लि बूढ़ी चिचिया रहल छलि। अविनाश हेडफोन उतारलक। बूढ़ी चिचिया रहल छलि— ''बाबू रे बाबू! एइ जऽ मरै लेल किए छोड़ि गेलें रे बाबू? घरे मे कोनो कोना मे राखि दितएँ। मरिती तऽ नुनुआ आर के देख कऽ मरिती ने रे बाबू। दरद सऽ करेजा फाटल जाइ हय रे बाबू?''

बूढ़ी घौना करऽ लागलि।

आन रोगी सभ बूढ़ीक स्वर सुनि साकांक्ष भेल। अविनाश देखि रहल छल। केओ नहि उठलैक। बूढ़ी दर्दसँ फिरीसान। ओ अपन बेगसँ ग्लब्स आ फेस शील्ड बहार कयलक आ अपन बेड परसँ उतरऽ लागल। तखनहिं सोझाँक बेड वाली युवती टोकि देलकैक, ''बूढ़ी कें देखऽ जाइ छी?''

अविनाश ठाढ़ होइत बाजल, ''हँ। पहिने बूढ़ीकें पुछैत छियनि, तकर बाद हॉल इंचार्जकें फोन करबै।''

''अहाँकें एना नहि करबाक चाही।''

''किएक?''

''सेवा लेल एहिठामक स्टाफ छैक।''

तखने बेड नम्मर बारह बला व्यक्ति बाजल, ''ऐ मैडम। रउआ हियाँ तीन दिन से बानी। खाना देबे वाला आउर जूठा उठाबे वाला के छोड़ के कवनो सेवा वाला के देखले बानी?''

युवती चुप।

''ठीके कहैत होयताह ओ। हम जतेक कालसँ छी? केओ ने अभरल अछि। हिनका

देखियनि नहि तँ मरऽ दियनि? जैह किछु औरदा बाँचल छनि, ततेक तँ जीबि लैथि।''

ओ बूढ़ीक बेड लग गेल। पुछलक, ''की होइए दादी?''

बूढ़ी कोनो उतारा नहि देलनि। चिचिआइत रहलि, ''माय! गे माय!! हौ दैव!!!''

ओ बूढ़ीक देह डोलबैत पुछलक, ''दादी! की होइए?''

बूढ़ी अविनाशक स्वर अकानैत बजलीह,, ''के? के छिकें? सोहन? सोहन नुनू?''

''नहि, हम अहाँक कात बला बेड परक रोगी छी।'' अविनाश बाजल, ''की होइए?''

''जे छिकहो, से हम पीठ ससारि दैह बाबू। लगैए जे गैस चढ़ि गेल हन। दर्द सऽ छाती दू टूक भए रहल छै।''

अविनाश बूढ़ीक पीठ ससारऽ लागल। मोने-मोन सोचलक। भने गैसक भ्रम छनि बूढ़ीकें। भ्रमेमे किछु दिन जीबाक लिलसा राखथि। छातीमे जे माहुर छनि, से...।''

आन-आन रोगी सभ अविनाशकें एकटक देखि रहल छल। किछु सूतल छल।

कनेकालक बाद बूढ़ी स्थिर सन भेलीह, तँ अविनाश बाजल, ''दादी! हम हॉल इंचार्जकें फोन करैत छी।''

बूढ़ी मना कयलनि। बजलीह, ''कोइ औतऽ? आब एके दा राति के खाना लए कऽ जे औतै, तकरे बोलए पड़तै। उहे बोलतै इंचार्ज के। इंचाज ओकरे बोल सुनबो करतै। आइ अइ अस्पताल मे तेसर दिन छै। डाक्टर के कहाँ देखलियै हन?''

''आब आँखि मोड़ि कऽ सुति रहू दादी। आराम होयत।''

''आराम कहाँ छै बाबू? लगै छै जे कंठ आ छाती मे किछ भोंका रहल छै। जरलाहा बोखारो नीक जकाँ नञि उतरै छै। खेलौर करै छै। खने उतरै छै, खने चढ़ै छै।''

''प्रयास करबै तखने ने निन्न होयत।''

''से तऽ करिते छियै।'' बूढ़ी बजलीह, ''ई जरलाहा दैवो जे छै से एक्के बेर लऽ जइतै से नञि, तऽ....। हुकुर-हुकुर मारब करै छै। हमर आब कोन जरूरी छै पिरथी पर?''

''एना किए कहै छियै दादी?'' अविनाश बाजल, ''बूढ़-पुरान लोक पृथ्वीकें भारी थोड़बे लगैत छनि?''

बिच्चहिंमे युवतीक स्वर बहरयलैक, ''दैव लऽ जयताह, तँ पोताक मूड़न कोना देखबै?''

''हँ बेटी! ताही लेल तऽ घिसियौने छिकियै मोन आ देह के।'' बूढ़ी बजलीह।

बूढ़ी सुतबाक प्रयासमे शांत होइत देखयलीह।

युवती अविनाशकें देखैत रहलि। सोचलकि— समवयस्की होयत दुनू गोटें। दोसर गप ई जे एके क्षेत्रक अछि।''

अविनाश अपन ग्लब्स आ फेस शील्डकें डस्टबिनमे फेकि कऽ आयल, तँ ओ पुछलकि, ''अहाँ बिहारक छी?''

अविनाश उतारा देलक, ''हँ मिथिलाक। अहूँ तँ मिथिलेक छी।''

''से कोना बुझलहुँ अहाँ?''

''हमरा रोकैत काल मैथिली बजलहुँ तें।''

''से तँ एहि दुआरें बजलहुँ जे अहाँ कें अपन लोक सभसँ मैथिली मे बतिआइत

सुनलहुँ।'' युवती बाजलि। ओ पुछलकि, ''एतऽ?''

''नोकरी करैत छी।''

''कतऽ?''

''बैंकक पदाधिकारी छी। आ अहाँ?''

''वाह!'' युवती बाजलि, ''हम हाउसवाइफ छी। पति नोकरी करैत छथि। मल्टिनेशनल कम्पनी मे छथि।''

''वाह। खूब नीक।'' अविनाश बाजल।

''अहाँक हिम्मतिक बलिहारी भेलहुँ।'' युवती बाजलि, ''बूढ़ीक सेवा करबाक साहस अहाँ कयलहुँ। बड़ी टा बात छै ई।''

''बड़ी टा कोन बात हेतै?'' अविनाश बाजल, ''एतऽ सभ एक्के रोगसँ पीड़ित छी। एहि मे लसेढ़ लगबाक कोई संभावना? कोन खतरा? तें...।'' कने थम्हैत फेर बाजल, ''बूढ़ी के उसास भेलनि, से बड़ी टा बात भेलै।''

''बूढ़ी कें कुहरब सुनि अहाँ जे अपना बैग सँ फटाफट ग्लब्स आ फेस शील्ड बहार कयलहुँ, ताहिसँ हमरा लागल जे अहाँ स्वास्थ्य विभागक लोक छी।'' युवती बाजलि।

अविनाश युवतीकें देखि मुस्किआयल। बाजल, ''ई बेरामी तँ लोककें आधा डाक्टर बनाइए दैत छै। पाँच दिनसँ भोगि रहल छी एकरा। लड़ियो रहल छी।''

''दोसर एकटा आर बात।''

''की?''

''अस्पताल सभमे बेडक जे कमी छैक, तेहना स्थितिमे हमरा लागल जे स्वास्थ्य विभागक लोक होयब वा कोनो बड़का...।''

अविनाश युवतीक बात लोकैत बाजल, ''एतऽ बड़का-छोटका की? सभ एक्के रंग।''

''हम बड़का माने, बड़का पैरवी वला कहऽ चाहैत रही।'' युवती बाजलि।

''नहि, नहि। आम लोक छी हम। सामान्य।'' अविनाश बाजल, ''अहूँ तँ बड़के पैरवी वाली होयब।''

युवती मात्र मुस्किआयलि। बाजलि, ''नहि, अहाँ एत्ते नहि।''

''से कोना बुझैत छी?''

''अन्दाज सँ।''

''तेना नहि सोचू।'' अविनाश बाजल, ''जरूरी नहि छैक जे सभटा अन्दाज ठीके होअय।''

''अहाँक कात बाली बूढ़ी सेहो अपने सभ दिसक छथि।'' युवती बाजलि।

''से तँ हुनका कुहरैत आ व्यथासँ चिचिआइते काल बूझि गेलहुँ।''

''से कोना?''

''कोनो आदमी आर्त्तनाद करबा काल माता-पिता वा भगवानकें अपने मातृभाषामे सोर पाड़ैत अछि।'' अविनाश बाजल।

''बहुत दुखी छथि। हम चारि दिनसँ एतऽ छी। पाँच दिन घरमे रही। काल्हि रातिक बाद बोखार नहि चढ़लए। शेष उपद्रव तँ अछिए। कखनो कम होइए, कखनो बेसी आ कखनो बेसम्हार।''

युवती बाजलि, ''मुदा...।''

''की?''

''कीदन-कहाँदन। एक राति बजैत छलीह- हे भगवान! एखनि नहि लऽ जाउ। पोता के मूड़न देखऽ दिअऽ। पोता के मूडन में गीत गाबए दिअऽ...।'' आ गाबऽ लगलीह- हजमा रे धीरे-धीरे कटहिन नुनू के केश, कि नुनू बड़े दुलारू छिकै रे...। गीतक भासमे करुणा छलनि...दर्द छलनि...।''

अविनाशक नजरि युवतीक कातबला बेड नम्मर छओ पर बैसलि प्रौढ़ा दिस गेलैक। ओ एकरा दुनूक संवादकें आखियासि रहल छलि। प्रौढ़ाक मन:स्थितिसँ बुझयलैक जे ओ एकरा दुनूक संवादसँ असुविधामे अछि। ओ अविनाशकें किछु कहऽ चाहैत छलि, से बुझयलैक। आ कि तखने अविनाश ओकरा सम्बोधित करैत बाजल, ''सॉरी। आप डिस्टर्ब हो रही हैं।''

''वैसे आपलोगों की भाषा तो मैं नहीं जानती। पर, भाव समझ पा रही हूँ।'' प्रौढ़ा बाजलि, ''पर थोड़ा डिस्टर्ब तो जरूर हो रही हूँ।''

''सॉरी। आप आराम करें ऑन्टी।'' एहि बेर युवती बाजलि, ''हमलोग यूं ही बातचीत कर रहे थे। परिचय हुआ, तो एक ही क्षेत्र के ठहरे, इसीलिए कुछ बातें करने लगे।''

अविनाश मोबाइलमे समय देखलक। बोखार चढ़बाक समय भऽ रहल छलैक। ओ साकांक्ष भेल। ओ युवतीकें कहलक, ''बेस, फेर गप होइत रहतैक। आब आराम करबाक खगता भऽ रहल अछि।''

युवतीकें अविनाशक बात उचित लगलैक। बाजलि, ''एकटा काज कऽ सकैत छी?''

''की?''

''अहाँ अपन मोबाइल नम्मर देब?'' युवती बाजलि, ''व्हाट्सएप पर बतिआयब हम सभ।''

अविनाश अपन नम्मर देलक। संगहि मना कयलक जे एखनि ओ गप नहि कऽ सकैत अछि। ओ आराम करऽ चाहैत अछि।

बड़ी कालक बाद बूढ़ीक मोन कने सोंठ भेलनि। उठि कऽ बैसबाक प्रयास कयलनि। कोनहुना सफल भेलीह। कातक बेड पर अविनाश दिस तकलनि। ओ आँखि मुनने पड़ल छल। सात नम्मर बेड वाली युवतीकें देखलनि। ओ देबालसँ ओंगठि मोबाइल जोति रहल छलि। फेर बारह नम्मर बलाकें देखलनि। ओ पड़ल छल। ओकर साँस जोर-जोरसँ चलि रहल छलैक। हॉलक छत दिस नजरि खिड़ौलनि। सिरमामे राखल मोबाइलमे समय देखलनि। सोचलनि, एखनि भोजन लऽ कऽ आबऽमे देरी छैक।

बूढ़ी कनेकाल मोबाइलकें निहारलनि। धौर जो! ई मोबाइल गोंग भए गेलै हन। मोबाइल नहि, घड़ी छिकै। दोसर मोन कहनि- मोबाइल के कोन दोष? केओ फोन करतै, तब ने बजतै।

ओ ओछाओन पर पसरि गेलीह। मोन पड़लनि।

पुतौहु हिनक बेटाकें कहने रहैक, ''मैयो के खोंखी-सर्दी शुरू होइ गेलै हन। दवाइ लाबि

दियौक। मोन बेसी खराप हेतनि तऽ कोन जऽ रहथिन?''

पति बाजल, ''हइ! खाली सर्दिए-खोंखी सऽ तोरा कोरोना के शंका होमए लगलह।''

''नञि तऽ की?'' पत्नी बाजलि, ''कोरोना कोनो चिट्ठी लिख कऽ अबै छै? ढोल पीटि कऽ अबै छै- हे फल्लाँ! तोरा मैयो के पकड़ए आइ रहलिअऽ हन।''

''तोंए शान्त रहऽ। हम्मे मैयो लेल दवाइ लाबि दै छियै।''

ताहि पर बूढ़ी बाजलि रहथि, ''नुनू रे! दवाइ किए आनबहो। सर्दी-खोंखी छै। भाफ लेबै, गरारा करबै तऽ ठीक होइ जेतै।''

''कोरोना एहिना धरब करै छै मैयो। बचि कऽ रहथिन। बच्चा आर सऽ अलग रहथिन।'' पत्नी पहिने सासुकें कहलकि। तकर बाद पति दिस तकैत बाजलि, ''टी.वी. मे देखै छियै ने। सौंसे आगि लागब करै छै आ हिनका धाहे ने लगै छनि। लोक बरकि रहलै हन आ हिनका कुच्छो बुझाइए ने रहल छनि।''

''हइ! भाषण किए देब करै छहो?'' पति बाजल।

''हमर बात के भाषण नहि बुझियौक। अइ समय मे जे भाषण बूझे छै, सेहे खत्ता मे गिरै छै।'' पत्नी बाजलि, ''टी.वी. मे देखै नञि छियै जे अस्पताल मे बेड नहि भेटै छै। रोगी आर फर्श पर रहि रहलै हन। एखनीये सऽ सोचए पड़तै।''

तखनहिं बूढ़ीकें खोंखी भेलनि। पुतौहु दू डेग पाछाँ भऽ गेलनि। कहलकनि, ''मैयो! मूड़ी घुमा कऽ खोंखी करथिन, से नञि होतनि।''

तकर बाद बूढ़ी छींकलनि। बूढ़ी बड़ प्रयास कयलनि जे छींकऽ बेरमे दोसर दिस घूमि जाथि, मुदा जाधरि से करथि, ताधरि छिंका गेलनि।

पुतौहु फेर चालू, ''माइ गे माइ। लच्छन शुरू होइ गेलै। मैयो! ई अपन कोलिया कोठरी मे चलि जाथुन, नञि तऽ सभ बाल-बच्चा के पटि जेतै। कहाँदन हवो सऽ तेजी सऽ चलै छै करोना।'' फेर पति दिस तकैत बाजलि, ''आ सब के धए लेतै, तऽ पनियो दै बला नञि रहैत घर मे। तें कहब करै छी जे सोचियौक।''

''ठीक छै। डेराइ के काज नञि छै।'' पति बाजल, ''करोना साँप छिकै जे डँसि लेतै आ लोक मरि जेतै?''

बूढ़ी कोलिया कोठरी मे जा कऽ अपन ओछाओन पर पड़ि रहलीह। पुतौहु अपन छोटकाक डेन पकड़ि अपना दिस घिचने रहलि। ओ छौंड़ा बाबीक संग जाय चाहैत छल।

पत्नी बाजलि, ''साँपे छिकै करोना। गहुमनो सऽ नमहर आ बिखाह। देखलियै नञि टी वी मे। चीन मे रस्ता के कात मे एगो आदमी खड़ा रहै। देखिते-देखिते अर्रा कऽ रस्ते पर खसि पड़लै। लगलै जेना कोनो गाछ कोकनि कऽ खसि पड़ल होइक।''

''देखबै की? चिनमे के पठाओल छिकै करोना। उहे तऽ विश्व भरि के जान लए रहलै हन।'' पति बाजल।

पति कने चुप रहलाक बाद नमहर साँस लैत पत्नीकें आश्वस्त कयलक, ''सोचै छियै...।''

लॉकडाउनक कारणें पति सेहो घरेमे रहैत छल। तीनू बच्चाक स्कूल सेहो बन्न रहै। धराउ टाका कें मखा-मखा कऽ खर्च कऽ रहल छल। बेगरता मानऽ बला नहि रहैक। ओ पत्नीक चेहरा

पर हठोघड़ी भय देखय। डर तँ अपनो होइक, मुदा जखन एकसर रहय, तखन। जखन सभक संग रहैत छल, तखन निडर होयबाक प्रयास करैत छल।

तखने मोबाइलक घंटी बजलैक। उठौलक, ''के?''

मसियौतक फोन रहैक।

''की हाल छिकौ सगुन?''

....

''की? काज बन्न होइ गेलौ?''

....

''मुदा सरकार तऽ कहब करै छै जे मालिक आर अपन-अपन मजूर के दरमाहा दैक, रहए के बेबस्था करै।''

....

''तों तऽ बड़का कंस्ट्रक्सन कम्पनी मे रही ने?''

....

''बन्दी तऽ सब के भेलै हन, तैयो....।''

....

''जे ठीकेदार काम धरेलकौ, से कहाँ छौ?''

....

''तब तऽ मोश्किल मे पड़ि गेलही नुनू। आब की करबहीं?''

....

''हँ, बहुत लोक गाँव जा रहलै हन।''

....

''तोएँ नञि जाय चाहै छहो, तऽ...।''

....

''हँ इहो सोचनाइ तऽ ठीके छिकऽ जे एक-दू महीना लेल गाँव किए जेबहो? बेसी-सऽ-बेसी तीन महीना। फेरो तऽ आबैए पड़तऽ। बिहार मे की मिलतऽ। कहाँ मिलतऽ काम?''

....

''पुलिस किए खाली कराए रहैल हन झोपड़ी-खोपड़ी?''

....

''तऽ गाँव नञि जेबहो तऽ कोन जऽ रहबहो?''

....

''हियाँ? हियाँ रहए मे कोनो बात नञि। मुदा...।''

....

''रहि नञि सकबहो।''

....

''जगह कहाँ छै? दू गो बेडरूम आ एगो कोलिया कोठरी जइ मे मैयो रहब करै छै। हम्में अपने दू परानी आ तीन गो बच्चा। बरंडो एहने छिकै जे एगो खटियो ने लगा सकै छहो।''

गृहपति बाजल, ''पचास गज जमीन मे कत गो घर होतै? दोसर बात ई जे...''

....

''मैयो के सर्दी-खोंखी-छींक शुरू होइ गेलै हन। डर लागब करै छै। जऽ पोजिटिव भए गेलै, तऽ केना सम्हारबै। केकरा कतऽ राखबै?''

....

''गाँव जाइ के बात हमरो मोन मे अइलै। मुदा, ई घर घेघ सन लागब करै छइ।''

....

''ठीके कहलो। गाँव मे हमरा दिकदारी होतै। दिकदारी तऽ हियों होइ रहलै हन। हियाँ घरे अप्पन छिकै ने। तनी गो के दोकान सऽ सब कथू चलब करै छै। आ, ई लॉकडाउन मे दोकानो बन्ने छिकै। डर होब करै हय। जऽ बेसी दिन एना चलैत रहलै, तऽ पूँजी मे हाथ लगाबऽ पड़तै। अइ दा छोटका के मुड़ना करए चाहै छलियै। ओइ लेल जे कथू रहै, ताही मे हाथ लागल छै। तोरा लेल कोनो जोगार लक्खा नञि दए रहलऽ हन।''

....

''पूछि कऽ देखहो। लछमी कुछ कऽ सकै छह। ओकर सरकारी नोकरी छिकै ने। ओकरा दरमाहा बन्न नञि होलै हन। आब बूझै छिकियै जे सरकारी नोकरी कत्ते जरूरी छिकै। पूछहो ओकरे सऽ। कुछ मदति कए दऽ, तऽ नीक। ओकर मदति करक चाही। एहन समय मे अप्पन, अप्पन के मदति नञि करतै, तऽ की अप्पन होलै? हमर तऽ हाथे खाली छिकऽ।''

लक्ष्मी गृहपतिक छोट भाइ छैक।

मोबाइल बन्न कयलाक बाद पत्नी प्रश्न पुछलकि जे के छल? पति अपन मसियौतक नाम कहलक। कहलक जे गप सूनि कऽ विषय बुझिये गेल होयति। तथापि पत्नी कहिये देलकि, ''दानवीर कर्ण बनऽ के जरूरति नञि छै। हमर माइ कहब करै जे कमाइ धनीक जकाँ आ खर्च करी गरीब जकाँ। एखनिए तऽ रूपा के काज छै।'' कोलिया कोठरी दिस संकेत करैत बाजलि, ''पहिने अइ समस्या के समाधान मे दिमागि लगाबऽ पड़त।''

पति कलेमचे सूनि लेलक। पत्नीक गपक कोनो उतारा नहि देलक। ओ कोलिया कोठरी दिस ताकलक। ओहिमे माय छलीह। सोचलक- माय कोना समस्या होयतीह? तखन...?

नीक कयलक लछमी। भिन-भिनाउजमे पाइए लऽ कऽ कात भऽ गेल। घर नञि लेलक। घर लऽ कऽ फँसि गेल अछि ओ। कहऽ लेल गुरुग्राममे घर छिकै। दोकानदारी छिकै। सुखितगर लोक अछि। मुदा...

पिताक मृत्युक बाद भिन-भिनाउजक बेरमे पिताक सम्पत्तिक मूल्यांकन भेलैक। सम्पत्तिक नाम पर छलैके की? ई घर आ दोकान। दोकान पर शुरुहेसँ पिताक संग अपने रहय। लक्ष्मी पढ़ाइ-लिखाइमे रहय। ओकरा दोकानदारी नीक नहि लगलैक। ओ पढ़ि-लिखि कऽ नोकरी कयलक। पिताक नामसँ बैंकमे जे किछु टाका जमा छलैक, तकर आधा। दोकानक पूंजीक आधा आ घरक मूल्यक आधा। लक्ष्मीक दावा छलैक।

ओम्हर ओहि कोलिया कोठरीमे पड़लि बूढ़ीकें सेहो भिन-भिनाउजक समय मोन पड़ि रहल छलनि। बेटासँ बेसी हिसाब-किताब दुनू पुतोहु कऽ रहल छलनि। सम्पत्तिमे आधा-आधाक दावा तँ छलैक, मुदा मायक निमेरा? एहि नाम पर दुनू गुम्म भऽ जाय। अंतमे बूढ़ी बाजल रहथि,

‘‘ई घर हमरा नाम सऽ छिकै। बैंक के पाइयो पर पहिले हमरे अधिकार छै। हम्मे बाँटि दै छियौ।’’

दुनू बेटा आ पुतौहु बूढ़ी दिस तकलक।

बूढ़ी बजलीह। दोकान एक भाइ के होलौ। बैंक के पाइ दोसर भाइ के। दुनू के हिसाब करीब बराबरे होतै।’’

बिच्चहिंमे छोटकी पुतौहु टोकि देलकै, ‘‘दुनू के दाम बराबर केना होतै। दोकान के कुल दाम बैक मे राखल पैसा सऽ बेसी होतै। ई तऽ नञि होलै।’’

‘‘दोकान मे मेहनतियो बेसी छिकै ने।’’ बूढ़ी बजलीह।

ओ सोचलनि जे एहिसँ दुखद की भऽ सकैछ जे पतिक अरजल धन पत्नी कें खण्ड-खण्ड करऽ पड़ैक। ओ बाजलि, ‘‘बहुत के अन्तर नञि छिकै। तोरा बेसी लागि रहलऽ हन, तऽ लछमीये लेतै दोकान। की रे लछमी?’’

‘‘नञि! हम्मे दोकान लए कऽ की करबै? हम्मे नोकरी करबै कि दोकनदारी चलेबै? हमरा दोकान नञि चाही। दोकान बड़का दा के दहून।’’ लक्ष्मी बाजल रहय।

बूढ़ी जेठकाकें पुछलनि तऽ ओ बाजल, ‘‘लछमी के लेला के बाद जे बचतै, हम्मे ओही सऽ संतुष्ट छिकियै। छोट भाइ छिकै लछमी। पहिने ओकरे सऽ पुछहिन।’’

‘‘आब छैके की जे...।’’ बूढ़ी बजलीह, ‘‘भऽ गेलौ। बैंक के पूरा पैसा लछमी के आ दोकान एकर।’’

छोटकी पुतौहु लक्ष्मी दिस तकैत बाजलि, ‘‘आब ई बोलिए देलखिन तऽ हम्मे की बोलियनि? मुदा, लऽत-उनार होइ गेलै।’’

‘‘आब जे होलऽ से होलऽ।’’ बूढ़ी बजलीह, ‘‘लछमी के पढ़ेबो-लिखेबो कैलियै ने हम्मे।’’

‘‘बड़का दा नञि पढ़लखिन, तइ मे हिनकर कोन दोष?’’ छोटकी पुतौहु बाजलि।

जेठकाकें नीक नहि लगलैक। ओ बहरयबा लेल उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेल आ बाजल, ‘‘मैयो। हम्मे कहि देलियौ। लछमी के देला के बाद जे बचतौ, सेहे हमरा दिहें।’’

लक्ष्मी अपन पत्नी दिस गुम्हरि कऽ ताकलक। मने, पत्नीकें कहैत होअय जे ओकरा एहन बात नहि बाजक चाही। मुदा, ओकर पत्नी पर तकर कोनो प्रभाव नहि पड़लैक।

जेठकी पुतौहु एतेक काल चुप छलि। पतिक ई स्थिति ओकरा सहाज नहि भेलैक। पतिकें कहलकि, ‘‘अहाँ किए जायब करै छिकियै? बड़ छिकियै, सभ दिन बड़े रहबै। बैठियै हियाँ। अहाँ कथी मे कम छिकियै।’’ फेर दियादिनी दिस कन्हुआइत बाजलि, ‘‘नोकरी बला जखन बिजनेस करतै, तऽ बुझेतै जे कोन बाँस के दाहा होब करै छै। बिजनेस करनाइ आसान नञि छिकै।’’

‘‘तऽ नोकरी केनाइ आसान छिकै? वामा हाथ के खेल?’’ छोटकी ठोकले उतारा देलकि।

बूढ़ीकें ठकमूड़ी लागि गेलनि।

जेठका सोचलक। पत्नीकें नहि टोकत तँ दुनू दियादिनी मे बाझि जयतैक। पत्नीकें कहलक, ‘‘हइ। तोएँ आर चुप रहऽ ने। हम्मे दुनू भाइ आ मैयो बात कइये रहल छिकियै ने।’’ भाइकें कहलक, ‘‘आब आगाँ बोल लछमी।’’

लक्ष्मी चुप।

लक्ष्मीक पत्नी बूढ़ीकें कहलखिन, ''मैयो! घर के की होतै? एकर हिसाब-किताब?''

बूढ़ी ई निर्णय अपना हाथमे रखने छलीह। बजलीह, ''घर के मलिकिनी हम्मे छिकियै। घर के बाँटि कऽ हम्मे डगरा के भाँटा नञि बनबै। जे हमरा रखतै, अइ घरमे उहे रहैत। ओतबे नञि, जे अइ घर मे रहतै, ओकरा सऽ हम्मे दू हजार के महीना पॉकेट खर्च सहो लेबै।''

दुनु भाइ आ दुनू दियादिनी एक-दोसराक मुँह ताकऽ लागल।

लक्ष्मी एकटा फ्लैट बुक कयने छल, से ओकर पत्नीएटा कें बुझल छलैक। ओ सोचलक- ई घर पुरना डिजायनक बनल छैक। कोनहुना ओकर पिता बनौने छलाह। ओकर धियापुता एहिमे रहि नहि पौतैक।

लक्ष्मीक पत्नी सोचैत छलि। बूढ़ी बड़ी टा शर्त राखि देलनि। बूढ़ीक निमेरा छोट बात नहि छैक। ओकरा जे टाका भेटतैक, ताहिसँ अपन फ्लैट भैये जयेतैक। बैंकसँ कर्जक खगता नहि पड़तैक। मुदा, तैयो ओकरा बखरामे पासंग बुझाइक। ओ फेर सोचलकि। जँ बूढ़ीक निमेरा कऽ लेति तँ बूढ़ीक बाद एहि घरकें बेचियो देति, तँ नीके पाइ भेटतैक। मुदा, बूढ़ीक निमेरा? बूढ़ी एखनि तंदुरुस्त छथिन। बूढ़ीक संग रहने ओकर 'प्राइवेट लाइफ' वाधित होयतैक। तथापि ओकरा दिमागमे एकटा प्रश्न-चेन्ह ठाढ़ भऽ जाइक- बखरामे पासंगक प्रश्न-चेन्ह। तराजूक लऽत आ उनार।

बूढ़ी चुप्पी तोड़लनि, ''तोएँ आर बोलै नञि छहो?''

जेठका चुप्पी तोड़लक, ''अइ मे कनियानि आर किछ ने बोलतऽ मैयो। एकरा दुनू के बोलनो नञि चाही। दुनू भाइ मे हम्मे पहिले बोलने छिकियऽ जे लछमी जे चाहतै, सेहे होतै। बोल लछमी।''

मुदा, जेठकी पुतौहु बाजिए देलकि। ओ अपन पतिकें कहलकि, ''ई कोनो बात होलै। एगो आइटम मे ऊ बोललखिन। एगो आइटम मे अहाँ बोलियै।'' कने थम्हैत फेर बाजलि, ''आइ के समय मे जुधिष्ठिर बनने काज नञि चलै छै।''

लक्ष्मी बाजल, ''नञि बड़का दा! भौजियो के बात रहना चाही। बोलहो। जे बोलबहो, हम्मे मानि लेबऽ।''

जेठका भाबहु दिस तकैत बाजल, ''छोटकी कनियानि बोलथिन। बोलियै कनियनि।''

''हम्मे की बोलियनि?''

बूढ़ीकें रहल नहि गेलनि। बजलीह, ''ई तोएँ तऽ तोएँ की लगौने छही तोएँ आर। लछमी! तोही बोल नुनू। हमरा रखबिही?'' छोटकी पुतौहुसँ पुछलकि, ''कनियानि! हमरा अपना जरे रखबहो?''

छोटकी बाजलि, ''दीदी सऽ पहिने पुछथिन ने।''

जेठकी बाजलि, ''हम्मे किए बोलबै? पहिले होइ गेलै जे घर के बारे में जनाना आर नञि बोलतै। पुरुषे आर बोलतै, तऽ हम्मे की बोलबै?''

छोटकी चोट्टहिं बाजलि, ''तऽ जुधिष्ठिर बला बात की हम्मे बोललियै?''

बूढ़ीकें बुझयलनि जे ई चारू मिलि कऽ हुनकर करेज दागि रहल छनि।

दुनू दियादिनीक गपसप सूनि लक्ष्मी बाजल, ''मैयो! छोटकी कनियानि जरे तोएँ रहि सकबही? पटतौ?'' फेर अपन पत्नीसँ पुछलक, ''की मैयो के राखि सकबहो? सोचि कऽ बोलहो।

मैयो के कोनो दिक्कत नञि होइ के चाही।''

छोटकी पुतौहु चुप। अनुत्तरित।

अंतमे लक्ष्मी निर्णय सुनौलक, ''हमरा अइ घरमे हिस्सा नञि चाही। मैयो बड़का दा के संगे अइ घर मे रहतै।''

लक्ष्मीक पत्नी एहि निर्णय पर कोनो प्रतिक्रिया व्यक्त नहि कयलकि। मुदा, जेठकीक मोनमे एकटा घुरछी रहिये गेल रहैक। ओ बाजलि, ''ई बात तऽ मैयो के रहैत के होलै। मैयो के परोक्ष मेला पर जऽ दावा ठोकेलै, तखन?''

जेठकी ई गप अपन पतिकें पुछने छलि। मुदा, दिओर उतारा देलकैक, ''भौजी! मैयो के बाद हम्मे कोनो दावा नञि ठोकबै। कचहरी मे लिख देबै जे अइ घर के हिस्सा हमरा भेटि गेल हन। ई घर सोलहो आना बड़का दा के छिकनि।''

एहि तरहें पिताकें खण्ड-खण्ड कयने छल दुनू बेटा आ पुतौहु।

कोलिया कोठरीमे पड़लि बूढ़ीकें सभ गप मोन पड़ल छलनि। एहि कोलिया कोठरीक सेहो एकटा खिस्सा छैक। जखन ई घर बनैत छलैक, तँ पचासे गज जगहमे तीनटा कोठरी आ आर सुविधा सभ बैसबे ने करैक। ऊपर मे बनितैक तकर सट्ठा ताहि समय बूढ़ाकें नहि छलनि। एतबेमे नमरल जाइत छलाह। दुनू बेटा लेल एकहक कोठरी अपना दुनू प्राणी लेल एकटा कोठरी। कम-सँ-कम एतेक तँ चाहबे करी। दुनू बेटाक कोठरी कने नमहर होमक चाही, सेहो सोचथि बूढ़ा। तखन अपना दुनू प्राणीक कोठरी छोट सन बैसनि। दुजनियाँ चौकीक बाद कम्मे जगह कोठरीमे बँचैक। आ अन्ततः बूढ़ा सैह निर्णय लेलनि। बूढ़ीकें कहने रहथि, ''अपना दुनू जीव के इहे कोठरी। दिक्कति नहि ने होतऽ?''

''दिक्कति की? बाल-बच्चा सुख सऽ रहतै, अइ सऽ नमहर कोन सुख?''

एकटा नमहर साँस लैत बूढ़ा बाजल रहथि, ''अपना दुनू जीव दिल्लीमे खोली सऽ जिनगी शुरू कयने रहियै ने। तोएँ आयल रहो, तऽ खोलिए मे राखने रहियऽ हम्मे। तोएँ कहियो खोली नञि बोललहो। कोल्ही बोलैत रहो। मोन छऽ? ओही जग सऽ दुनू जीव चललियै, तऽ ई घर होलै। देखहो। एहू जऽ अपना दुनू के कोल्हिए भेटलऽ।''

बूढ़ी भरोस देने छलि बूढ़ाकें, ''ई मोन छोट किए करब करै छथिन? एहू जऽ सऽ आगाँ जइबै हम्मे आर। ऊपरमे अपना दुनू जीव लेल बड़का हौल बनेबै। मोन छोट नञि करथिन।''

मुदा, बूढ़ीक भरोस फलित नहि भऽ सकलनि।

ताही समयसँ ओहि कोठरीक नाम कोल्हिया कोठरी पड़ि गेल छलैक। आ बादमे कोलिया कोठरी भऽ गेलैक।

बूढ़ीकें लगलनि जे बूढ़ा हुनका सोझाँ ठाढ़ भऽ मुस्किआइत छथिन आ पुछैत छथिन, ''ई दू हजार रूपा सऽ केहन पॉकिट खर्च होतऽ तोहर?''

बूढ़ी सेहो मुस्किआइते उतारा देलखिन, ''दुनू भाइ ने अलग-अलग होइ गेलै। हमरा लेल पोता-पोती सभ एक्के रंग ने। लछमीयो के डेरा पर जेबै, तऽ ओकर नुनू आर के किछ-किछ कीन देबै। एहू जऽ नुनू आर के किछ-किछ कीन देबै। अपनो किछ चटक-मटक खाइ के मोन हेतै तऽ...।''

''चुपचाप रोड पर जा कऽ घुपचुप आ चनाचूर खेबहो ने?'' बूढ़ा मुस्किआइत पुछलनि।

मने, बूढ़ीकें अतीत मोन पाड़ि रहल छलाह।

बूढ़ी, बूढ़ा दिस तकलनि। बूढ़ाक छवि अलोपित भऽ गेल छलनि। बूढ़ी आँखि मुनलनि। आँखिक कोरसँ नोर ढबकि गेल रहनि। ओ आँचरसँ अपन नोर पोछलनि।

बूढ़ीकें पियास लगलनि। कोलिया कोठरीसँ बहरयलीह। पुतौहु देखि लेलकनि। कहलकनि जे ओम्हरे रहथि। ओ गरम पानि दैत छनि।

जेठकी पुतौहु नीक जकाँ निमेरा नहि करैत छनि, तँ कुभेलो नहि करैत छनि। ओकरा आँखिमे लाज-धाख छैक जे सर-समाज की कहत?

ओही राति बूढ़ीकें बोखार चढ़ि गेलनि। प्रात भेने पुतौहु अपन पतिकें कहैत छलि, ''हमरा बात के विश्वास अपने नञि करियै। देखलियै ने। मैयो के बोखार लागि गेलनि।''

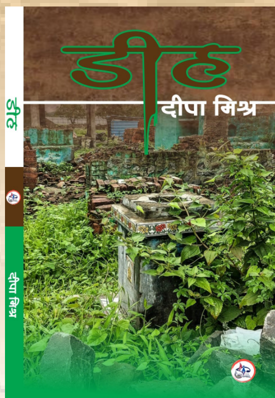
''की होलै तऽ? दवाइ देबै। ठीक भए जेतै मैयो।'' पति बाजल।

''अस्पतालमे जऽ भर्ती कराबऽ पड़ै, तऽ तकरो व्यवस्थामे लागल रहियै। आइ-काल्हि अस्पताल मे जग्गह भेटनाइ देवते भेटनाइ सन छै।'' कने थम्हैत बाजलि, ''अपना दोकान पर ऊ अस्पतालक साहेब अबै छथिन ने। हुनके सऽ बतिआ कऽ राखियै।''

''ठीक। पहिने जे काज छिकै, से ने करियै।''

बोखार लगलाक बाद चारि दिन धरि घरेमे रहलीह बूढ़ी। पाँचम दिन साँस उखरऽ लगलनि, तँ अस्पताल अएलीह। अस्पताल अयलाक बाद चौबीस घंटा धरि ऑक्सीजन लागल रहलनि। तकर बाद किछु नीक सन बुझयलनि। बोखार उतरनि आ चढ़नि। छातीक दर्द तँ सोहाग-भाग भऽ गेल रहनि। बर्दासि नहि कऽ पाबथि। छातीक दर्द उठनि तँ स्वयंकें ई कहि परबोधथि जे गैस चढ़ि गेलनि अछि।





उपन्यास अंश

उपन्यास : डीह

लेखक : दीपा मिश्र

"एक्सक्यूज मी सर! व्हाट वुड यू प्रेफर? टी ऑर कॉफी?"

कानमे एयर होस्टेसक मद्धिम आ सुमधुर ध्वनि सुनि अन्चोके ओ उठि गेलाह। मिलमिलाइत आँखिकेँ मलैत ओ बगलमे विनम्र भावेँ ठाढ़ ओहि युवती दिस तकलथि जे हिनक प्रत्युत्तरक प्रतीक्षामे मूर्तिवत ठाढ़ छल।

'टी'... छोट-छीन सन उत्तर द' पुनः आँखि मूनि क' ओ ओङ्गठि गेलाह।

सेन-फ्रांसिस्कोसँ फ्लाइट टेक आफ क' चुकल छल। आँखि मुनने कार्तिक जेना स्वयंमे कतहु भुतला गेल होथि। विचार कतहु एकठाम केन्द्रित नहि भ' पबैत छलन्हि कि तखने पुनः वएह युवती आबि, अपन मधुर मुस्कानक संग..."एक्सक्यूज मी सर" कहि, चाहक कप हिनका समक्ष राखि देलक। पुनः अपन वएह पुरनके शैलीमे सुकोमल रंगीन अधरसँ मुस्कीक फाहा छिड़ियाबैत आगाँक यात्री दिसि बढ़ि गेल।

कार्तिकक हाथमे चाह आबि गेल छलनि। एक घोंट ल' क' खिड़कीसँ बाहर देखय लागल छलाह। मोन औनाएल जकाँ तँ छलनिहेँ। शून्य सन पसरल ओहि अनन्त अकाशकेँ देखैत-देखैत अपन जीवनक विषयमे सोचय लागल छलाह। कहाँ एहिसँ विलग छलनि हुनको जिन्दगी! एहि विशाल, शून्य, अनन्त आ स्तब्ध भेल आकाश आ हुनकर अपन जीवनमे कोनो बेसी फर्क कहाँ छल! ओहो ओहिना शून्य, समाने तँ छलनि। ...सोचैत रहलाह।

एसगर यात्रामे आत्ममंथन करबाक लेल बेस समय भेटि जाइत अछि लोककेँ। ओना त' मशीन सन बनल जा रहल एहि जीवनमे अपना आप संग सेहो कोनो गप्प

करबाक समय आब मनुक्ख लग कहाँ रहि गेल अछि! भोरसँ साँझ आ फेर साँझसँ भोर होइत ई समय चक्र। कैलेण्डरक दिन, दिनांक, तिथि आ मास अपन नियत समय पर चलैत बदलैत रहैत अछि आ लगैत अछि जेना कतेक जल्दी ई बरख बीति गेल। कनपट्टी परहक कारी केश सहसा जखन-कखनो ऐनामे श्वेत भेल नजरि पड़ि जाइत अछि तँ हम सभ ओकरा छूबिकेँ चौंकैत कहैत छी... "कोना एतेक बरख बीति गेल!"

उज्जर मेघक फाहा सभ वायुयानक चारू कात उधियाइत नजरि आबि रहल छल। नील अम्बरमे लगैत छल जेना ओ सभ कतहु छिड़ियाइत जा रहल। जेना एहि बेमत्त भेल फाहा पर ककरो नियंत्रण नहि अछि। अहिना त' छिड़िया गेल छलनि हुनको जीवन। सभ किछु छिन्न-भिन्न भ' गेल छलनि। तहस-नहस होइत, मूक भेल ओ मात्र देखैत रहलाह। कहाँ किछुओ समेटि क' राखि सकलाह ओ!

ने माएकेँ... ने गामकेँ... ने कोनो संबंधकेँ... आने कोनो अप्पन लोककेँ! एतय धरि मार्थाकेँ सेहो नै जे हुनका संग-संग जिन्दगी बितएबाक सपना देखओने छलनि। आर्याकेँ छोड़ि आब केओ नहि रहि गेल छनि हुनका जीवनमे जकरा ओ अप्पन कहि पबितथि। बाहरसँ कहबाक लेल तँ आइ ओ बड़ पैघ चिकित्सक छथि मुदा भीतर, ...भीतर आइ वएह शून्य रहि गेलनि जाहि संग ओ नेनपनसँ रहैत आबि रहल छलाह। वएह शून्य शनैः-शनैः अपन आकार पैघ करैत रहल। कहुखनकेँ कार्तिककेँ लगैत छल जेना ओ ओहि शून्यक भीतर कैद, ओझराएल छटपटा रहल छथि।

मात्र बारह बरखक छलाह कार्तिक जहिया हुनकर पिता कोनो असाध्य बीमारीक कारणेँ एहि दुनियाँसँ उठि विदा भ' गेल छलाह। स्मृति पटलमे एखनो पिताक मूर्ति ओहिना बसल छलनि। गौर वर्ण, खूब चौड़ा छाती, उँचगर कान्ह, बलिष्ठ भुजा, चौड़गर ललाट जकर मध्य नमहर मुदा गोल गढ़गर सिनुगर ठोप, गरदनिमे रूद्राक्षक माला। ओह!...जहिना देखबामे सुदर्शन तहिना स्वभावसँ नीक छलाह। गामक विद्यालयमे शिक्षक छलाह ओ। आइयो कार्तिकक बैगमे हुनकर लिखल कविताक एकटा डायरी पड़ल छनि जे पिछला बेर गामसँ ओ ल' अनने छलाह। माए लग सेहो चारि पाँच टा हुनकर कॉपी सभ राखल छलन्हि। नहि जानि, ओहि सभकेँ आब केओ सम्हारिकेँ रखने होएत आकि नहि!

ओहिमे लिखल एकटा कविता कार्तिकक हृदय केर अत्यंत निकट छल। ओ एकटा पन्ना पर लिखल छल जकरा कार्तिक सदिखन अपना संग रखैत छलाह। ओहि कविताक शीर्षक छल— "शून्य होइत संवेदना"।

छिन्न-भिन्न होइत संबंधक डोर
सभहक संवेदना आँखिक नोर

सुखाएल जा रहल जेना भीतर
जाकर भ' टूटि-टूटि खसि रहल।

मेघक उरियाइत फाहा सन
उधिया रहल सगरो मनुखक टोल
बौक भ' रहल हृदयक भाव
दौड़ैत-भागैत कतौ लगौने होर।

ई हमर, ई अहाँक फरिछाहटमे
छूटैत गेल सभटा विश्वासक गाम
एक-एक क्षण जीवनक बीति रहल
कोना बँचाबी नहि अछि ई भान।

शून्य मोन अछि आर शून्य समाज
आब ने ककरो रहल कोनो लाज
अन्हार-अन्हार चिचिया रहल सभ
मिझाएल दीप आ निपत्ता अनुराग।

तैओ कनेक आँखि मूनि बैसि क'
बीतल समयक दिस जँ ताकब
बचल अछि बहुत किछु एखनो
सभ मिलि जुलि जँ संग बाँचब।

रौद छाँह सन भ' गेल जिनगी
कहुखन सुख अछि कहुखन दुःख
भरब सिनेहसँ बखारी जहिखन
तखन मिटाएत सभटा भूख।

जीवनक क्षण-क्षण केर अछि मोल
खर्चब एकरा निकती पर नापि-तोल
मौलाएत नहि मोनक कोनो फूल
निकलत सभ हृदयक गरल शूल।

अलग-अलग धारमे किएक बही
मिलि-जुलि किएक ने संग रही
क्षण भंगुर जीवनक ई रहस्य
जे बुझलक ओ निस दिन निखरल।

ताधरि मनुख मात्र मनुख रहत
जाधरि सत्य आ प्रेम बँचत
मिटि जाएत देह आ सभ धन संचित
बस शब्द रहत बस रहत गीत।
बस शब्द रहत आ रहत गीत।...

कार्तिककेँ बड मानैत छलखिन हुनकर पिता। कखनो अपना नजरिसँ दूर नहि रखैत छलखिन। लोक सभ कहितो रहैत छलनि जे "एना कोना चलत! बेटा भ' क' जन्म भेल छैक, आइ ने काल्हि अलग तँ होयबे करत। तखन कोना रहब! आ एखनेसँ ओकरा एसगर नहि छोड़बैक तँ डरपोक बनि क' रहि जाएत।

"ताहि वास्ते कि एखनेसँ एकरा असगरुआ बना दियै! सभ भ' जेतै। एखन बच्चा अछि, असगर कोना छोड़ि दियै। एखन ताहि योग्य नहि अछि। एनामे तँ आरो बिगड़ि जाएत, ...हमरा एकरा बड पैघ चिकित्सक बनेबाक स्वप्न अछि। अहूँ सभ चाहैत छी ने! कहू अछि गाममे एकहुटा चिकित्सक। देखब एक दिन हमर बेटा एहि गाममे अपन बड़का टा अस्पताल बनाओत। तहिआ हमरा अहाँ सभ कहब जे हम एकरा दुलार क' के सुधारलियै आकि बिगाड़लियै!" ...कहि सभक बातकेँ टारि दैत छलाह। मुदा फेर, ...फेरो त' वएह लोक सभ कहैत छल जे "नजरि लागि गेलनि हुनकर परिवारकेँ।"... आ से ठीके, देखिते-देखिते सभ किछु समाप्त भ' गेल। ओ समय हुनकर जीवनक सभसँ कष्टकर समय छल। ओ विपत्ति जेना सम्पूर्ण परिवारकेँ तोड़ि-मड़ोड़िकेँ राखि देलक।

बारह बरखक ओहि बच्चाकेँ गरामे उतरी पहिरने देखि सभकेँ कना जाइत छलनि। किओ स्वयंकेँ सम्हारि नहि पबैत छल। सभकेँ बुझाइत छलनि जेना करेजा उझकिकेँ बाहर निकलि जाएत। छाती पर कोनो भार रखने सभ कहुनाकेँ हुनक काजमे लागल छल।

बड़ हृदय विदारक घड़ी छल मुदा कार्तिक!... कार्तिक तँ जेना ओहि दिन अपन बाल्यावस्थाकेँ छोड़ि देलनि। ओ नहि कनलथि। लागल जेना हुनकर हृदय पाथरक

बनि गेल हो, आँखिक पानि सुखा गेल हो, ओ बच्चा नहि अपितु प्रौढ़ हो! ओ जेना एके राइतमे अपन कैशोर्य आ युवावस्थाकेँ बिसरिकेँ प्रौढ़ भ' गेलाह। माएक आँखिक नोर पोछब ओ अपन दायित्व बूझ' लगलाह।

बारह बरख केर वयसक बाद ओ कहियो नै अपन संगतुरिया सभक संग खेलाइत नजरि अएलाह। एकमात्र किताब टा हुनकर दुनिया बनि गेल छलनि। दिन राति ओहिमे ओ रमल रहैत छलाह। सभ किछु बिसरि ओ बस पढ़ाइमे जेना डुबि गेल छलाह। माए हुनका ल'केँ अपन नैहर चलि गेलखिन। मातृकमे मामा-मामीक स्नेह आ संरक्षण बड पैघ बल छल हुनका लेल। पितृ विहीन बच्चा लेल जीवन दुरूह होइत चलि जाइत अछि। जाहि समय पुत्रकेँ सर्वाधिक आवश्यकता पिताक होइत छैक, ईश्वर तहिए त' छीनि लेलखिन हुनकासँ ओ छाहड़ि। जहिना बाल्यावस्थामे माएक महत्व होइत छैक तहिना कैशोर्यावस्थामे पिताक मार्गदर्शन आओर सिनेहक खगता, खास क' पुत्र लेल बेसी होइत छैक।

आइ ओ नहि जानि कतेक संघर्ष क' क' एतय धरि पहुँचलाह। दू बूँद नोर गाल पर कखन टघड़ि गेलनि, नहि बुझलथि कार्तिक। टिशू पेपरसँ मुँह पोछि लेलनि।

चाह कखैन ने समाप्त भ' चुकल छलनि। कनेक काल आँखि मूनिकेँ रखबाक लेल सोचलथि किन्तु सोचक आवेग जे एक बेर बहब प्रारंभ भ' चुकल छल ओ नहि थम्हलनि। अपन जीवनक अवलोकन करबाक समय कहाँ भेटैत छै लोककेँ! आइ कार्तिक जेना अपन जीवनक व्यूहसँ अपनो नहि निकल' चाहैत छलाह। लगैत छलनि जेना ओ विमान नहि कोनो टाइम मशीनमे बैसल होथि। समय जेना पाछाँ भागैत जा रहल छल।

डॉक्टरीक आगू पढ़ाई लेल जहिया अमेरिका अएलाह तहिया कहाँ बूझल छलनि जे एना भ' क' हरदम लेल अप्पन लोक, अप्पन गाम आ अप्पन देश छुटि जाएत। ई अमेरिका हुनका लेल एकदम नब आ आश्चर्यक जगह छल। एम. बी.बी. एस. कएलाक उपरान्त स्कालरशिप पर ओ विदेश आएल छलाह।

स्थान संग लोकसभ सेहो नब आ अपरिचित छलनि।

'मार्था' हुनके संग पढ़ैत छलीह। एक दिन ओ अपनहि आबि हुनकासँ परिचय पुछलकनि। ओ पढ़बामे सेहो नीक छलीह आ अमेरिकाकेँ बुझबामे कार्तिकक गाइड सेहो बनि गेलीह।

मार्थाक मित्रता संग ओ एहि नूतन परिवेशसँ परिचित होइत गेलाह।
संग-संग पढ़ैत, एक दोसराक प्रति कहिया आकर्षणक डोरिमे ओझड़ाकेँ निकट होइत चलि गेलाह से नहि बुझि सकलाह कार्तिक। आर ओकर कारणो त' छल, ...आखिर मार्थाक व्यक्तित्वमे कमी की छल! गोर-नारि, करची सनक पातर-छितर, घनगर केश,

चौड़ा कपार, उँचगर गरदनि, भरल कपोल, छूरी सनक पातर अधर, ताहि पर कमनीय मुस्कान। पातर मुदा ठाढ़ नाक, अथाह आँखि। सभ किछु मिला क' आकर्षक छल ओ। लगैत छल जेना साक्षात स्वर्गसँ उतरिकैं कार्तिकक समक्ष उपस्थित भेल हो। ताहि पर ओहि वयसक सम्मोहन, कहाँ छोड़ैत अछि ककरो। एहिसँ फेर कार्तिक कोना बचल रहितथि! ओना कार्तिक एहि आकर्षणकैं कहिओ प्रकट नहि केने छलाह, ... पहिल बेर मार्था स्वयं अपन प्रेम प्रकट कएने छलीह। एकर बाद त' कार्तिक स्वयं पर नियंत्रण नहि राखि सकलाह। बिसरि गेल छलाह अपन अतीतकैं ओहि घड़ीकैं, गामकैं संग आरो बहुत किछु। मार्थाक प्रस्ताव जेना हुनक विवेककैं शून्यमे परिवर्तित क' देलकनि। तन संगहि मोनकैं झकझोड़ि क' राखि देलकनि ओ प्रेम-प्रस्ताव। मानसपटलसँ सभ किछु हटि गेल छलनि, रहि गेलनि तँ मात्र ओकर शब्द। आगाँ बढ़ि अपन हाथमे कसि क' पकड़ि लेलनि मार्थाक हाथ आ हुनकर पातर-पातर आङ्गुरक पोरकैं अपन अधरसँ स्पर्श करबैत अपन स्वीकृतिमे चुमि लेलनि। आर फेरो स्वत: मार्थाक चुम्बन एहि संबंध पर मोहर लगा देलक।

तकर बाद त' समय जेना भागैत चलि गेल। कोनो चीज कतौ कहाँ रुकल! सभ किछु समयक संग अपन गति पकड़ैत गेल। पढ़ाई केर संगहि मार्था आर कार्तिक, अपन प्रेमक रंगमे दिन-ब-दिन आरो डूबैत गेलथि। जेना-जेना समय केर गाड़ी आगू बढ़ैत गेल तहिना-तहिना दुनूक निकटता मोनसँ शरीर धरि पहुँच चुकल छल।

फेर, एक दिन ओ समय आबि गेल। ओहि दिन फाइनल ईयर केर परीक्षाक समाप्ति छल। समय अपन गति पकड़ि चलि रहल छल। एक दिस एकटा परीक्षाक समाप्ति ओ दोसर दिस दोसर परीक्षाक शुरुआत। मार्था गर्भसँ छलीह। आब आर प्रतीक्षा नहि क' सकलथि ओ दुनू। शीघ्रहिँ दुनू विवाह सूत्रमे बन्हि गेलाह। कार्तिक आर मार्थाक नव-जीवनक आरंभ भ' चुकल छल।

आब जीवनक एकटा नब अध्याय शुरू भेल। ओहि समय कार्तिक मात्र पच्चीस बरखक छलाह। आठ मासक भीतरे ओ पिता सेहो बनि गेलाह।

सुकोमल सन टुक टुक तकैत तोलियामे लपटाएल ओहि गुड़ियाकैं देखि कार्तिक जेना सभ दु:ख बिसरि गेलाह। 'आर्या'... इएह नाम रखलनि अपन बेटीकैं।

एम्हर गाममे आर हुनकर मातृकमे, कार्तिक केर बिआहक गप्प पसरि चुकल छल। ओमहर मामा-मामी जखैन माँकैं कहलखिन त' ओ जोर जोरसँ कानए लगलीह। ओ हुनकर विदेशी स्त्री संग बिआहक गप्प सुनि अन्न-पानि त्यागि देलनि। ओ त' जेना बौक भ' गेलीह। जाहि आस पर हँसैत-बँजैत छलीह, बुझाइन जेना ओ आस आ भरोस फेरो एक बेर आँचरसँ खुजिकैं छिरिया गेलनि आ माटिमे मिलि गेलनि।

ओ चेतनाहीन भ' गेलीह। दुनू तरहत्थी खोलि, धरती पर पसारि बैसि रहलीह

जेना आब फेरसँ ओ खाली हाथ भ' गेलीह! पति विहीन स्त्री लेल संतान एक मात्र जीबाक लेल बल रहैत छैक। आर जखैन ओहि संतानकेँ अपनासँ विलग होइत ओ अनुभव करैये तखनि!

चारू दिस स्तब्धता पसरि गेल छल। बड़ असहनीय घड़ी छल मुदा एकर कोनो उपाय कहाँ छल।

कठिनसँ कठिन आकि सहजसँ सहज घड़ी एक ठाम रुकैत कहाँ छैक। इएह तँ ईश्वरीय वरदान छै मनुक्खक वास्ते। यदि से नहि होइतैक तँ अनर्थ भ' जैतैक।

मुदा भगवान एकटा रक्ष रखने छथिन। लोक बुझैत छैक जे समय सभ दिन अहिना रहतैक मुदा से होइत नहि छैक। समय अपन बाट पर सदैव चलायमान रहैत छैक।

कार्तिककेँ परिवारमे ककरोसँ गप्प नहि होइत छलनि सिवाए अपन 'मीत' मोहनकेँ। ओना मोहनोसँ सेहो सभ दिन नहि कहियो-काल गप्प होइत छलनि।

'मीत'... ई आखर कुसुमक देल छलनि। नेनपनेमे कुसुम दुनू मित्रकेँ किछु मंत्रोच्चारणक संग दोस्ती लगौने छल। ई सभ ओ खूब सिखने छल। कुसुम ठीके पाको पंडित छल। ओकर कहब छलैक जे "जीवन पर्यन्त इएह कहि क' सोर पारय पड़त एक दोसराकेँ। जाहि दिन असली नाम लेब, दोस्ती टूटि जाएत।"

ओ आ मोहन ओहि दिनक बाद कहिओ एक दोसराकेँ नामसँ नहि बजओलथि।

कुसुमक स्मरण जेना कार्तिककेँ मुखमण्डल पर स्मित हास्यक रेखा आनि देलकनि। ...नहि जानि, कतय अछि कुसुम! मोहनसँ एक-दू बेर पुछने छलाह किन्तु मोहन कोनो प्रत्युत्तर नहि देने छलखिन।

समय...! समय अपन परिधि पर निरन्तर बेरोक-टोक आगू बढ़ैत गेल। मार्था आर कार्तिकक गृहस्थ जीवन रूपी गाड़ीक पहिया जिनगीक चिक्कन-चुनमुन, नीपल-बहारल बाटपर शान्त आ मधुर ताल-मेल बनाय सेहो समयक संग घुमि रहल छल। नहि जानि कहिया ककर नजरि लागि गेल एहि गाड़ीकेँ जे एकर बाम भागक पहिया उखड़ि धूरीसँ अलग भ' गेल। दहिन भागक पहिया फेर एक बेर एसगर भ' क' रहि गेल। जे अध्याय आरंभ भेल छल तकर शेष भ' गेल। मार्था आ कार्तिक एक-दोसरसँ अलग। फेर ओहिना कार्तिकक अपन असगरुआ जीवन रहि गेलनि। मुदा समय... समय कहाँ रुकैत अछि एक ठाम!ओ तँ अपन गतिकेँ कखनो विराम नहि दैत अछि। कैलेण्डरक दिन, दिनांक, तिथि, पक्ष, मास आ बरख सभटा बढ़ैत गेल, बदलैत गेल।

आइ पूरा सात बरख भ' गेल छलनि कार्तिककेँ मार्थाक संग सम्बन्ध-विच्छेदक। संयोगसँ आइए परिणय दिवस सेहो छलनि। भोरे-भोर विदा होएबासँ पहिने मार्थाक एकटा मैसेज सेहो फोनमे आएल छलनि।

मार्था लेल तलाक एकटा सामान्य घटना छल। ओकर जीवनमे आब दोसर पुरुष सेहो आबि चुकल छल किन्तु कार्तिक!... ओ पूरा समय अपन हास्पिटल आ आर्याकेँ दैत छलाह। हुनकर जीवनक आब एकमात्र उद्‌देश्य छलनि... 'आर्या' जे हुनक जीवनक निशान छलनि आ ओहि अध्यायक सारांश।

समय बीतैत गेल। समयक संग कार्तिक पूर्णरूपेण समझौता क' लेने छलाह। आर्या हुनकर एकमात्र लक्ष्य बनि गेल छलीह। आर्या सेहो अपन पिताक भावनाकेँ सहजतासँ बुझैत छलीह। आगू बढ़ि ओहो पिताक प्रोफशनकेँ अपन लक्ष्य बना डॉक्टर बनि गेलीह। आर्याक एहि उपलब्धिसँ कार्तिकक मनोदशा किछु सहज भेलनि।

विदा होएबा काल आर्या सेहो एयरपोर्ट आएल छलीह। आइ एकटा कर्तव्यसँ कार्तिक मुक्त भेलाह। धिया-पुता अपन मार्ग ध' लैत छैक त' मोन निश्चिंत भ' जाइत छैक। आर्यामे मातृगुणक जेना कोनो लेश नहि आएल छलनि। देखि क' बुझाइत छल जेना मिथिलाक माटि-पानिमे पलल-पोषल बेटी होय। जहिना देखबामे सुन्नरि तहिना तीव्र बुद्धिक सेहो छल। ओकर पढ़ाई लेल कहियो सोचय नहि पड़लनि। सदैव ओकरा स्वत: स्कालरशिप भेटैत रहल छल। आइ ओ एकटा गाइनेकोलॉजिस्ट बनिकेँ हुनके अस्पतालमे ज्वाइन करै लेल छल।

सोचैत-सोचैत फेर हुनक आँखि मुना गेलनि। मन:स्थिति उद्वेलित होमय लगलनि। दिमागमे एकटा अजीब ज्वालामुखी जेना उत्पन्न भ' गेलनि— ..."ओत' ई की छैक!...एतेक इजोत!... जेना आगिक धधड़ा पसरल जा रहल होए। ...किओ मिझबैत किएक नहि छैक! किओ जेना जोड़-जोड़सँ चिचिया रहल होए!... के चिकरैत छैक!... की भ' रहल छैक ई!...ओह!...ओह!... नै-नै!... छोड़ू हमरा!"

अकस्मात बुझाएल जेना किओ झकझोड़ि रहल होइन।..."सर!...सर!"... डेराएल एयरहोस्टेस बगलमे ठाढ़ छलनि। घामे-पसीने नहाएल कार्तिक अकचका क' आँखि खोललथि आ सामने राखल पानिक बोतलसँ दू-चारि घोंट पानि पीलथि।

"आर यू ओके सर?"

"ओह! यस! आइ एम फाइन! थैंक्यू!" ...कहैत कार्तिक प्रकृतस्थ भेलाह। छोटका तौलियासँ पसीना पोछि लेलनि।

पिछला तकरीबन छ: महीनासँ बेसी काल कार्तिककेँ एहि तरहक स्वप्न अबैत छलनि। सपनामे गामक डीह, ओ पुरना घर आ इकट्‌ठे बहुत रास लोक। फेर जेना किछु जरैत छल। चारूकात आगि लागल देखाइत रहनि। बुझाइत छलनि जेना सभ चिचिया रहल होय। हाहाकार मचल रहैत छल। मुँह सभक झाँपल रहैत छल। धीरे-धीरे ओ सभ हिनका घेरि लैत छलनि आ कार्तिकक मुँह नोचबाक प्रयास करैत छलनि।

ओम्हर गामसँ तीन चारि बेर काका फोन केने छलखिन जे अपन डीहक बारेमे

किछु सोचू। पाछाँसँ केओ कब्जा करब शुरू क' देने छल। बाँटक बाद पुरना हवेली काकाक हिस्सा पड़ल छलनि आ बगलक बड़का डीह कार्तिकक पिताक। पिता केर नहि रहलासँ ओ कार्तिकक छल।

एहि बेर तँ कार्तिक ठानि लेने छलाह जे ओ डीहकेँ बेचिकेँ घुरताह। ओहुना दस बरख भ' गेल छलनि गाम जेना। एहि दस बरखमे बहुत किछु बदलि गेल होएत। गामक लेल मोनक कोनो कोनमे एखनो आकर्षण बचल छल किंतु बेसी दिन ओ नहि रहि पाओल छलाह। हुनकर माँ हुनका ल' क' नैहरमे बसि गेल छलखिन। पिताक सपना छलनि जे ओ डाक्टर बनथि आर माएक लेल हुनका डाक्टर बनाएब संकल्प छलनि।

कार्तिक मधुबनीमे मामा-मामी आ माएक संग पढ़ाई पूरा कएलथि। फेर जखनमेडिकलमे भेलनि त' दिल्ली चलि गेलाह पढ़बाक लेल। एम. बी. बी.एस. कएलाक बाद स्कालरशिप पर विदेश चलि गेलाह। मार्थाक संग बिआहक बात हुनकर माँकेँ नहि बर्दाश्त भेलनि। डेढ़ बरखक भीतरे मामा फोन केलखिन जे ओ नहि रहलीह। माए... केहन परिस्थिति होइत छैक? की छैक एहन जे सम्बन्धक मध्य ढाठ बनि क' ठाढ़ भ' जाइत छैक। पिता...जे अपनासँ एकक्षण नहि रखैत छलाह अपन पुत्रकेँ, अलग भ' गेलाह। माए... जिनक आखिरी सहारा, आखरी आशा, आखरी जिनगी होइत अछि संतान। ओ माए, जे अपन स्वामी द्वारा सजाओल सपनाकेँ पूरा करबाक हेतु नहि जानि कतेक बेर अपन भावनाकेँ जरौने हेतीह। हर क्षण, हर पल स्वयं की सभ सपना देखैने होएतीह। कामनाक पूर्ति भेला पर कतेक आनन्दक अनुभूति भेल होएतनि। मुदा पुत्र... ओ पुत्र एहन कोन सपना देखि लैत छथि जे मात-पितासँ भिन्न होइछ। जाहि सपना पर माता-पिता केर अधिकारक सीमा-रेखा शेष भ' जाइ अछि। की प्रतिबद्धता छैक एहन जे मुइलो-मुँह देखबाक लेल पुत्रकेँ उद्वेलित नहि करैत छैक?... कार्तिक सेहो माएक अन्त्येष्टि कर्ममे नहि आबि सकलाह। ओहि समय मार्था हास्पिटलमे एडमिट छलीह। संयोगसँ ओकरे दू दिनक बाद आर्याक जन्म भेलनि। बेटीमे हरदम माएक छाँह देखाइत छलनि कार्तिककेँ। आइ बुझना जा रहल कार्तिककेँ जे माएक अंत्येष्टिमे नहि जाकेँ हुनकासँ कतेक पैघ अपराध भेल छल। पिता बनलाक बाद समयक संगहि संतानक मोह बुझलथि।

"गाममे काका बेसी दु:खित छथि।"...मोहन फोन पर हुनका कहने छलखिन। प्रमोद भाई काकाजीक एकमात्र पुत्र, हुनक असमय एक्सिडेंटमे मृत्यु भ' गेल छलनि। तकर मात्र एक बरखक उपरान्त काकी सेहो नहि रहलखिन। पुत्र शोकसँ ओ जाधरि उबरितथि, दोसर विपदा काकाक भागमे लिखा गेल रहनि।

काका मोहनकेँ नेन्नहिसँ बड मानैत छलखिन। आम गाछी घुमाएब, हाट पर संग ल' जाएब, मेला घुमाएब, एतय धरि कि साईकिल चलाएब सेहो काका हुनका

सिखेलखिन। काकाकेँ गाछीमे दंड पेलैत देखि कार्तिक आ मोहन सेहो नकल उतारैत छलाह। स्वस्थ, लंबा चौड़ा, पहलमान सन शरीर बला छलाह काका। किन्तु समयक संग टूटैत गेलाह। फोन पर काकासँ बेसी गप्प नहि होइन किंतु मोहनसँ हुनकर सभटा गप्प-सप्प पता चलैत रहैत छलनि। ओना पिछला बेर, जहिया काकासँ गप्प भेल छल हुनकर आवाज बहुत कमजोर बुझाएल छलनि। मोहन मार्फत ओ हरदम कार्तिककेँ समाद पठबैत छलाह जे अपन डीहक विषयमे किछु विचार करथि। ओहि लेल गाम आएब आवश्यक।

अपन स्वप्न द' कार्तिक मात्र मोहनकेँ कहने छलाह। मोहन कहलखिन जे "भ' सकैत अछि, गाम अहाँकेँ सोर पारैत होए। अहाँकेँ एकबेर आब गाम आएब बहुत जरूरी अछि।"

कार्तिक हृदय रोग विशेषज्ञक रूपमे अपनाकेँ स्थापित क' चुकल छलाह। गाम जेबाक लेल बहुत किछु व्यवस्था कर' पड़लनि।

विमान अपन गतिसँ उड़ि रहल छल। कार्तिककेँ मोन जेना थिर नहि भ' रहल छलन्हि। रहि-रहिक' बेटी मोन पड़ि जाइत छलन्हि। पश्चाताप हुए लागल जे ओकरो संग किएक नहि ल' लेलियैक! संग ल' लेबाक चाहैत छल। गाम देखबाक तँ ओकरो बड्ड सेहन्ता छलैक बच्चेसँ। किंतु परिस्थितिए सभ एहन उत्पन्न होइत गेलैक जे एक्को बेर ओकरा ल' क' नहि आबि सकलियै भारत।

आर्या त' कहनहुँ छलनि जे "हमहूँ चलैत छी"। मुदा गामक स्थिति केहन हेतैक एखनुका समयमे से हिनको कहाँ बूझल छलनि। एनामे ओकरा संग आनब नहि ठीक बुझेलनि। दोसर ओकरा नब ज्वाइनिंग सेहो छल तैं ओकर आएब संभवो नहि छल।

दिल्ली उतरि क' ओ होटल चलि गेलाह। ओतयसँ पाँच घंटा बाद दरभंगा लेल विमान छल।

कार्तिककेँ दिल्लीसँ दरभंगाक हवाई जहाज पर बैसि यात्रा करबामे एकटा अलगे अनुभूति भेलनि। सुखद अनुभूति, लगलनि जेना बसातमे अपनापनक सुगंध घुलल हो। पहिने समय आ असुविधाक दुआरे सेहो कएक बेर गाम जेबा लेल सोच' पड़ैत छलनि। मुदा एहि बेर जेना स्वत: सभ किछु ओरियाओन भ' गेलनि। आ से सुगंध एखनहिसँ भेटब आरंभ भ' गेलनि।

"की! कतयसँ आबि रहल छी? कोन गाम भेल?"

बगलमे बैसल सहयात्री जखन मैथिलीमे पुछलखिन तँ मोन जेना गदगद् भ' उठलनि। अप्पन भाषाक माधुर्य अलगे होइत छैक। बहुत साल बाद ओ आखर सुनब सेहो अद्भुत अनुभूतिक क्षण होइत छैक।

"क्या आप मैथिली नहीं जानते? कहाँ से आ रहे हैं?"

उत्तर नहि पाबि ओ भलमानुष पुनः पूछि देलखिन। अपना दिसक लोक प्रश्नक उत्तर तत्काल चाहैत छथि। उत्तर नहि भेटला पर खौंझाइत छथि, सामनेवलाकेँ टेढ़ बुझय लगैत छथि आ फेर ओकरा सबक सिखौनाइ अपन धर्म। तैं ओ भद्रपुरुष एहि बेर थोड़ेक नजरि चढ़ा क' पुछने छलाह।

कार्तिक अकचका क' कहलखिन— "सेन फ्रांसिस्को!"

"अच्छा अच्छा अमेरिका से आ रहे हो।

तभी तो... मैथिली नहीं आता है।"

"नहि-नहि! हमरा मैथिली खूब नीक जकाँ अबैत अछि। हम तँ पहिल बेर हवाई जहाजमे मैथिली सुनि भावुक भ' गेलहुँ। तैं किछु जवाब नहि द' पओलहुँ।"

"अच्छा-अच्छा... से बात!... कहू, कतय गाम भेल?"

"जी हमर गाम विदेश्वर लग अछि। मंदिरसँ आगाँ जा क' दहिना कात रस्ता फुटैत छैक।"

"अच्छा अच्छा तखन तँ हमर गामे लगक छी। हमर गाम भेल बड़का गाम। ...उजान सुनने छियैक ने?"

"हँ-हँ! किएक नहि, उजान, धर्मपुर सभ ठाम गेल छी। गाममे हम कम रहलहुँ। ...हमर मात्रिक छल तरौनी। ...हम माएक संग मधुबनीमे रहैत रही मामा लग। ...ओतहि सँ पढ़ाई-लिखाइ भेल अछि हमर।"

"अमेरिकामे की करैत छी अहाँ?"

"डॉक्टर छी! हृदय रोग विशेषज्ञ।"

"वाह! वाह! बड बेस!"... कहैत ओ सहयात्री पनबट्टीमेसँ सुपारी निकालि खा लेलथि आ पुनः अपन वाणीक गतिकेँ आगू बढ़बैक क्रममे कहय लगलाह— "पान त' आब छुटिए गेल खाएब मुदा सुपारी नहि छूटल। ...अहाँ लेब की?"

"नहि-नहि, ... धन्यवाद!... हमरा एहि सभक अमल नहि अछि। ... अपनेक शुभ नाम की भेलैक?"

"जाह!...हमहूँ नहि पुछलहुँ नाम! हमर नाम छी विभूति झा!

अहाँक नाम?"

"जी हमर नाम छियैक कार्तिक!"

"ओकर आगाँ?"

"जी हमर नाम बस एतबे छैक।"

"ब्राह्मण छी? "

"हँ।"

"त' झा, मिश्र, चौधरी... की थिकहुँ?"

"हम जाति-पाँति नहि मानैत छी आ ने हमरा उपनामक प्रति कोनो आकर्षण

अछि।"

विभूति झाकेँ ई गप्प कनेक अखरि गेलनि जेना! झोड़ीसँ एकटा पोथी निकालि क' पढ़' लगलाह।

कार्तिकक नजरि पोथीक पन्ना पर गेलनि। ओहि मैथिली पोथीक नाम पढ़लथि। पोथी जीर्णावस्थामे छल किन्तु नाम पढ़ल भ' गेलनि। मोन पड़लनि, ...मामा केर स्कूलक लाइब्रेरीमे पहिल बेर ई पोथी देखने छलाह। एकर किछु गीत मामा विह्वल भ' क' गबैत छलाह।

'रमा रौ सुन्न भवनमे जेना एकटा दीप जड़ै छै ना!!'

एखनि धरि हुनका ई पाँति मोन छलनि।

सोचैत अपनहुँ आश्चर्य होमय लगलनि। मात्र सोलह बरखक छलाह जहिया गामसँ विदा भेल छलाह आ आइ, सैंतालिस बरखक छथि। समयक एतेक अंतरालक बादो जेना स्मृतिक बाड़ी ओहिना हरियर छलनि। जेना ओ सभटा एक एक टा क' ओहि स्मृतिक बाड़ी केर गर्भसँ बहरा क' सामने आबि रहल होनि।

मामा-मामी सेहो आब बूढ़ भ' गेल हेताह। ओहो दुनू व्यक्ति हिनके अपन संतान जकाँ मानैत छलखिन। कार्तिक केर मात्रिकक नाम छलनि 'कुमार'।
मामा-मामीक संग माए सेहो कुमारे कहैत छलथिन।

विमानमे सभ केओ गप्प-सप्पमे व्यस्त छल।
बुझा रहल छलनि जे गाम जा रहल छी। दरभंगा हवाई अड्डापर मोहन गामसँ एकटा गाड़ी पठा देने छलथिन। कार्तिक सभटा समान राखि आगाँमे बैसि गेलाह।

"सर आप पीछे बैठ सकते हैं।"

"नहि-नहि, हम एतहि ठीक छी।"...कहैत कार्तिक सीट बेल्ट लगा लेलनि आ मधुबनीक लेल विदा भेलाह। हुनका पहिने मामा-मामीसँ भेट करबाक इच्छा जे छलनि। रोड देखि मोन प्रसन्न भ' गेल छलनि। ताबतमे चालक पुछलकनि—

"की सर! देखिऔ सड़क। अमेरिका सन छैक ने?"

"हँ-हँ खूब नीक। बल्कि ओतहुसँ नीक।"...ओ हँसैत कहलाह।

"अहाँक की नाम भेल?"

"हमर नाम थिक विनय। हमरा मोहन सर अहाँक बारेमे कहलथि। अहाँ सर केर संगी छियनि ने? सर हमरा सभकेँ मैट्रिक धरि पढ़ौने छथि। हम आइए भोरमे मधुबनी सँ आएल रही। मन थाकि गेल छल

मुदा सर कहला तँ मना नहि क' सकलियनि। कोना करितियनि। तत्क्षण विदा भ' गेलहुँ। अहाँ एखन रहबैक ने गाममे?"

" हँ-हँ! एखन किछु दिन रहबैक।"

"गाड़ीक जरूरत तँ पड़बे करत?"

"हँ सेहो पड़त।"

ओ जेबीसँ निकालि क' अपन कार्ड देलकनि आ कहलकनि— "ई हमर नंबर छियैक सर। जखन-कखनो जरूरत पड़ैक तँ हमरा फोन क' बजा लेल करब।"

"हँ-हँ, अवश्य। अहाँ तँ हमर मोनक गप्प बुझि गेलहुँ।"

"ओना अमेरिकामे की लोक ठीके बेरोजगार भ' गेल छलैक सर? गाममे तँ बड्ड गप्प उड़ल छलैक ?"

"हँ, कनेक मंदी त' छलैक मुदा आब ठीक छैक।"

कार्तिककेँ मैथिलीमे गप्प करब बड़ नीक लागि रहल छलनि। मोन त' थाकल छलनि मुदा तैओ विनय केर प्रश्नक यथोचित उत्तर देबाक ओ प्रयत्न क' रहल छलाह। गाड़ीमे बैसल खिड़कीक शीशाकेँ नीचा सरका देलनि। ... "आह! ई हवा!" गामक माटिक सुगंधसँ भरल ओ हवा जेना कार्तिककेँ कोनो आन लोक पहुँचा रहल छलनि। सभ किछु पाबिओकेँ मनुक्ख अपन मातृभूमिसँ दूर जेना रिक्त रहैत अछि। जकरा गामक मोह छैक ओकरा लेल एहि वायुक स्पर्श जेना नवजीवन प्रदान करैत होए। ओ आँखि मुनि लेलाह।

साँझक समय भ' गेल छल। दलान पर कुर्सी राखल छल। मामा ओहि पर बैसि कोनो पोथीक पन्ना उल्टा रहल छलाह। हुनका टैक्सीसँ उतरैत देखि चश्मा ठीक करय लगलाह। ओ उतरि क' पाएर छूबिकेँ प्रणाम कएलनि।

"मामा हम कुमार।"

"कुमार हौ!" ...कहि मामा छातीसँ लगा लेलनि। दहो बहो नोर बहय लगलनि आँखिसँ। ओ अपनो भावुक भ' उठलाह। जेना बुझेलनि जे कतेक बरखक बाद अप्पन लोक लग अएलाह। मामा बाँहिमे कसिया लेलखिन। कार्तिककेँ सेहो होइत छलनि जे अहिना पितृ तुल्य मामाक बांहिमे सोन्हिआयल रही।

ताधरि विनय समान उतारि देलकनि। कार्तिक भाड़ा देबय लगलखिन त' ओ कहलकनि— "एहिबेरका हमरा मोहन सर द' देने छथिन। हमर कार्ड छैहे अहाँ लग सर। जहिया गाम जेबाक हेतैक, एक दिन पहिने कहि देब हमरा।"

"हँ-हँ, हम कहि देब।"...कहैत ओ विनयकेँ विदा कएलनि।

मामा हाथ पकड़ने अंगना ल' गेलखिन। मामी सोहारी पका रहल छलीह।

"देखू त' के आयल अछि?"

"के छथि यौ?"

"देखहुन ने हिनकर काज!..सोझे अंगना लेने अएलखिन। देखही त' जा क', के छियैक से?" ...कहैत खबासिनीकेँ एमहर पठा रहल छलीह। ताधरि कुमार झुकि

क' गोर लगलखिन। मामी सेहो देखि चीन्हि गेलीह। कुमार कहि क' फफकि उठलीह। जकरा संतान जकाँ पोसने-पालने रहैत छैक तकर दर्द आ मोह कहियो जाइत छैक की?

"बाबू हमर! एतेक साल बाद हम सभ मोन पड़लियौक तोरा। ... देख ...मामा-मामी कतेक बूढ़ भ' गेलखुन। ... कतहु केओ पुछनिहार नहि। ...बाबू हमर, सोना नहि! एतय आबि जो तोँ। कहुना क' रहि लेब सभ। एतहु रहि क' लोक सभ सुखी रहैत छैक।"

मामीकेँ तँ जेना लगैत छलनि किछु हाथ आबि गेल अछि। एहि बच्चाक वास्ते मामी की-की ने कएने छलीह। लोक अपनो बच्चाक लेल जतेक नहि करैत अछि ताहिसँ बढ़ि क' मामी कएने छलीह। भागिन अछि, से तँ जनबे नहि कएलनि कहियो। आँखि तरसि गेल छलनि कुमारकेँ देखबाक लेल। आइ पुनः समक्ष पाबि विह्वल भ' उठलीह। ताधरि मामाक स्वर कानमे पड़लनि— "भ' गेल ने! बौआ थाकल झमारल छथि। आ हे! ...सुनू, अहाँ हिनकर सुतबाक व्यवस्था हमर कोठलीमे क' दियनु। हम ताधरि पानि गरम क' दैत छियनि। स्नान क' लेताह त' थकान उतड़ि जयतनि।"... आदेशात्मक भाषण द' मामा पुनः दलान दिस विदा भेलाह।

"यै मुसनी माए, जल्दीसँ चाह चढ़ाउ त'। पहिने चाह पी लेब ने कुमार तखन स्नान करब?"

"हँ मामी, ...चाह पीलाक बादे हम नहाएब!"

नहा-धो क' जखन सभ गोटे बैसलाह तखन कुमार सभटा गप्प कहलखिन। अपन विवाह-विच्छेदक विषयमे सेहो कहलखिन। ओहिसँ मामा आ मामीकेँ अत्यंत दुःख भेलनि। मामाक मुँहसँ अनायासे निकलि गेलनि— "ओहुना कतहु होइत छैक!विवाह कोनो धिया-पुताक खेल थोड़े छियैक। हमरा सभक पूर्वज ऋषि-मुनि लोकनि छलाह। ओ लोकनि जे नियम बनौलाह से बड़ सोचि-विचारि क' बनौने छथि। जाहि बिआहमे जीवनक रहस्य नहि से कतहु बिआह भेल।"

कार्तिककेँ बुझना गेलनि जे आब बातक दिशा बदलि जाएत। ओ एखन गामक सुखकेँ, मामा-मामीक सिनेहकेँ आत्मसात करबाक प्रयास करैत छलाह। बातकेँ बदलैत, फोनमे आर्याक फोटो हुनका दुनूकेँ देखबय लगलाह। मामी निहुँछि क' ढाकी भरि-भरि आशीर्वाद देबय लगलीह ओकरा।

आर्या द' सुनि मामा-मामी बड़ प्रसन्न भ' गेल रहथि। नातिनक डाक्टर बनब आरो छाती चौड़ा क' देलकनि।

मामी भानस देख' चलि गेलीह।

आलू परोरक झोर आ गहुँमक सोहारी बनल छल। मामी मामाकेँ कहैत छलखिन माछ आनबाक लेल।

"आइ नहि माछ खाएब मामी। हम अपने काल्हि आनब त' अहाँ बना देब।

हमरा त' अहाँ हाथक तरकारी आ गरमा गरम सोहारी आइ खएबाक मोन होइत अछि।"

"अहाँ एकोरत्ती नहि बदललहुँ कुमार, ओहिना छी। चलू, सांठ' जाइत छी थाड़ी। हाथ पैर धो क' दुनू माम-भागिन बैसू।"

मोन ततेक थाकल छलनि जे जल्दिए सुति रहलाह।

भोरे उठलाह त' मामा फूल तोड़ैत छलाह अगिला बाड़ीमे। कार्तिक सेहो हाथ मुँह धो क' बाड़ी जा क' फूल सभकेँ देख' लगलाह।

"मामा ई करबीर थिक ने?"

हँ! निकहा ललका करबीर थिक। अहाँक मामी अपन नैहरसँ एकर ठाढ़ि आनिकेँ रोपलनि। सेवा-सत्कार सेहो एकरा नैहरेक लोक जकाँ भेलैक। देखहक ने, ...केहन चतड़ि गेल ई दुइए सालमे। हमर रोपल गाछ सभ लाजे कठुआइत रहैत अछि।"

मामाकेँ एना बाजब सुनि हँसी लागि गेलनि।

कतेक दिन बाद एतेक खुजि क' हँसल छलाह आइ!

आब लोक सभ मशीनक संग मशीन बनल जा रहल अछि। अपने हृदय रोग विशेषज्ञ छथि आ अपनो जेना हँसभ बिसरि गेल होथि। अनका प्रसन्न रहबाक लेल कहैत छथिन मुदा अप्पन हँसी जेना कतहु हेरा गेल छलनि।

जलखइ क' के कार्तिक कनेक काल लेल मामाकेँ कहलखिन जे छत बला ओहि कोठलीकेँ खोलि देबाक लेल जाहिमे अपन माए केर संग ओ रहैत छलाह।

मामा संग जाकेँ खोलि देलखिन। अपन ओहि कोठलीक देखि कार्तिककेँ अपन माँकेँ मोन पारिकेँ कना गेलनि। मामा हुनकर अलमारीक चाभी कार्तिककेँ पकड़ा नीचा चलि गेलाह। लोकक महत्व ओकर गेलाक उपरान्त बेसी बुझाइत छैक। अलमारीमे ओहिना सभकिछु सेंतल राखल छल।

लॉकरमे दू तीन टा कॉपी ओरिया के राखल छल। कार्तिक ओकरा हाथमे ल' आँखिसँ लगा लेलनि।

पिताक सुन्दर लेखनी सामने छल हुनकर।

अपन टेबुल कुर्सी पर बैसिकेँ ओ ओकर पृष्ठ उनटाबय लगलाह। कापी बीच माँकेँ हुनकर पिता लेल लिखल पत्र सभ सेहो छल जकरा कार्तिक बिनु पढने ओहिना ओहिमे राखि देलनि। अप्पन टेबुल लग रैक पर सैंइत के राखल मेडिकल परीक्षा के तैयारी बला किताब सभकेँ देखि कार्तिक जेना ओ समयकेँ अनुभव कर' लगलाह।

स्मृतिक ओहि कोठलीमे किछु काल रहि कार्तिक सभटा बंद क' चाभी ल'केँ नीचा आबि गेलाह।

"कुमार एहिबीच हमरा घुरमा बड अबैये बौआ! एकबेर हुए त' हमरा आर अपन मामाक जाँच सेहो क' देब।"

"हँ मामी। साँझमे क' दैत छी।"

मामीक आग्रह पर ओ मामा आ मामीक जाँच कएलनि। रक्तचाप आ दवाई सभक

मात्रा कनेक बदलि देलखिन। तेसर दिन भोरे ओ अपन पर्ससँ कार्ड निकालि विनयकेँ फोन घुमौलनि।

"हैलो! हँ विनय! अहाँ आबि सकब की?"

"गाम एबै ने सर? कहिया एबै?"

"एखन एक घंटामे।"

"जी पहुँचैत छी हम। ओहुना आइ हम पंडौल आएल रही।"

"बेस, आउ!"...कहि फोन रखलाह।

मामीकेँ एकोरत्ती इच्छा नहि छलनि हुनका जाए देबाक। ..."दस-पंद्रह दिन एत' रहितहुँ ने बौआ। के बैसल अछि ओतय जे एतेक अगुताएल अछि मोन?"

"अबै छी मामी, जल्दीए ओहि डीहकेँ बेचि क' अबैत छी। तखन एक सप्ताह अहाँ लग रहि क' जाएब वापस। एखन गाम जाएब जरूरी अछि।"

कनेक कालमे विनय गाड़ी ल' क' जुमि गेलाह।

ओ मामा-मामीकेँ गोर लागि विदा भेलाह। जेना-जेना गाम निकट आबि रहल छलनि, ओ दुःस्वप्न जेना आर मोनकेँ मथय लागल छल। ...आखिर की अछि ओहि स्वप्नमे!... मोहनकेँ अपन अएबाक सूचना द' देने छलखिन। ओ पैटघाट लग कहने छलाह जे हम ठाढ़ रहब। ओतहिसँ संग जएताह।

कार्तिक सोच' लगलाह... "कतेक दिन भ' गेल मीतसँ भेंट भेना? मोन जेना नेनपनक स्मृतिसँ फेरो आच्छादित होमय लागल।"

जाधरि हुनको पिता रहथिन ताधरि ओहो गामहिमे रहैत छलाह। मोहन हुनकर बालपनक परम मित्र छलाह। माँकेँ ओना ओ बेसी नीक नहि लगैत छलथिन। तकर की कारण से पहिने कार्तिक नहि बूझैत छलाह। ...हँ! हुनकर पिताक स्वभाव नहि नीक छलनि। अपन स्त्रीकेँ ओ बड्ड मारैत-पीटैत छलाह। बड्ड गञ्जनि करैत छलाह अपन स्त्रीकेँ। एहि गप्पक चर्चा तँ जँह-तँह सभकेओ करैत रहैत छल। जखन-तखन मोहनक मुँह सेहो फूलल फूलल रहैत छलनि।

हुनकासँ पुछितो छलखिन त' नहि किछु कहैत छलाह। बादमे कार्तिक बूझय लागल छलाह जे माएकेँ बचएबाक प्रयासमे मोहन सेहो पिताक कोपभाजन भ' जाइत छथि।

"राँड़ नहितन! ई कुल्टा हमरे माथपर बन्हाएल छल।"

हरदम मोहनक घरसँ एहि तरहक आवाज अबैत छल। ...फेर हुनकर माएक मिनती भरल स्वर-"हे! हाथ जोड़ैत छी, एना जुनि कहू! आब तँ बेटो पैघ भ' गेल अछि। किछुओ त' सोचल करू। लोक सभ हँसैत अछि। हम सहि लेब। बेटाक मन कुण्ठित भ' जाएत। हे! हम पैर धरैत छी, निहौरा करैत छी। शान्त भ' जाउ!"

"तों हमरा सिखबैत छैं गे रंडी। आ, आब हम तोरा बुझबैत छियौक जे लाज की होइत छैक।"

ई सभ तँ मोहनक घरकेँ रोज दिनक बात छल आ जखन ई सभ होइत छल, मोहन पुबरिया पोखरिक महारपर बैसि क' खापर सँ पानिमे तरंग बनबैत रहैत छलाह।

दूरसँ देखाएल जे पैट घाट आबि रहल अछि।

“सर! पैट घाट लगिचा गेलैक। एक बेर पुछि लियौन ने सरकेँ जे कतय ठाढ़ छथि?”

“हँ-हँ, फोन करैत छियनि।”...कहि कार्तिक जेबीसँ फोन निकालि मोहनकेँ मिलओलाह।...“हँ मीत! हम पहुँचि रहल छी। कतय ठाढ़ छी अहाँ?”

“हम दूमुहाँसँ कनेक आगाँ गाछक तर ठाढ़ छी। आउ-आउ जल्दी मीत। बाप रे!..जुग भ' गेल देखना अहाँ के।”

कनेक कालमे मोहन नजरि पड़ि गेलाह। आबि क' गाड़ीमे बैसि रहलाह। दुनू मित्र किछु काल धरि चुपचाप एक दोसराक हाथ पकड़ने रहलाह। ...एतेक दिन पर भेंट भेल छल। मोनक कतेक परत आब उघड़यवला छल। ...कहाँ भेटैत छैक एतेक टाक संसारमे एहन मित्र जकरा लग अहाँ अपन अंतरात्मा धरिकेँ बाहर निकालि क' राखि दी। मोहन कार्तिकक तेहने मित्र छलाह।

“गामक की हाल?”..कनेक कालक उपरान्त .कार्तिक पुछलथि।

“की हाल रहत, जहिना छल तहिना अछि। किछु नहि बदलल। हँ, हमर माँ आब एहि दुनियाँक अत्याचारसँ मुक्ति पाबि गेलथि।”

“मतलब?”

“हम कहने नहि रही अहाँकेँ। बाबूजी पाँच बरख पूर्वहिं चलि गेलाह। ओना तँ इहो हमरा सभक लेल एकटा मुक्तिएक मार्ग छल।”

एतेक कहि किछु क्षणक वास्ते मोहन शब्दहीन भ' गेल छलाह। पुन: फेरो कहय लगलाह-

“माँकेँ हुनक मृत्युक बाद जेना नव-जीवन भेटि गेल रहनि। ओहि त्रासदी भरल जीवनसँ मुक्ति भेटि गेल छलनि। मुँह पर हँसी सेहो घुरि आएल छलनि। स्वामीक रहैत हमर माँ जीविते अहिल्या सन पाषाण बनि गेल छल। बिना दोखक हरदम कटु शब्द सुनैत रहैत छल।”

एतेक कहि जेना फेरसँ मोहन अधर पर ताला पड़ि गेलनि। किन्साइत अतीतक स्मरण बड़ कष्टदायी छलनि जाहि कारणे वाणी अनियंत्रित होमय लगैत छलनि आ स्तब्ध भ' जाइत छलाह। कार्तिक सेहो अपन मित्रता आ धैर्यक परिचय दैत मोहनक कान्हपर अपन हाथ राखि बैसल सुनैत आ मोहनक मन:स्थितिकेँ बुझबाक प्रयत्न करैत छलाह। पुन: मोहन कहय लगलाह—

“हमरा सन भरिसके केओ अभागल छल होएत जे नित-प्रति अपन पिता द्वारा कएल अपन माएक अपमानकेँ देखैत होए। ...पिता कहाँ छलाह ओ!... ओ त' कोनो पिशाचक आत्मा छल जे हुनकामे आबि गेल छलनि।”...कहैत-कहैत मोहनक मुख मुद्रा विकृत भ' गेलनि।

कार्तिक हुनकर हाथ पकड़ि लेलनि आ मोहन गाड़ीक शीशाकेँ खोलि बाहर देख' लगलाह। बहुत रास खराप आ कटु स्मृति मोनकेँ ततेक पीड़ा पहुँचा दैत छैक जे

ओकरा समयक संग बिसरि जेबाक प्रयत्न सेहो निष्फल भेल रहैत छैक। बिसरा देब बेसी उचित मुदा की सभ किछु बिसरल जा सकैत अछि?

एमहर कार्तिक हुनकर ध्यान बँटेबाक लेल कनेक कालक बाद पुछलखिन "हमर काकाक की हाल छनि? पछिला बेर फोन आएल छल तँ आवाज बड्ड कमजोर बुझाएल छल हुनकर। कहैत छलाह जे नहि नीकेँ छथि।"

"चलू अपने देखब। ओ त' आब बहराइत कम छथि। अहाँक भौजी हुनकर सेवा करैत छथिन। ओहो अभागलकेँ देखि क' देह सिहड़ि जाइत अछि जे केहन भाग्य ईश्वर देलखिन। हमरा माए लग कहुखन क' अबैत रहैत छथि।"

"हमरा त' बूझल छल प्रमोद भाईकेँ गेलाक बाद ओ नैहर चलि गेल छलीह?... फेरो गाममे!"

"यौ मीत, बियाहल बेटीक नैहर बसभ आसान छैक की?... पिता नहि रहलखिन। माए सेहो वृद्धा। भाई-भाउजमे अकारण मतभेद होइत रहैत छलनि। तकर कारण इएह माए बेटी रहैत छलीह। एमहर काका दुखीत पड़लाह त' समाद पठेलखिन। तँ भौजी दोसरे दिन आबि गेलीह। तहियासँ नैहर नहि गेलीह। हँ, मास दू मास पर हुनक बहिनोइ किछु खर्चा पानी लेल द' जाइत छथिन। काकाकेँ सेहो हाल ठीक नहि। घरक स्थिति बड़ खराप छनि। आर्थिक रूपेँ तँ टुटिए गेल छलाह, आब शरीर सेहो असमर्थ भ' गेलनि।"

कार्तिककेँ जेना मोनहिं-मोन क्षोभ होमय लागल छलनि। काका एतेक वृद्ध छलाह। हुनका कहिओ ई ध्यान किएक नहि अएलनि जे काका के किछु पठा दैतथि!... अकस्मात किछु मोन पड़लनि— "मीत, कुसुम कत' अछि एखन?"
मोहन एकर जवाब नहि देलनि। कार्तिक सेहो दोबारा नहि पुछलथि। गाड़ी आब विदेसर थान लग पहुँचि क' गाम दिस मुड़ि चुकल छल।



नव आमद...

कोलरीज एवं अभिनवगुप्त तुलनात्मक साहित्यालोचनक क्षेत्रमे एक पथ-प्रदर्शक रचना थिक। दू मुख्य लेखकक-इंगलैंडक एस. टी. कोलरीज एवं भारतक अभिनवगुप्तक समालोचनात्मक लेखनक युक्तियुक्त एवं वृहद् मूल्यांकन कएल गेल अछि। ई दर्शाओल गेल अछि जे दार्शनिक दृष्टिकोंण मे एक-दोसराक सन्निकट होइतो, दूनूमे सँ अभिनवगुप्त कोलरीजसँ श्रेष्ठ समालोचक छथि।

पुस्तक चारि भागमे विभक्त अछि जाहिमे पृथक् रूपें कोलरीजक दृष्टिकोंण, भारतीय काव्यशास्त्रक दार्शनिक पृष्ठभूमि, अभिनवगुप्तक विचारसरणि तथा कोलरीज एवं अभिनवगुप्तक तुलनात्मक अध्ययन समाहित अछि। भूमिकामे प्रबन्धक उद्‌देश्यकैं स्प्ष्ट कएल गेल अछि तथा सभ परिच्छेद पूर्वक अध्यायक संक्षिप्त विवरण दैत अछि।

संस्कृतक महान विद्वान पण्डित डॉ. सात्करि मुखर्जी पुस्तकक भूमिकामे लिखैत छथि: ''ई प्रथमहिं बेर थिक जे एहि कृतिक लेखक पाश्चात्य एवं भारतीय काव्यशास्त्रीय अवधारणादिक गंभीर एवं अन्तरंग तुलनात्मक कएल अछि। एहि ग्रंथक शीर्षकसँ ज्ञात होइत अछि जे मात्र दू समालोचकक-कोलरीज एवं अभिनवगुप्तक- तुलनात्मक अध्ययन भेल अछि, किंतु यथार्थमे ई बहुत व्यापक कृति थिक तथा लेखक महोदय पश्चिमी जगतक तथा भारतवर्षक प्राय: सभ महान काव्यशास्त्रकार लेखक सभकैं समाहित कएलेल अछि।''

कोलरीज एवं अभिनवगुप्तक मध्य मूलभूत सादृश्य जकरा डॉ. मिश्र अनुसंधानसँ समक्ष आनल अछि से, काव्यशास्त्र एवं काव्यदर्शनक समीक्षात्मक सोचमे एक युगांतकारी आह्वान थिक। पाश्चात्य जगत कोलरीजकैं पुनरन्वेषित पाओत तथा अभिनवगुप्तकैं एक समानधर्मा।

ई प्रमाणित करैत अछि जे भारतवर्षमे एखनहुँ मौलिक वैदुष्यक लोक छथि...
''(ई) पूर्व एवं पाश्चात्यक काव्यशास्त्रक विलक्षण संश्लेषण थिक।''



अनुप्रास प्रकाशन
मधुबनी, मिथिला (बिहार) 847 211
+9194305 83847



मैथिली अनुवाद
₹ 1000/-
9 789391 371234
www.anuprasprakashan.com
anuprasprakashan@gmail.com
Also available on
amazon flipkart



अनुप्रास प्रकाशन

कोलरीज एवं अभिनवगुप्त

डा. श्रीकृष्ण मिश्र • अनुवादक : भैरवेश्वर झा



अनुप्रास प्रकाशन

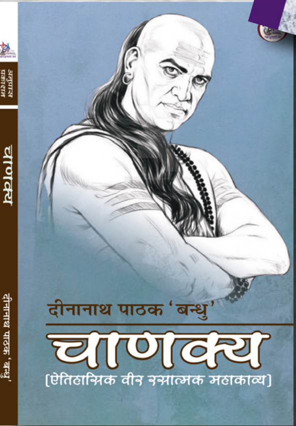
डा. श्रीकृष्ण मिश्र

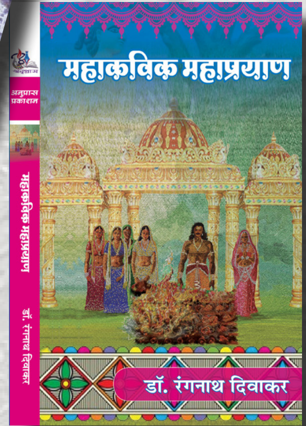
कोलरीज एवं अभिनवगुप्त

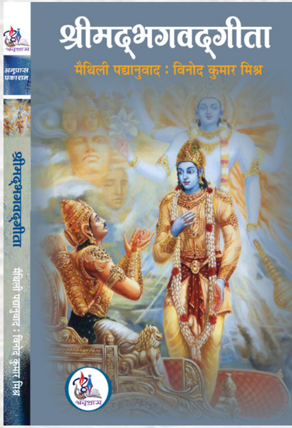
अनुवादक
भैरवेश्वर झा

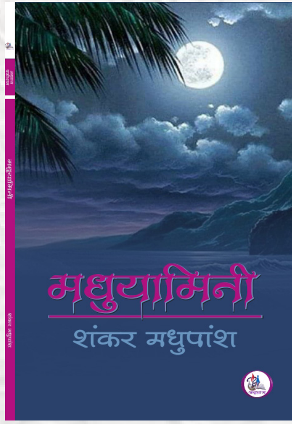


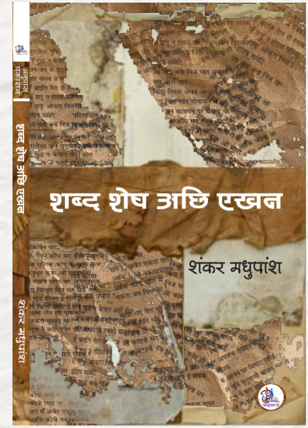


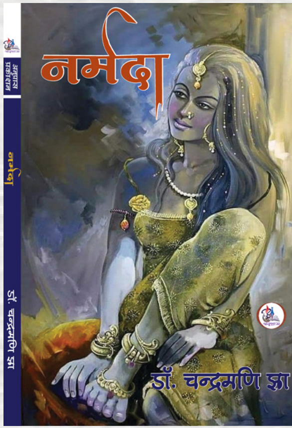


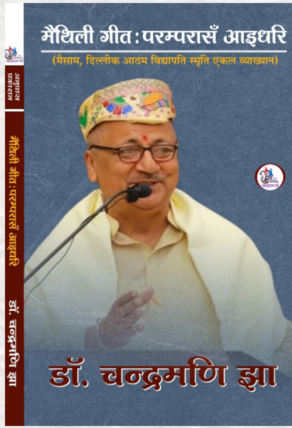


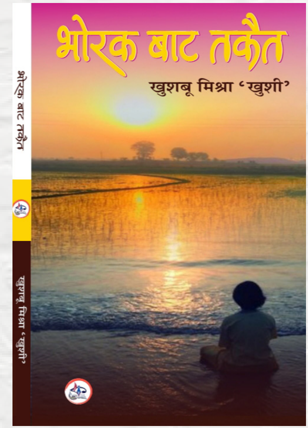














अनुप्रास प्रकाशन समूह

किताब जाहिसँ नेहाल होइछ जीवन

इन्द्र परिसर, लहेरियागंज, मधुबनी (मिथिला) बिहार- 847211
www.anuprasprakashan.com, anuprasprakashan@gmail.com

अनुप्रासक उद्देश्य भाषा-साहित्यक श्रेष्ठताक वरण करब अछि। किछु महत्त्वपूर्ण साहित्यकेँ जनसुलभ करबामे अपने लोकनिक सहयोग आ परामर्शक अपेक्षा अछि।

Our online partners : 





